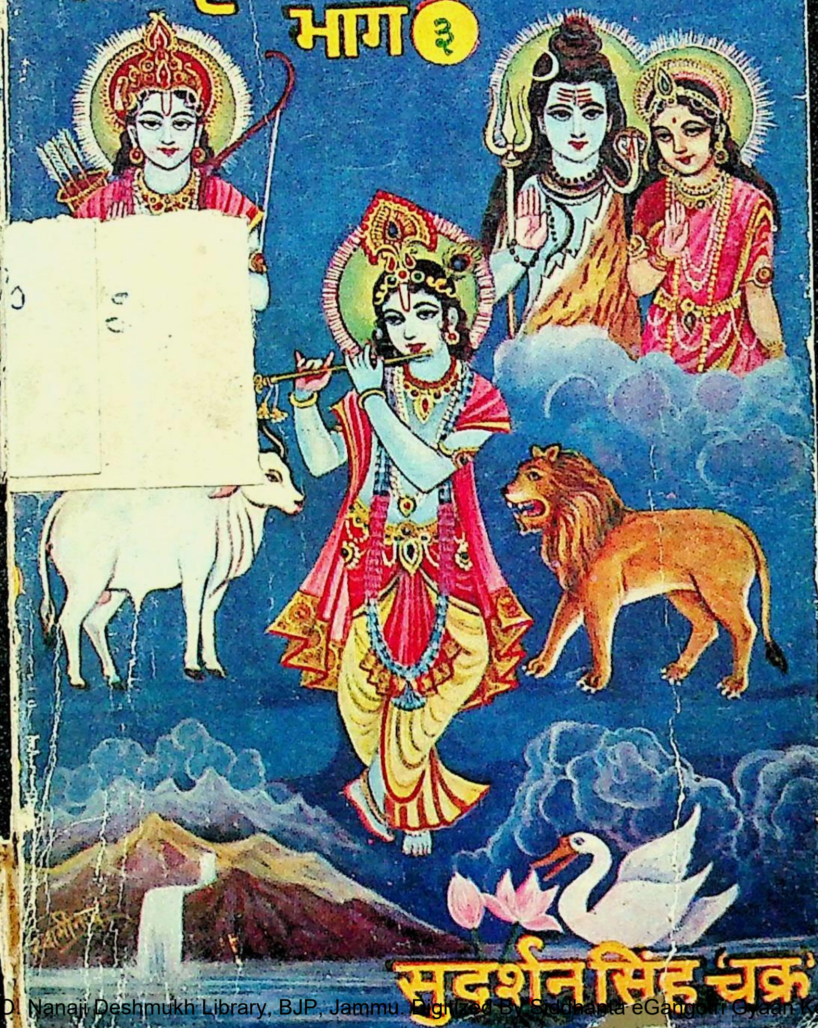
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सांस्कृतिक कहानियाँ

भाग ३



सुदर्शनसिंह चक्र

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

Nanaji De[illegible]kh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सांस्कृतिक कहानियाँ

(भाग ३)

सुदर्शन सिंह 'चक्र'

[इस पुस्तकको या इसके किसी अंशको प्रकाशित करने, उद्धत करने अथवा किसी भी भाषामें अनूदित करनेका अधिकार सबको है ।]



प्राप्ति-स्थान—
प्रकाशन विभाग
श्रीकृष्ण - जन्मस्थान - सेवासंघ
मथुरा-२८१००१ (उ० प्र०)

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रकाशक	श्रीकृष्ण-जन्मस्थान-सेवासंघ
प्रकाशन-तिथि	श्रावण, वि० सं० २०३४ अगस्त, १९७७
प्रथम संस्करण	५००० प्रतियाँ
मुद्रक	राधा प्रेस, गान्धीनगर, दिल्ली-११००३१

SANSKRITIK KAHANIYAN — Part III

—Sudarshan Singh 'Chakra'

मूल्य—दो रुपया मात्र

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अनुक्रमणिका



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्तव्यकी जड़ मत काटो

पेड़ काटि तैं पालउ सींचा।
मीन जिअन निति बारि उलीचा।।

'मैं तो सत्य, अहिंसा और सदाचारको मानता हूँ।' नवयुवकोंमें जो स्वाभाविक आवेश होता है, वह तब रोके नहीं रुकता, जब वे किसी विषयपर एक पक्ष लेकर विवाद करने लगते हैं। यद्यपि बातचीत तीन व्यक्तियोंमें ही हो रही थी और वे चलती हुई ट्रेनके ड्योढ़े दर्जेमें आमने-सामने लगभग घुटने-से-घुटने सटाये-से बैठे थे; किंतु वक्ता इस प्रकार बोल रहे थे, जैसे किसी बड़ी सभामें व्याख्यान दे रहे हों, या कम-से-कम इस पूरे डिब्बेके यात्रियोंको उपदेश करनेका भार उनपर आ पड़ा हो।

'धर्म और ईश्वर, परलोक और परमार्थ—ये तो आदियुगकी भयजनित कल्पनाएँ हैं; जिन्हें पीछे अपना पेट भरनेके लिए स्वार्थी लोगोंने बनाये रक्खा तथा पुष्ट और बलवान बनाया।' दूसरेने पहलेका समर्थन दुगुने उत्साहसे करते हुए कहा—'इनसे न व्यक्तिका कोई लाभ है और न समाजका। ये तो भोले लोगोंको ठगनेके साधन हैं।'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'सभी धूर्त एवं स्वार्थी हैं, ऐसा तो मैं नहीं कहता।' पहलेने अपने साथीकी बातका प्रतिवाद किया। वह उदारतापूर्वक विचार करना चाहता है। अनुदार होना और दूसरोंपर आक्षेप करना उसे पसंद नहीं। उसने अपने स्वरको भी कुछ गम्भीर और धीमा कर लिया—'बहुत दिनोंतक जो लोग धर्म-कर्म, पूजा-पाठमें लगे रहते हैं, उनमें भी ऐसे-ऐसे लोग मिलते हैं कि उनकी चर्चा न करना ही अच्छा। इसलिए मैं तो सत्य-सदाचारको ही सच्चा कर्त्तव्य मानता हूँ।'

'आज जिनके लिए कहा जाता है कि उन्होंने पीछे हाथ करके लम्बी रकमें बनायी हैं, जिन्हें आज झूठ बोलनेमें तनिक भी हिचक नहीं, क्या उनमें अनेक ऐसे नहीं हैं जो सच्चे त्यागी थे? क्या ऐसे लोग उनमें कम हैं, जो निःस्वार्थभावसे देशपर सर्वस्व उत्सर्ग करने आये थे? सत्य, सदाचार, त्याग जिनमें आदर्श रूपमें कभी था, आजके अवाञ्छनीय लोगोंमें क्या ऐसे पर्याप्त लोग नहीं हैं?' इस बार तीसरे साथीने धीरेसे सिर उठाकर अपनी बात सहज स्वरमें कह दी। इस व्यक्तिको देखनेसे ही लगता है कि इसे बोलना कम और सुनना अधिक पसंद है।

'आप कहना क्या चाहते हैं?' दोनों व्यक्तियोंने अपने तीसरे साथीकी ओर देखा। वे कुछ सम्हल गये थे और उन्हें यह स्मरण आ गया था कि अपने इस तीसरे साथीका वे सम्मान करते हैं। केवल तब—जब वे

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किसी विवादके आवेशमें होते हैं, उनका यह सम्मानभाव विस्मृत हो जाया करता है।

'क्या इन लोगोंको पश्चात्ताप होता है ? क्या बिना किसी बाहरी दबावके ये फिर वैसे ही सत्यवादी, त्यागी, निःस्वार्थ-सेवापरायण बन सकते हैं ?' तीसरेने दोनों मित्रोंके प्रश्नको जैसे सुना ही नहीं। उसने अपनी बात प्रश्नोंमें ही पूरी की।

'ये रँगे सियार—इन्हें भला कैसा पश्चात्ताप। ये बिना दबावके तो दूर, किसी दबावसे भी अब ठिकानेपर नहीं आ सकते। समाजके लिए इनसे कुछ भी आशा करना दुराशा है। चाहे जैसे हो, इन्हें समाजके सिरपरसे फेंकना ही होगा।' पहलेने रोषपूर्वक कहा। 'आक्षेप मत करो ! असन्तुष्ट होनेसे कोई लाभ होनेसे रहा।' तीसरेने स्वरको गम्भीर बना लिया था–'सोचनेकी बात यह नहीं है कि इन्हें दूर कैसे किया जाय। सोचनेकी बात तो यह है कि ये सत्यवादी, सच्चे त्यागी आज इतने गिर कैसे गये ? सत्य और त्यागके आचरणमें त्रुटि कहाँ थी, जिससे वे टिक नहीं सके ? इस समय हमलोग इसी बिषयपर बातें कर रहे हैं।' स्पष्ट था कि यदि तीसरा साथी बातको मूल प्रश्नपर न ले आता तो उसकी दिशा बदल चुकी थी। नवयुवकोंकी गोष्ठियों में जो विवाद होते हैं, वे प्रायः अनिश्चित दिशाओंमें मुडते-बढ़ते चले जाते हैं और सदा ऐसे विवाद अनिर्णीत ही रहते हैं। आजका यह विवाद भी किसी निर्णयपर नहीं पहुँचकर समाप्त हुआ। यद्यपि तीसरे

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

साथीने इसे वैयक्तिक आलोचनाओंकी दिशामें भ्रान्त होनेसे बचा लिया था ; किंतु अब उनके उतरनेका स्टेशन पास आ गया था। विवादको चलानेकी अपेक्षा बिस्तरोंको समेट कर बाँध देना अधिक आवश्यक जान पड़ा ; क्योंकि गाड़ीकी गति क्रमशः मन्द होने लगी थी।

× × ×

[२]

'यह सब क्या है ?' यदि आप भी वहाँ जायँ तो आपके मनमें भी यही प्रश्न उठेगा। अयोध्याके रेलवे स्टेशनके थोड़ी ही दूर, जिस ओर रेलवे लाइनसे अयोध्यापुरी है, उसके दूसरी ओर मणिपर्वत है। चारों ओर वन है और उसमें छोटी-बड़ी खुली-ढकी, बुर्जीनुमा-मसजिदनुमा कब्रोंकी असम्बद्ध श्रेणियाँ हैं। जिधर जायँ जिधर देखें, बस पक्की कब्रें-कब्रें ही हैं।

'मनुष्यकी दुरभिसन्धिको प्रकृति मिटा रही है।' आपको यह उत्तर अद्भुत लगेगा और वहाँ भी श्रोताको वक्ताका यह उत्तर अद्भुत ही लगा। वह आश्चर्यसे वक्ताके मुखकी ओर देखता रहा एक क्षण। लेकिन वक्ता अप्रत्याशित रूपमें गम्भीर हो रहे थे। मनुष्यके दुराग्रह, अन्धपक्षपात, उत्पीड़न एवं ध्वंसके इस इतिहासको जो कोई भी जानता है, वह यहाँ आकर गम्भीर हुए बिना रह कैसे सकता है ?

'प्रकृति मिटा रही है—मनुष्यके षड्यन्त्रको मिटानेमें लगी है वह !' सच बात है—हम आप कोई हों ; मन्दिर,

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मसजिद, गिर्जाघर तथा समाधि एवं कब्रें हमारे लिए कितनी भी सम्मान्य एवं पवित्र हों ; किंतु क्या कोई यह इच्छा कर सकता है कि मनुष्यके रहने एवं जीनेकी सम्पूर्ण भूमि मन्दिरों, मसजिदों, कब्रों या समाधियोंसे ढक दी जाय ? भारतके सर्वदर्शी ऋषियोंने तो इसीलिए शरीरको भस्म कर देने या जलमें प्रवाहित करनेकी आज्ञा दी। समाधि बनानेकी प्रथा हममें बाहरसे आयी और कब्रोंके अनुकरणपर आयी, यह कहनेमें भी हानि नहीं।'

'यह अयोध्या है। भारतीय संस्कृति एवं भारतीय समाजकी--भारतकी गौरवभूमि।' वे कहते जा रहे थे—एक वर्गने धर्मोन्मादमें निश्चय कर लिया कि यहाँ एक लाख पक्की कब्रें बना दी जायँ, तब वह उसकी तीर्थ-भूमि होगी। कोई मरे कहीं, पर गाड़ा जाय अयोध्यामें और कब्र पक्की ही बने। झूठी-सच्ची कब्रोंसे भूमि पाट दी गयी। जिधर जाइये कब्रें......। और जब मनुष्य समष्टिजीवनके साथ इस प्रकार दुरभिसन्धि करता है, प्रकृतिको उसका प्रतिकार करना ही पड़ता है।'

'ये चिह्न तो कुछ और ही बात कहते हैं।' एक पत्थर-की ओर संकेत था, जो कहींसे टूटकर लुढ़क गया था। कलके सङ्घर्षने उसे जो रूप घिस-घिसाकर दे दिया था, उसमें भी यह किसी प्रकार लक्षित हो जाता था कि किसी समय उसमें एक सुन्दर मूर्ति अङ्कित थी। कोई मूर्ति—इस समय इससे अधिक और कुछ नही कहा जा सकता।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'यह अब शीशपैगम्बर कहा जाता है।' एक क्षण रुककर उन्होंने कहा—'है यह सहस्रशीर्षा मन्दिर और इसमें ऐसे मन्दिरके अवशेष जान-बूझकर छोड़े गये थे। पराजितको निरंतर पराजय एवं अपमानका स्मरण दिलानेके लिए ये मनुष्यके उद्धत गर्वके प्रतीक हैं!' उन्होंने वाक्यके अन्तमें 'मनुष्य' शब्दपर बल देकर व्यङ्गपूर्वक उसका उच्चारण किया और यह ठीक ही है; क्योंकि दूसरोंको इस प्रकार पीड़ित करते रहनेकी कुभावना क्या मनुष्यके योग्य है?

'तुम क्या सोचने लगे? प्रकृतिके कुशल कर लग गये हैं।' श्रोताको कुछ गंभीर होते देखकर वे तनिक हँस पड़े—'पशुत्वका उत्तर पशुत्व नहीं है। मनुष्य जब मनुष्यतासे गिर जाता है; वह अपनी ही सबसे अधिक हानि करता है। देखते क्या हो, क्या यह सब करनेवालोंको कुछ लाभ हुआ? उन्होंने अपने धर्म या समाजकी कोई सेवा की इसके द्वारा? केवल विरोधी भाव जगे और जगते ही गये।'

सचमुच क्या लाभ हुआ उन्हें? विरोधी भावोंके संघर्षने उनके उद्देश्य विफल कर दिये और अब उनके ये स्मृतिचिह्न—इनकी ईंटें बिखर रही हैं, वृक्षोंकी जड़ें इन्हें तोड़ती जा रही हैं, दीवारें ढह रही हैं। किसी कब्रपर मीठी नीमने आसन जमाया है और कहीं वटवृक्षने दीवालोंका स्मारकतक निःशेष कर दिया है। बिखरी टूटी ईंटें, मुख फाड़े खँडहर—इन्हीं ईंट-पत्थरोंके लिए

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मनुष्य मनुष्यका रक्त बहाता है ! इनके पीछे—इस जड़के पीछे वह चेतनको पीड़ित, अपमानित, लाञ्छित करनेमें अपने गर्वका अनुभव करता है !

'ये धर्म और ईश्वर, यह मन्दिर और मसजिद, यही समस्त अनर्थोंकी जड़ें हैं।' श्रोता उत्तेजित होकर बोलने लगा—'मानवताकी प्रगतिके ये सदासे रोड़े रहे हैं। मनुष्य इनके भ्रममें उलझकर पशु ही नहीं, अनेक बार पिशाच बन गया है।'

'और आप अब कहना चाहते हैं कि क्योंकि लोहेसे तोपें और तलवारें बनती हैं, इसलिए विश्वका समस्त लोहा समुद्रमें डुबा देना चाहिए ?' वक्ताने ध्यानमे श्रोता-की ओर देखा।

'लेकिन धर्म और ईश्वरने हमें दिया क्या ?' श्रोता-की उत्तेजना गयी नहीं थी।

'मानवता, जिसे आप कहते हैं, उसके टिकनेका कुछ आधार भी मिला है आपको ?' वक्ताने प्रश्न किया—'जिसे आप प्रगति कहते हैं, जिसे जीवनस्तरका उठाना कहते हैं, वह पदार्थोंकी बहुलता—शारीरिक सुख-सुविधा-की प्रचुरता ही तो है ? फिर इन भोगोंको प्राप्त करनेके लिए छीना-झपटी, धोखा-धड़ी, मार-काट न हो या न की जाय, ऐसा क्यों ? जीवन-स्तरका ऊपर उठना, शारीरिक सुखोंका एकत्र होना और मानवता—सत्य-सदाचारादि गुणोंका समन्वय क्या ?'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रोता बहुत दिनोंसे स्वयं इसी उलझनमें है। यहाँ उसके हृदयमें ग्रंथि है, प्रश्न वहीं आकर अटक गया। पता नहीं क्यों, विश्वके सारे प्रश्न वहीं जाकर अटकते हैं, जहाँ हमारे हृदयमें कोई गाँठ—कोई अटक होती है। उत्सुकता और गंभीरता दोनोंका यही संधिस्थल है; किंतु संसार संसार ही इसलिए है कि वह अनिर्णीत है। हमारे प्रश्न—जीवनके समस्त प्रश्न सदासे अनिर्णीत ही चले आ रहे हैं। उनपर सोचा ही नहीं गया। जो सोचता है, जो निर्णय करनेपर उतर आता है, जो हृदयकी खटकको सह नहीं पाता, वह क्या संसार चलाता है? जिसकी हृदय-ग्रन्थि खुल गयी, उसके लिए संसार कैसा। अत: श्रोताका प्रश्न भी अनिर्णीत ही रह गया। यह वन आसपासके रहनेवालोंके लिए प्रात:सायं नित्य निवृत्त होनेके काम आता है। वे दोनों अब पृथक् होनेवाले थे; क्योंकि शरीरकी आवश्यकता कहती थी कि बौद्धिक विवाद कुछ देरको स्थगित रक्खा जा सकता है।

× × ×

[३]

संतोंका स्वभाव विचित्र होता है, उनकी रहनी विचित्र होती है और उनके उत्तर देने तथा बातचीत करनेकी पद्धति भी विचित्र होती है। सच्ची बात तो यह है कि संतोंके जो हृदयधन हैं—उन्हें आप भगवान् कहें या और कुछ, वे स्वयं बड़े विचित्र हैं। न धरिणीके, न आकाशके, और धरित्री-आकाश, दोनोंके एक साथ;

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सो उन रहस्यमयने अपने इन परमप्रिय लोगोंको, जिन्हें हम-आप संत कहते हैं, अपने-जैसा ही विचित्र बना डाला है।

अंग्रेजी पढ़े-लिखे, सजे-बजे, सुसभ्य, सुसंस्कृत बेचारे वे तीनों युवक अयोध्या आये थे। मुझमें साहस नहीं कि आजकी नूतन सभ्यतापर गौरव करनेवाले उन भले आदमियोंको तीर्थयात्री बताकर उनका अपमान करूँ। वे तो यों ही घूमने निकले थे और अयोध्या एक पुराना नगर है, इसलिए वहाँ भी उतर पड़े थे। वैसे तो ये सुपठित लोग अपने किसी काममें आकाशके तारोंसे मन्त्रणा करते नहीं; किंतु कभी-कभी तारे जब हठात् मन्त्रणा करनेपर उतर आते हैं···। पता नहीं आज राहु, केतु, शनि, मङ्गलमें-से कौन-सा क्रूर ग्रह टाँग अड़ाये बैठा था कि तीनों यात्रियोंको एक विचित्र साधु मिल गया था। ऐसा साधु था वह, जिसने उनको देखकर—'आइये, आइये' नहीं कहा, आसन नहीं दिया बैठनेको और यह भी नहीं पूछा कि 'आप कहाँसे पधारे?' पूछना-ताछना तो दूर, उसने अपनी कंठी-माला भी ठीक नहीं की, रीढ़ सीधी करके बैठातक नहीं। अजी, उसने तो आँख उठाकर देखनेका कष्ट भी नहीं उठाया। तीनों बाबुओंने हाथ जोड़कर बिना सिर झुकाये 'बाबाजी, जय सीताराम!' कहा तो उसने भी बिना सिर उठाये 'जय सीताराम!' कह लिया और फिर अपने काममें ऐसा जुट गया जैसे उसके पास तीन उजले कपड़ेवाले मनुष्य आये ही नहीं, जैसे तीन तितलियाँ या वृक्षोंकी टहनियाँ वहाँ आ गयीं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तीन कुत्तेके पिल्ले भी आते तो वह इससे अधिक उनकी ओर ध्यान देता।

'महात्माजी ! आप कर क्या रहे हैं ?' जब कोई हमारी ओर ध्यान न दे तो हमें ही उसकी ओर ध्यान देना पड़ता है। स्वामी रामतीर्थजीका कहना है कि जो मायाकी ओर पीठ करके चल देता है, माया उसके पीछे-पीछे चल पड़ती है। साधु नहीं बोलते तो फिर बाबुओं-को बोलना ही ठहरा।

'अच्छा, अच्छा ! आपलोग तो पढ़े-लिखे विद्वान् हैं, बड़े बुद्धिमान् हैं ! इस पेड़को लगा तो दीजिये।' सतने अब तीनोंकी ओर मुख उठाया और बड़े सरल भावसे कह दिया। कपड़े मैले हो जायँगे, हाथोंमें मिट्टी लग जायगी, इच्छा बिल्कुल नहीं ; किन्तु बैठना पड़ा किसी प्रकार सम्हल कर। ये साधु लोग सभ्यता तो जानते ही नहीं, किसीसे कुछ कहते समय तनिक भी विचार नहीं करते। लेकिन अनेक बार संकोचवश रूखा बनना अशक्य हो जाता है।

'इसमें तो जड़ है ही नहीं बाबा ! यह लगेगा कैसे ?' नीमके पेड़की एक डाली कह लीजिये उसे, था वह लगभग तीन-चार इंच मोटे नीमके छोटे पेड़का ऊपरी भाग। खुर्पी लिये संत उसीको गाड़नेके प्रयत्नमें थे। तीनों यात्री समीप-समीप बैठ गये थे। एकने खुर्पी उठा ली थी और दूसरेने उस तनेको ले लिया था हाथोंमें।

'जड़का क्या करना है ? वह तो पृथ्वीके भीतर रहती है। उससे न छाया मिलती, न शाकके लिए फूल

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuyan Vani Trust Donations

मिलते, न औषधिके लिए पत्ते या छाल मिलती है। उससे लकड़ी तो क्या दाँत खोदनेको सीक या चिट्ठी चिपकानेको जरा-सा गोंद भी नहीं मिलता।' साधुने बड़े भोलेपनसे कहा—'यह खूब हरा-भरा है। आपलोग इसे लगा दें। मैं इसमें खाद दूँगा, जल दूँगा, इसकी रक्षा करूँगा।'

'इसकी जड़ कहाँ है?' यात्रियोंमें-से एकने पूछा।

'वहाँ!' साधुने एक ओर संकेत किया। 'एक गाय आज तोड़ गयी इसे। अब जड़में क्या रक्खा है। उसमें एक भी पत्ता नहीं।'

'हम उस जड़के आस-पास थाला बना देते हैं। आप उसे सींचते रहेंगे तो उसमें पत्ते आ जायँगे, उससे खूब घना वृक्ष हो जायगा। आपकी कुटियाके पास छाया हो जायगी! उसी यात्रीने समझाया।'

'लेकिन जड़से क्या करना है, यह देखो अभी हरा है। तनिक भी मुरझाया नहीं है।' साधुने उसी तनेकी ओर बड़े स्नेहसे देखा।

'अब इसमें कुछ नहीं है।' यात्री हँस पड़े। चाहे यह जितना भी हरा हो और चाहे आप इसे जितना खाद-पानी दें, यह बिना जड़की डाली तो सूखकर रहेगी। बहुत हुआ तो दस-पाँच घंटे अधिक टिकेगी इसकी हरियाली। इस डालीको छोड़कर बाबा! आप तो जड़को सींचिये।'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

 Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'हाँ भैया, जड़को ही सींचूंगा !' साधुने देखा उनकी ओर। लोग कहते हैं कि धर्म और ईश्वरसे तो कुछ लाभ ही नहीं है। सत्य, सदाचार चाहिए मनुष्यमें—बस ! भला तुम्हीं कहो कि जब जड़ ही नहीं रहेगी तो ये डाल-पात कै दिन हरे रहेंगे ?'

× × ×

[४]

'साधुकी बात समझमें आने योग्य है !' तीनों यात्री अपने डेरेकी ओर लौट रहे थे। उनमें अपनी वही पुरानी उधेड़-बुन चल रही थी।

'धर्म और ईश्वर मानवताके आधार हैं ? मेरी समझमें यह बात आती नहीं !' दो व्यक्ति मार्गपर आगे-आगे जा रहे थे। उनके हाथोंमें जलसे भरे लोटे थे। उनमें जो चर्चा हो रही थी, तीनों यात्रियोंका ध्यान उस चर्चाकी ओर गया। वे पैर बढ़ाकर उनके पीछे हो लिये। उनमें एक कह रहा था—'सबसे अधिक झूठ बोला जाता है धर्मके नामपर, सबसे अधिक छल चलता है ईश्वरके सहारे। धर्म और ईश्वरके कारण जितने झगड़े, जितने कलह, जितने युद्ध, जितना रक्तपात हुआ, उतना और किसी प्रश्नपर नहीं हुआ। मानवताके लिए तो धर्म और ईश्वर ही सबसे विरोधी भाव हैं।

'अरे हाँ, तुम इन्हें पहचानते हो ?' उत्तर देनेके स्थानपर आगे चलने-वाले दूसरे व्यक्तिने एक सज्जनकी ओर संकेत किया।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खूब पहचानता हूँ। यहाँका यह प्रसिद्ध लफंगा—अब सिरसे पैरतक खादी पहनकर कैसा भला आदमी दीखता है।'

'खादी और लफंगा ?' स्वरमें कुछ हँसी आ गयी।

'इसमें हँसनेकी क्या बात है ? जो वेश अच्छा माना जायगा, बुरे लोग उसीको अपनाकर उसमें अपनेको छिपाना और अपना स्वार्थ-साधन करना चाहेंगे।'

'फिर भी—तनिक रुककर कहा गया—तो अब अच्छे आदमियोंको तो खादी छोड़ देनी चाहिए।'

'आप तो अच्छाईकी जड़ ही काट देना चाहते हैं।' वह झल्लाया 'जो भी वेश, जो भी काम, जो भी बात अच्छी होगी, जिसे भी अच्छे लोग अपनाएँगे, उसमें बुरे लोग अपनी बुराई छिपाना चाहेंगे। यदि इस प्रकार अच्छे लोग अच्छी बातोंको छोड़ते जायँ तो अच्छाईकी जड़ ही कट जायगी।'

'धर्म और ईश्वर..........!' लेकिन बात पूरी नहीं हो सकी। दो जटाधारी पास ही झगड़ रहे थे। उन्होंने जलानेको रक्खी लकड़ियाँ उठा ली थीं एक दूसरेपर आघात करनेके लिए। इस समय उनको रोकना आवश्यक हो गया था।

'सियाराम, सियाराम जपना चाहिए' एकका पक्ष था और 'सीताराम, सीताराम जपना चाहिए' यह दूसरेका। इसी बातपर वे, दोनों साधु भिड़ पड़े थे। बड़ी कठिनाईसे उन्हें धर-पकड़कर अलग किया जा सका। इस झमेलेसे

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अलग होनेपर उन यात्रियोंमें-से एकने कहा—'क्योंजी, सियाराम बड़े या सीताराम ?'

'तुम भी ऐसे ही रहे !' दूसरा साथी हँसा--'सियाराम या सीतारामका झगड़ा कहाँ था ? झगड़ा तो था कि बात मेरी बड़ी या तेरी ? अर्थात् मैं बड़ा या तू ? नहीं तो, इन दोनोंको न तो सियारामसे काम था और न सीतारामसे प्रेम-परस्पर।'

'और यही सीधी बात तुम आज कई दिनसे नहीं समझ पा रहे हो !' बड़ी गम्भीरतासे वे बोल रहे थे—'कि धर्म और ईश्वरका नाम लेकर जिन लोगोंने रक्तपात किये, जिन्होंने अधर्म या दम्भको अपनाया, उन्हें धर्म या ईश्वरसे कुछ मतलब नहीं था। उनके झगड़े अहंकारके लिए थे। वे स्वार्थके सेवकमात्र थे !'

'लेकिन इतने अनर्थोंकी जो आड़ है उसे रक्खा ही क्यों जाय ?' अब बहसका उत्साह नहीं था बोलनेवालेमें। वह स्वयं समझता था कि अब वह दुराग्रह कर रहा है। परन्तु अपनी बात पूरी की उसने—'मनुष्य कर्तव्यका पालन करें सत्य-सदाचारको अपनावें.........।'

'जी !' हँसते हुए दूसरे साथीने कहा—'और जड़ काटकर नीमका पेड़ लगावे ?'



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मानवताकी पुकार

'हे ईश्वर !' उडसनको एक प्रकारका उन्माद हो गया था। कोई स्वस्थ सबल पुरुष, कोई सुन्दर शिशु या सुन्दरी युवती देखते ही वह जहाँ-का-तहाँ खड़ा हो जाता था। दोनों हाथोंसे अपने नेत्र ढक लेता था और उसके पैर काँपने लगते थे। वह कुछ बड़बड़ाने लगता था। इस रोगका परिणाम यह हुआ था कि वह नगरोंके भीड़भरे मार्गोंसे भय खाने लगा था। उसे अपने एकान्त कमरेमें बंदी रहना प्रिय था और यदि वहाँसे निकलना ही आवश्यक हो तो वह तब निकलना पसंद करता, जब उसे मार्गमें किसीके मिलनेकी सम्भावना न हो।

'मस्तिष्कको धक्का लगा है। मानसिक विकृति है। वह पागलपन धीरे-धीरे दूर होगा।' चिकित्सकों एवं मनोवैज्ञानिकोंने कोई अच्छी सहायता नहीं दी। उन्होंने केवल सम्मति दी। बेचारी लेडो उडसन—उडसन तो अपनी पत्नीसे भी घबराने लगा था। वह उसके सम्मुख भी नेत्र बन्द कर लेता और काँपने लगता।

'ईश्वरके लिए भागो ! भागो जल्दी ! भूगर्भ-गृहमें भाग जाओ।' प्रारम्भमें उडसन प्रायः चिल्ला पड़ा करता

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

था। 'पिशाच आ रहे हैं। वे पिशाच जो नापाम बमोंसे सारे संसारको भून देनेपर तुले बैठे हैं।'

बेचारा उडसन—उसे क्या पता कि नापाम बम तो बहुत पीछे छूट चुके। मनुष्य तो अब ऐसा पिशाच हो गया है कि उसने अणु बमसे भी आगे बढ़कर हाइड्रोजन बम बना लिया है और उससे भी अधिक घातकतम अस्त्रोंकी शोधमें लगा ही है। वह चाहता है कि दूर बैठा बटन दबा दे और एक भारी नगर, जिसे वह शत्रु-नगर मानता है, अपने समस्त भवनों, लक्ष-लक्ष मानव-प्राणियों, पशुओं एवं विपुल वस्तुओंके साथ आधे क्षणमें इस प्रकार भस्से भस्म हो जाय जैसे धुनी रूईकी नन्हीं राशिपर प्रज्वलित अग्नि गिरी हो।

अणु एवं हाइड्रोजन बमोंकी उडसनने बात सुनी है—सुनना था उसे; क्योंकि वह एक हवाई सैनिक था। बात कितनी भी भयानक सुनी जाय, वह परोक्ष रहनेतक मनमें मूर्त नहीं होती। उसकी भयानकताका अनुमान हम लगा नहीं पाते। उडसनको सौभाग्यवश हिरोशिमा या नागासाकीके भस्मावशेष देखनेका अवसर नहीं मिला था। यद्यपि वह उत्सुक बहुत था उन्हें देखनेके लिए। यदि उसने उन्हें देख लिया होता—आज उसकी दशा और दयनीय होती।

'वे पिशाच! वे गिरा रहे हैं नापाम बम!' उडसन अपनी दोनों आँखें बन्द करके काँपता हुआ चिल्ला उठता था—'भगवान्के लिए भाग जाओ! वे तुम्हें भूनकर धरा देंगे!'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

डाक्टरोंने ठीक कहा था। उसका उन्माद धीरे-धीरे घटने लगा है। अब वह चिल्लाता नहीं है। लेकिन लगता है कि अब भी वह उसी प्रकार बड़बड़ाता है। अन्तर इतना पड़ा है कि अब केवल उसके होंठ हिलते हैं। मनोवैज्ञानिक कहते हैं—'यह अच्छे लक्षण हैं। उसका मस्तिष्क सावधान होने लगा है। उसमें इतनी समझ आ गयी है कि सबके सामने चिल्लाना बुरी बात है। इसी प्रकार सोचना जारी रहेगा तो वह शीघ्र समझ जायगा कि उसका भय अकारण है !'

क्या सचमुच उसका भय अकारण है ? क्या मानव — ये मानवताके ठेकेदार शक्तिसम्पन्न राष्ट्रोंके कर्णधार अपनी पैशाचिकताका परित्याग करनेको प्रस्तुत हो गये हैं ? क्या उन्होंने विश्वको भूनकर धर लेनेकी अपनी प्रलयङ्कर योजनाओंमें कोई शिथिलता आने दी है ?

× × ×

उडसन कोरिया युद्धमें था। वह हवाई सैनिक ठहरा, अपने यानपर जमा बैठा था। उसका बमबाज यान आज दिनमें उड़ान ले रहा था। एक, दो, तीन—उडसनको आदेश मिला और उसने बटन दबा दिया। यानके नीचे बँधे बम बन्धनसे छूट गये। बड़ी शीघ्र गतिसे यान आगे बढ़ गया और पर्याप्त ऊपर उठ गया।

उडसनको कुछ नहीं हुआ उस समय। उस समय तो उसे प्रसन्नता ही हुई। नीचेसे धुआँ और लपटोंका अंबार उठ रहा था। नापाम बमोंने अपनेमें भरी पेट्रोलकी कीच

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhawan Vani Trust Donations

नीचे बिखेर दी थी और उसमें आग लग चुकी थी। शत्रु जल रहा था—शत्रु! वह शत्रु जिससे उडसनको घृणा करना सिखलाया गया था। शत्रु जिसके सम्बन्धमें कहा गया था कि वह नरकके कीटसे भी घणित और शैतानसे भी अधिक दुष्ट है!

आक्रमण सफल रहा। उडसनका यान लौटा तो उसे समाचार मिला कि शत्रु पीछे हट गया है। अग्रगामी सैनिकोंने शत्रुकी सीमाके भीतर एक चौकीपर अधिकार कर लिया है।

उडसनका दुर्भाग्य! कितना अच्छा हुआ होता कि उसे उस दिन मित्रोंसे, सहयोगियोंसे, अफसरोंसे वह प्रशंसा न मिली होती। वह उस महत्त्वपूर्ण चौकीको लक्ष्य बनानेमें चूक गया होता। उसका यान गिर जाता और वह स्वयं जल गया होता अपने यानमें तो भी इतना क्लेश उसे न होता। परंतु यह सब होना नहीं था, नहीं हुआ।

उडसनकी प्रशंसा हो रही थी। अफसर उससे हाथ मिला रहे थे। शत्रुकी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चौकी आज उसने भस्म कर दी और अपनी सेनाने अवसरका लाभ उठाकर उसपर अधिकार कर लिया।

'आप मुझे उस चौकीको देखनेकी अनुमति देंगे?' उडसनका दुर्भाग्य उस दिन उससे भरपूर बदला लेनेपर तुला था। क्या बिगड़ जाता यदि वह उत्साहातिरेकमें यह अनुमति न माँगता?

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'अवश्य !' अफसरने बाधा नहीं दी । 'यद्यपि अभी वहाँ खतरा है ; किंतु अपने एक अच्छे योद्धाका उत्साह हम तोड़ना नहीं चाहेंगे । हवाई जहाज वहाँ उतर नहीं सकेगा । तुम जीपसे जा सकते हो ।'

'हे भगवन् !' उडसनको मार्गमें ही मूर्छा-सी आने लगी । उसके समीपसे जो एम्बुलेन्स (चिकित्सा गाड़ियाँ) जा रही थीं, उनमें-से दारुण चीत्कारें उठ रही थीं । उनमें-से जलते मांसकी गन्ध आ रही थी—जलता मांस—तो क्या उसने मनुष्योंको भून दिया है ?

जब जीपसे उतरा वह, सामने ही एक शव पड़ा था । कोई आठ-दस वर्षका बालक होगा । उसके शरीरके वस्त्रोंका क्या पता लगना था, चमड़ा एवं मांसकी परत तक जल गयी थी । उसका वर्ण काला, झुलसा, स्थान-स्थानसे फटा और उसमें-से बाहर आया मांस ....—उडसनने नेत्रोंपर हाथ धर लिये ।

कहाँतक वह नेत्र बन्द किये रहता । कुछ स्त्रियाँ चीखती-चिल्लाती उसीकी ओर आ रही थीं । सैनिकोंने उन्हें थोड़ी दूरपर रोक दिया । कई गिर पड़ीं वहीं । वे उन्मत्त हो चुकी थीं । उन सबके सिरके केश जल गये थे । मुख ही नहीं, पूरा शरीर काला पड़ गया था । झुलसकर फट गया था स्थान-स्थानसे । वे पागल विकराल दिगम्बर दौड़ती पिशाचिनें-सी प्रतीत हो रही थीं ।

उडसन बैठ गया वहीं पृथ्वीपर । उसको चक्कर आ रहा था । 'शत्रु-शत्रु ।' कोई उसके सिरमें चिल्ला रहा

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

था—'ये अबोध बच्चे, ये सुकुमारा युवतियाँ, ये तुम्हारा शत्रु हैं! तुमने इन्हें भून डाला है! पिशाच कहींके।'

उडसनको स्वयं पता नहीं कि वह कब चिल्ला पड़ा था और क्या-क्या कहता जा रहा था। उसे वहाँसे कैसे लौटाया गया और कब युद्धस्थलसे पीछे भेज दिया गया, इसका भी उसे कुछ पता नहीं। उसका प्रभाव दूसरे सैनिकोंपर प्रतिकूल पड़नेका भय था। स्वदेश लौटा दिया गया उसे और वहाँ चिकित्सकोंके प्रबल प्रयत्नसे पूरे तीन महीने पश्चात् वह इस योग्य हुआ कि स्वयं अपना दैनिक जीवन चलाने लगा है।

'अभी सावधानी अपेक्षित है।' चिकित्सकोंने श्रीमती उडसनको सम्मति दी है। 'इन्हें समाचार-पत्र एकदम न दिये जायँ। धीरे-धीरे मस्तिष्कके विशेष दोष भी दूर हो जायँगे।'

× × ×

'शान्ति! हमें शान्ति चाहिए! उडसन जब शान्तिकी बात कहता है, तब उसकी वाणीमें एक अद्भुत उत्तेजना होती है। वह सैनिक रह चुका है और युद्धकी दारुण विभीषिकाको उसने देखा है। वह कहता है—भगवान्के लिए अब युद्धकी बातें बंद कर दो। मनुष्यको पिशाच नहीं बनना है तो प्रत्येक मूल्यपर उसे युद्धकी भावना भगा देनी होगी।'

'भारत सदासे विश्वका पथदर्शक रहा है। वह अन्धकारमें गिरते मानवका महान् उद्धारक है, संसारमें

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहुत-से लोग भारतकी प्रशंसा करते हैं। सहस्रों नहीं, लाखों और करोड़ों कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी, ऐसे मनुष्य हैं जो भारतीय शान्तिप्रियतासे प्रेम करते हैं। किंतु उडसनका प्रेम और ढंगका है। वह भारतका स्मरण करके भावविह्वल हो उठता है। उसके हृदयका केवल एक स्नेहाधार है, उसकी आशा एक ही स्थानपर अटकी है, और वह है भारत। वह चर्चा चलते ही कहता है—'केवल भारत हमें युद्धके भयसे बचा सकता है।'

'ओह! कितनी अंधी है जनता! इन युद्धपिपासु पिशाचोंको जेलमें बंद क्यों नहीं कर दिया जाता!' उडसन अब पागल नहीं है; किंतु वह अत्यधिक भावुक है। युद्धने उसके मस्तिष्कको दुर्बल कर दिया है। अपने और पराये राष्ट्रका भेद वह समझनेपर भी समझ नहीं पाता। किसी राष्ट्रके नेता जब युद्धकी चर्चा करते हैं, शस्त्रास्त्र बढ़ानेके लिए कहीं कोई बजट आता है, उडसन आग-बबूला हो उठता है—'ये दुष्ट मनुष्यको मनुष्यका मित्र नहीं बनने देंगे। इन्हें तो गोली मार दी जानी चाहिए।'

'भारत सेना एकत्र कर रहा है हमारी सीमापर। वह शस्त्रास्त्र ले रहा है अन्य देशोंसे!' इस प्रकारका प्रचार तो विदेशोंमें पाकिस्तानकी ओरसे चलता ही रहता है। कोई उडसनको चिढ़ाना चाहे तो ऐसे समाचार उसे सुना दे। वह उबल उठेगा—'झूठ! धूर्त कहींके। इन्हें कोर्टमें खड़े करके कोड़े लगाने चाहिए। भारत कहीं किसीपर आक्रमण कर सकता है?'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उडसनकी श्रद्धा अडिग है। आप उसे अर्धविक्षिप्त कह सकते हैं; किंतु वह है सीधा और अब भी उसमें सैनिकका अक्खड़पन है। उसका स्वप्न है—'भारतका सत्प्रयास सफल होगा। युद्धके पिपासुओंको अन्ततः जनता अवश्य जेलमें बंदकर देगी। मेरी रायमें उन्हें एकदम मार देना चाहिए। विश्वके सब मनुष्य समान हैं। वे परस्पर भाई हैं। उनका एक राष्ट्र क्यों नहीं बन सकता! और जबतक एक राष्ट्र नहीं बनता, भारतकी शुभ सम्मति मानकर वे परस्पर प्रेमपूर्वक तो रह ही सकते हैं।'

'विश्वके राष्ट्रोंमें बहुत वैभिन्न्य है। उनके आदर्श परस्पर विपरीत हैं। उनका प्रेमपूर्वक रह पाना शक्य नहीं है।' उडसनसे यह बात कह देना सरल नहीं है। अभी वह बहुत शीघ्र उत्तेजित हो जाता है। वह 'युद्ध अनिवार्य है' इस कल्पनाको भी सह नहीं सकता।

'मेरा पड़ोसी निरामिषभोजी है और कुत्ते पालता है!' उडसनको कुत्ते बहुत अप्रिय हैं तथा सैनिक जीवन व्यतीत कर लेनेके कारण उसे आमिष अप्रिय नहीं है। वह जानता है कि उसका पड़ोसी उसका यह स्वभाव पसंद नहीं करता—'हम क्या परस्पर सिर फोड़ लें। मैं शपथपूर्वक कह सकता हूँ कि प्रलयतक हम दोनों इसी प्रकार पड़ोसी रह सकते हैं और कभी नहीं लड़ेंगे।'

'आप दोनों बुद्धिमान् हैं! सुसंस्कृत हैं।' आप उडसनको यही कह सकते हैं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'राष्ट्रोंमें मनुष्य ही तो हैं। भारत यही तो कहता है कि सब बुद्धिमान् सुसंस्कृत पड़ोसीके समान रहें।' उडसनको बड़ा क्रोध है युद्धकी भावना बनाये रखनेवाले कुछ लोगोंपर—'मुट्ठीभर मूर्ख अपने स्वार्थके लिए पिशाच बन गये हैं। वे संसारको भून देना चाहते हैं। उन्हें पकड़कर बंद कर दो! बस!'

उन्हें ही पकड़कर बंद कर दिया जा सकता—बेचारा उडसन! वह कहाँ समझ पाता है कि उन्हें पकड़ना कितना कठिन है। भय तो यह है कि उनका कोई चर किसी दिन उडसनको ही कहीं पकड़कर बंद न कर दे पागलखानेमें या शत्रुका प्रचारक कहकर।

उडसनका बन्द हो जाना असम्भव नहीं है; किंतु क्या मानवताकी वह पुकार बंद हो जायगी जो पागल उडसनके अन्तरमें अकस्मात् जाग उठी है? वह क्या अकेले उडसनका प्रलाप है? क्या वह आहत, भीत मानवताकी करुण पुकार नहीं है? और यदि सचमुच वह मानवताकी पुकार है तो—तो उसे क्या पिचास कभी दबा सका है जो आज दबा लेगा।

मानवता—ईश्वरका विश्वको सर्वश्रेष्ठ वरदान मानवता और वह घृणा, द्वेष, बर्बर पैशाचिकतापर विजयिनी होकर रहेगी!



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भजन और भोजन

वन्दावन गये थे हमलोग—मैं और मेरे एक मित्र। संयोगकी बात है, हमने वहाँ पानीघाटपर ठहरना निश्चित किया। पानीघाट वृन्दावनका श्मशान; किंतु नगरके किसी दूसरे भागसे वह मुझे मनोहर लगा। श्मशान तो दूर है। यमुनाका प्रवाह पर्याप्त दूर चला गया है। वर्षामें भले इस हरियालीके बीच श्मशान रहता हो, इस समय तो वह पौन मील आगे रेतमें है। जलती चिताका धुआँ अवश्य दीख जाता है यहाँसे।

सघन वृक्षावलीके मध्य जहाँ-तहाँ साधुओंकी कुटियाँ—कुछ फूसकी और कुछ ईंट-चूनेकी भी। जहाँ बाबाजी रहेंगे, ठाकुर-पूजाके लिए फूल-तुलसी भी लगी मिलेगी ही। इस मनोरम वातावरणमें सामनेका सुविस्तृत पुलिन और सुन्दर प्रतीत होता था। यही कारण था कि शहरसे इतनी दूर हम यहाँ ठहरे।

हम जिन बाबाजीकी कुटीपर ठहरे थे, वे अच्छे चिकित्सक माने जाते हैं। आयुर्वेदके विद्वान् हैं। प्रायः उनके यहाँ खरलमें दवा घुटती रहती है, जड़ियाँ कूटी जाती रहती हैं और पुटपाकका क्रम भी चलता ही है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बाबाजीमें मुझे एक गौरवमयी मानवता मिली और सबसे बड़ा आकर्षण यही था जो मुझे उनतक खींच लाया था। वे रोटी और औषधके उदार दाता थे। रोगी आते थे, उन्हें नाड़ी देखकर वे औषध दे देते थे—बिना मूल्य औषध। अमीर-गरीब, ब्राह्मण-हरिजन, हिंदू-मुसलमानका भेद बाबाजी रोगीमें नहीं करते थे। उन्हें किसीकी नाड़ी देखनेमें हिचक नहीं थी। यह दूसरी बात है कि वे बीमारोंका देखना जब समाप्त कर चुकते, तब स्नान करते और तभी उनकी ठाकुर-पूजा होती।

बीमारको जो भी औषध आवश्यक है, वह कितनी मूल्यवान् है, यह वे सोचते तक नहीं थे। लेकिन मैं भूल रहा हूँ, औषधका एक मूल्य वे प्रायः लिया करते थे। जो शरीरसे पुष्ट और श्रम करने योग्य ग्रामीण आते थे, उन्हें वे लगा देते थे दवा कूटने या घोटनेमें—घंटे-आध घंटे उन्हें यह श्रमदान करना पड़ता था।

'रोगी आर्त है। वह धनी हो या दरिद्र, जब मेरे पास आता है, पीड़ित होता है। उससे कुछ भी लेना मुझे मानवताका अपमान लगता है।' बाबाजीका नियम माना जाय तो आजके सब चिकित्सक उपवास करने लगें; किंतु कोई औषध लेकर रुपया निकालता तो वे अप्रसन्न हो उठते। उसे खरी-खोटी सुनाते। रोग दूर हो जानेपर जिसकी जो इच्छा हो उनके यहाँ 'ठाकुर-सेवा'के लिए समर्पित कर आवे।

ठाकुर सेवाके लिए इस प्रकार इतना अवश्य आ जाता था कि उससे साधु-सेवा चलती थी कुटियापर, और

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

औषधनिर्माण भी चलता रहता था। किसीसे बाबाजीने कभी याचना की हो; ऐसा सुना नहीं गया।

औषधके समान ही प्रतिबन्धहीन वितरण था बाबाजी-के यहाँ भोजनका। अवश्य उनके यहाँ दस-पाँच साधु टिके रहते थे और वे ही भोजन बनाते थे। साधुओंके टिक्कर ही बनते थे वहाँ; किंतु दोपहरमें जब ठाकुरजीको भोग लगाया जा चुकता, दो-तीन साधु पूरे ऊँचे स्वरसे पुकारते 'पंगतकी सीताराम!' जिसकी इच्छा हो, वह उस समय वहाँ भोजन करने आ बैठे।

गृहस्थ भी आते थे। कभी कोई भिखारी भी आ जाता था। अवश्य ही पंगतसे पृथक् ऐसे लोगोंको बैठना पड़ता था; किंतु भोजनमें कोई वैषम्य नहीं होता था। अभ्यागतको सम्मानपूर्वक वे तृप्त करते थे।

'एक अधम प्राणी धाममें आकर पड़ गया है।' अपने सम्बन्धमें प्रायः वह कहते थे—'द्वारपर आकर पड़ जानेकी लाज व्रजराजकुमार कर लेंगे, इतनी आशा है। साधन-भजन कहाँ होता है अपनेसे।'

'आप भजन किसे कहते हैं?' मैंने पूछा था।

'भजन है सेवा—तन-मन-सर्वस्व जब सेवामें समर्पित हो जाय, तब समझो कि भजन बना।'

'यह श्रीविग्रहका पूजन, नाम-जप, कीर्तन-कथा?' मैं उनके पास ही बैठा था और इस समय कोई रोगी नहीं था उनके सम्मुख, अतः उनसे कुछ जान लेनेकी इच्छा हो आयी थी।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'सत्स्वरूप भगवान्का सङ्ग ही सत्सङ्ग है न ?' प्रश्नके बदले प्रश्न कर दिया उन्होंने ।

'लगता तो ऐसा ही है।' मुझे स्वीकार करना पड़ा ।

'तुम इस समयकी इस चर्चाको भी तो सत्सङ्ग ही कहोगे ?'

'इसलिए कि यह उस वास्तविक सत्सङ्गका साधन है । इससे वह प्राप्त होता या हो सकता है ।'

'तब जो भजनका साधन है, उसे भजन कहना क्या ठीक नहीं है ?' उन्होंने मेरी ओर देखा ।

'ठीक तो है, किंतु……।'

'किंतु-परंतु कुछ नहीं । मानव-स्वभाव है कि वह अपनी दुर्बलता स्वीकार नहीं करना चाहता । उसके लिए वह बहाने ढूँढ़ता है ।' और उन्होंने एक श्लोकका भाव सुना दिया अपने ढङ्गसे—'यह विश्वरूपमें वही लीलाविहारी तो सामने हैं । इनकी उपेक्षा-अवमानना करके मैं जो यह कुटियामें कुछ मिनट बैठ जाता हूँ—भजनकी विडम्बना ही तो है, वहाँ मन पता नहीं कहाँ-कहाँ भटकता रहता है । अंगुलियाँ मालाके दानोंपर घूमें अथवा चंदन-तुलसी-पुष्प चढ़ावें श्रीविग्रहपर, इस जड़ देहकी क्रियाको तुम भजन कहोगे ?'

'तब यह भजन नहीं ?' मैंने कुछ सशङ्क होकर पूछा ।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'है तो सही !' वे तनिक हँसे—'यह देहकी क्रिया भी भजन है ; क्योंकि भजनकी यह विडम्बना भी भजनके कुछ-न-कुछ समीप तो ले ही जाती है ।'

हमारी चर्चा अधूरी रह गयी ; क्योंकि उसी समय 'पङ्गतकी सीताराम'की पुकार एक साधुने कर दी । मैं भी उनके साथ ही उठा ; क्योंकि आज हम दोनोंको यहीं भगवत्प्रसाद ग्रहण करना था ।

साधुओंकी पङ्गतके साथ ही हमलोग भी एक किनारे बैठे । दो लम्बी पंक्तियाँ और दोनोंको मिलाती एक छोटी पंक्ति । जो दिशा रिक्त थी, उधर रसोई घर था । भोजन परसा जा चुका था और हमने प्रारम्भ भी कर दिया था कि किसी ओरसे एक बिल्ली कूदकर हम सबके बीचमें आ गयी ।

बड़ी-सी मोटी बिंदीदार देशी बिल्ली थी, किंतु लगता था कि वह अवश्य पालतू होगी ; क्योंकि उसे कोई भय नहीं लगा इतने मनुष्योंसे । 'म्याऊँ—उसने आते ही अपनी माँग प्रारंभ कर दी । कभी एक ओर मुख करती और कभी दूसरी ओर ।

'हुँ' एक साधुने बायाँ हाथ हिलाया और डाँटनेका प्रयत्न किया ।

'म्याऊँ' बिल्ली तनिक उनके पाससे पीछे हटी और अपनी माँग उसने दुहराना बंद नहीं किया ।

साधुओंमें कोई बिल्लीको भोजन करते समय छू सकता नहीं था और वैष्णवोंकी पंगतके बीच यह हिंसक

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्राणी बैठा रहे, यह उन्हें सह्य नहीं था। कई साधु उस छोटे-से जीवको डराकर भगा देनेकी चेष्टा करने लगे; किंतु बिल्ली क्यों हटने लगी। उसके भी पेट है, उस पेटमें भी भूख लगी है और जब भोजन सामने है, उसे क्यों नहीं मिलना चाहिए।

एक कठिनाई और थी। बिल्ली कूदकर सबके बीचमें आ तो गयी थी; किंतु उसे कोई कंकड़ या डंडा मारकर भगा दे तो पता नहीं वह किस ओरसे भागे। कहीं कोई साधु उसकी भाग दौड़में उससे छू गया तो पूरी पंगत भले भूखी न उठ जाय, वह तो भूखा उठ ही जायगा।

साधु इधर-उधर देखते थे, बिल्लीको डाँटते थे और उसे भगा देनेकी युक्ति चाहते थे। मैं देख रहा था कि जिनकी यह कुटी है वे बार-बार कुछ संकेत कर रहे थे। भोजनके समय वे मौन रहते हैं और उनका संकेत कोई समझ नहीं रहा था। अंततः उन्होंने जलसे आचमन किया।

'एक पत्तल लगा लाओ।' आचमन करके उन्होंने परसनेवालेको आदेश दिया। पत्तल आयी और बिल्लीके सामने रख दी गयी।

'आप प्रसाद ग्रहण करें!' किसीने आग्रह किया।

'आप करें—मैं तृप्त हो गया।' तनिक रुककर बोले—'मैं बैठा ही हूँ—आवश्यकता होगी तो प्रसाद ले लूँगा?'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'प्रसाद जूठा नहीं छोड़ा जाता !' एक ओरसे यह शब्द आया।

'ऐसा तो नहीं है !' उन्होंने कहा—'कुछ प्राणी सीथ अधिकारी होते हैं। उनको भी कभी-कभी समय मिलना चाहिए।'

बात यह थी कि वे रात-दिनमें एक ही समय भोजन करते थे और मौन-भंग हो जानेके बाद अब भोजन करना उनके लिए नियम भंग था। कठिनाईसे कुछ ग्रास वे आज ग्रहण कर सके थे। लेकिन उन्होंने ढंग ऐसा बना लिया, जैसे बिल्ली भोजन करके तृप्त हो जाय तो वे प्रारम्भ करेंगे। इसका फल यह हुआ कि दूसरे लोगोंने भोजन स्थगित नहीं किया।

सबके साथ ही वे उठे। अपना पत्तल स्वयं उन्होंने उठाया और जो कुत्ते कुछ दूर प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्हें दे दिया। सबको ही उनके भूखे रहनेका बहुत दुःख था। बिल्ली तो अपना पेट भरकर जा चुकी थी।

'आपने आज भोजन किया ही नहीं।' विश्रामके लिए जब वे लेटे, मैं उनके समीप जा बैठा।

'किंतु आज नटनागरने कृपा की। आज उन्होंने मुझसे भजन कराया !' गद्‌गदकण्ठसे वे बोले—'उनकी कृपाके बिना भजन बनता कहाँ है।'

'कोई विशेष भजनसे तात्पर्य है आपका ?' मैं कुछ समझ नहीं सका था कि वे कहना क्या चाहते हैं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'उस भूखी बिल्लीके रूपमें मुझसे अन्न माँगने वही विश्वरूप नहीं आये थे, यह तुम कह सकते हो ?' अब भी कण्ठ भरा था उनका—'उन्होंने कृपा की—अन्यथा मुझमें भी उपेक्षा ही जाग्रत् होनी स्वाभाविक थी। भोजन तो प्रतिदिन करता हूँ। दूसरा भी जो कुछ करता हूँ—भोजनके लिए ही तो है वह। भजन तो आज इतना-सा हुआ ?'

उन्हें प्रणिपात कर लिया मैंने।



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'स्वारथ साँच'

'मैं ठहरा स्वार्थी मनुष्य और उसमें भी व्यापारी। मुझे कोई मूर्ख बनाकर ठग ले, इसे मैं सहन नहीं कर सकता।' भगवान् ही जानें कि वे स्वार्थी हैं तो परमार्थी कौन होगा। उनके-जैसा निःस्पृह, सेवापरायण मुझे तो देखनेमें ही नहीं आया।

'गोरा वर्ण, लम्बा-दुबला देह। लम्बा ही मुख और सरल भोले नेत्र। शरीरपर एक बगलबंदी, लगभग घुटनोंतककी धोती। जेबमें लौंग-इलायची भरे रहते हैं। स्वयं उनके लिए न लौंगका उपयोग है, न इलायचीका। जो भी परिचित मिलेगा, बड़ी नम्रतासे प्रणाम करेंगे और तब उनका हाथ अपनी जेबमें जायगा। आपका छुटकारा नहीं है उनकी लौंग-इलायची लिये बिना।

सिरके अगले भागमें केश नहीं रहे हैं। जो हैं, श्वेत हो चुके हैं। शरीर पर झुर्रिया पड़ चुकी हैं। गलेमें तुलसीकी कण्ठी और हाथमें जपकी झोली लिये यह वृद्ध जहाँ भी मिलेगा, जब भी मिलेगा, नम्रताकी मूर्ति। उन्हें देखकर मुझे स्मरण आ जाता है—

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः॥

वार्धक्य है ही रोगोंके प्राबल्यकी अवस्था। उनका शरीर भी अनेक व्याधियोंसे ग्रस्त रहता है; किंतु कभी तो अपने रोगकी, अपनी पीड़ाकी चर्चा उन्होंने की हो। तनसे और धनसे भी वे अभावग्रस्त, रोग-पीड़ित जनोंकी सेवामें ही जुटे मिले मुझे। आज इसके यहाँ और कल उसके यहाँ—उनके कहीं भी जानेका एक ही प्रयोजन है—उसकी कोई सेवा करनी होगी।

'कभी इस भले आदमीको क्रोध भी आता है?' मैंने एक परिचितसे पूछ लिया था हँसीमें।

'वे तो परम संत हैं। उनको क्रोध भला कैसे आ सकता है?' बड़ी श्रद्धाके साथ ये शब्द कहे गये। किंतु साधु-वेशधारी होंगे, इस संदेहमें आप न पड़ें। वे गृहस्थ हैं और गृहस्थवेशमें ही रहते है। वैसे अब रहते हैं एकाकी। पत्नीका परलोकवास बहुत पहले हो चुका और पुत्र कहीं दूरके नगरमें कोई काम करता है।

भजन, सेवा और तीर्थवास—उनके अब इतने ही काम हैं और उनसे कुछ कहिये उनकी प्रशंसामें तो कहेंगे—'मैं स्वार्थी हूँ। बनिया ठहरा। मुझे मूर्ख बनाकर कोई ठग ले, यह मैं सहन नहीं कर सकता।'

'रघुनाथजीकी लीला! बड़े लीलामय हैं वे।' यह एक दूसरा वाक्य है जो उनके मुखसे मैंने कई बार सुना

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है। जब भी किसीके किसी दोषकी चर्चा आप उनके सम्मुख करेंगे, वे इस वाक्यको दुहरा देंगे और उनके होंठ तथा झोलीके भीतर अँगुलियाँ अधिक शीघ्रतासे चलने लगेंगी।

उन्हें कष्ट होता है, उद्वेग होता है जब उनकी प्रशंसा की जाती है अथवा उनका सम्मान करनेका कोई प्रयत्न करता है। उस समय ऐसा लगता है कि उनके नेत्र भर आये हैं। लेकिन आप उनका तिरस्कार करें तो उनके कानपर जूँ नहीं रेंगती। उन्हें सेवाका कोई काम बता दें तो उनका मुख खिल उठता है।

'बच्चा क्या करता है आजकल ?' मैंने एक बार पूछा था उनसे। मुझपर उनका इतना स्नेह है कि मैं उनके शरीर तथा पुत्रका समाचार यदा-कदा पूछ लेता हूँ।

'मूर्खता करता है! बनियेका बेटा होकर मूर्ख निकला।' उनके मुखसे पहली बार झुँझलाहटके-से शब्द सुने थे मैंने। उन्होंने मेरे सम्मुख किसीकी निन्दा की हो, यह पहला अवसर था। अतः मुझे कुतूहल हुआ। उनकी कुटियापर गया था मिलने। जमकर बैठ गया। बात क्या है, यह जान लेना मुझे महत्त्वकी बात लगी।

'क्या रक्खा है। रामजीकी लीला है। वे जिसे जैसा नाच नचायें।' वे सम्हल गये थे और पूछनेपर टाल देना चाहते थे मुझे; किंतु उनमें यह खेद क्यों जागा, मुझे यह जानना ही था।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'वह आजकल करता क्या है ?' प्रश्नपर मैंने बल दिया। 'रहता कहाँ है ?'

'व्यापार करता है। रुपये इकट्ठे करनेके चक्करमें पड़ा है।' उन्होंने मुझे सङ्कोचपूर्वक थोड़ेमें बता दिया कि लड़का कहाँ रहता है, क्या करता है।

'कोई बुराई तो करता नहीं !' मैंने कहा—'युवक है, उपार्जन करता है और उपार्जन ईमानदारीसे करता है।'

'रघुनाथजी जिससे जो करायें, ठीक ही है !' वे अब अपने चित्तमें सावधान थे। सम्भवतः लड़केकी निन्दा मुखसे निकल गयी, इसका भी खेद था उन्हें।

'आप उसे मूर्ख क्यों कहते हैं ?' मैंने हठपूर्वक पूछा।

'जो अपना स्वार्थ भी न समझे, वह मूर्ख ही तो है।' उन्होंने आग्रह करनेपर बताया—'क्या बनेगा रुपयोंसे ? बैंकमें बहुत धन एकत्र हो गया तो उससे लाभ ? इतना धन उसके पास अब है कि वह सादा जीवन व्यतीत करते हुए निश्चिन्त भजन करता रहे।'

लड़केकी पत्नीका भी देहान्त हो चुका है। वह फिर विवाह करेगा या नहीं, मुझे पता नहीं है ; किंतु पिताकी इसमें सम्मति नहीं है। उन्होंने उसे साल-दो-साल साथ रक्खा था। वह भी प्रतिदिन सवा लाख नामजप करता था उन दिनों। उसे भी बगलबन्दी और घुटनोंतक धोती पहिने, हाथमें जप-झोली लिये, घुटे सिर मैंने देखा है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

त्याग और तपका यह जीवन सबके वशका नहीं हुआ करता। उस युवकसे साधक-जीवन निभा नहीं, तो उसे दोष नहीं दिया जा सकता। वह अब व्यवसाय करने लगा है। तनिक सुख-सुविधा, थोड़े अच्छे वस्त्र-भोजनकी उसकी आकाङ्क्षा अस्वाभाविक तो नहीं है।

पिता कहते हैं कि वह मूर्ख हो गया है। वह मूर्ख है तो बुद्धिमान् समाजमें कितने हैं आज ? लेकिन अब इनसे कुछ पूछना व्यर्थ है। उन्होंने इतना भी बता दिया, यही कम नहीं है। उनसे विदा लेकर मैं उस दिन चला आया।

× × ×

'आप यह पद-संग्रह कितनेमें ले आये ?' मैं उनकी कुटियापर यह सुनकर गया था कि आजकल वे रुग्ण हैं। किंतु वे उलटे मेरे सत्कारमें व्यस्त हो गये थे। एक पुस्तक पड़ी थी आसनके समीप और नयी लगी वह मुझे। मैंने भी उसकी एक प्रति अभी चार-छः दिन पहले खरीदी है।

'आप इस बार ठगे गये।' उन्होंने छपा मूल्य दिया था। यहाँ बहुत-से दूकानदारोंने स्वयं पद-संग्रह छपवाये हैं। पुस्तकपर मूल्य अधिक छपवा रक्खा है। प्रायः ठीक मूल्य पूछनेपर छपे मूल्यसे कममें वे पुस्तक देते हैं।

'मैं कहाँ ठगा गया ?' मेरे ठीक मूल्य बतलानेपर वे बोले—'ठगा गया वह बेचारा ! रघुनाथजीकी लीला !'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मैं चौंका। सचमुच ठगा कौन गया ? जिसे पुस्तकके चार आने मूल्य अधिक देने पड़े वह या जिसने चार आने-में अपनी ईमानदारी, सत्य, विश्वसनीयता बेच दी वह ?

'चार आनेके लिए मैं झिकझिक करता तो ठगा जाता।' उन्होंने दूसरा सूत्र सुनाया—'मेरी शान्ति और समय जाता उस चार आनेमें, जिस समयमें दो-चार भगवन्नाम तो लिया ही जा सकता है।'

'सचमुच आप पक्के व्यापारी हैं !' मैंने उन्हें मस्तक झुकाया तो वे पैर पकड़ने लगे।

'प्रशंसासे क्या मिल जाता है मनुष्यको ? निन्दासे उसका क्या बिगड़ जाता है ?' उस दिन वे तनिक खुलकर बोल रहे थे—'वह प्रशंसाके पीछे जब पागल होता है, निन्दासे व्यथित होता है तो अहंकार उसे ठग लेता है। वह केवल अपनेको मूर्ख बनाता है।'

'ओह ! सचमुच अहंकार मूर्ख ही तो बनाता है ऐसे सब अवसरोंपर हमें।' मैं सोच रहा था कि जीवनका कितना श्रम और समय इस मूर्खताके पीछे मेरा नष्ट हुआ तथा हो रहा है।

'जीवन की आवश्यकताएँ अधिक नहीं है।' वे कहते जा रहे थे—'पेटकी क्षुधा थोड़ेमें निवृत्त हो जाती है। थोड़ेमें शरीरकी रक्षा हो जाती है। मनुष्यको उसकी जीभ ठगती है। और मूर्खता ठगती है। वस्त्रादिके साज-शृङ्गारपर—फ़ैशनपर होनेवाला व्यय मूर्खता ही है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आपने कुर्ता पहिना या कोट-कमीज, यह पूरे नगरमें कोई ध्यान नहीं देता। आपका सजना केवल अपने मनके मिथ्याभिमानका संतोष है। मन ठगता है आपको कि लोग क्या कहेंगे !'

मेंने उनसे आज पूछा था कि 'आप अपनेको स्वार्थी क्यों कहते हैं ?'

'मैं अपने स्वार्थपर दृष्टि रखता हूँ।' उन्होंने बताया था—'बनियाँ हूँ मैं। कोई मुझे ठग ले, यह मुझे सहन नहीं होता। मेरा मन, मेरा अहंकार ही मुझे ठग सकता है। यह न ठगे तो दूसरा कौन ठगेगा ? आप सब तो श्रीरघुनाथजीके स्वरूप है। आप तो सदा इस दीनपर अनुग्रह ही करते हैं।'

उनके शब्दोंमें कहीं भी कृत्रिमता नहीं थी। उनका स्वर, उनके भरे-भरेसे नेत्र कह रहे थे कि ये शब्द उनके हृदयसे निकल रहे हैं।

'पूरा संसार ही तब मूर्ख है !' मैंने उन्हें उलाहना नहीं दिया था। उलाहना देनेकी धृष्टता भी नहीं कर सकता था उस समय। वैसे मैं उनसे परिहास कर लेता हूँ; किंतु उस दिन वातावरण इतना गंभीर बन गया था, मैं इतना अभिभूत था कि परिहास या व्यङ्गकी कल्पना भी मनका स्पर्श नहीं करती। मैं सोचने लगा था और उस चिन्तनमें ये शब्द अपने-आप ही मुखसे निकल गये थे।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'आश्चर्यकी क्या बात है'। बिना संकुचित हुए वे स्थिर स्वरमें बोले—'यह संसार ही अज्ञान-चालित है। ज्ञान संसारका निवर्तक है, प्रवर्तक तो है नहीं। रघुनाथजीकी लीला ही ऐसी है।'

'यह दौड़-धूप, यह व्यग्रता-व्यस्तता, यह अशान्तिपूर्ण संघर्ष—सब मूर्खता है!' मैं अपने चित्तमें सोचने लगा था—'सचमुच यदि हम सोचने लगें कि इसका क्या उपयोग? इससे क्या लाभ या क्या हानि? हमारे उद्योगोंमें, हमारे क्षोभोमें भी कितने सार्थक निकलेंगे?'

'जीवका स्वार्थ बिना सोचे-समझे श्रम करते रहनेमें तो नहीं है?' वे कहने लगे—'पदार्थोंकी राशि वह एकत्र भी कर ले, सबका कोई वास्तविक उपयोग है उसके लिए? उसे सोचना तो चाहिए ही कि उसका सचमुच स्वार्थ किसमें है।'

'तो आप इस अर्थमें स्वार्थी हैं!' मैं हँस पड़ा और वे संकुचित हो गये; किंतु बात तो उनकी ही सच्ची है। सच्चा स्वार्थ तो परमात्मामें ठीक-ठीक लग जानेमें ही जीवका है और यह स्वार्थ उन्होंने साधा है। अपने पुत्रको वे मूर्ख कहें, यह अधिकार है उन्हें।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निरभिमानता

एक तो अमेरिकन और दूसरे गेरुआ कपड़े, हमारा आकर्षण सहज उनकी ओर हो गया। अब भी वे बहुत टूटी-फूटी हिंदी बोल सकते थे। हमारे 'नमो नारायण' का उत्तर जिस प्रकार हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर उन्होंने दिया था, उससे हमें और भी आश्चर्य हुआ था। कदाचित् यह विशेषता उनके विदेशी होनेकी थी; क्योंकि नम्रता वैष्णव साधुओंमें तो मिलती है, किन्तु किसी संन्यासोमें अपरिचितोंके प्रति नम्रता !

'हम आपका परिचय जानना चाहते हैं ?' राम-मनोहरने पूछा।

'इस मिट्टीकी मूर्तिका क्या परिचय ?' बातचीत उनकी सुविधाके लिये अंग्रेजीमें ही चल रही थी। 'मैं अमेरिकासे यहाँ आया—इस पवित्र भारतभूमिमें जहाँ शताब्दियों पूर्व अनुभव कर लिया गया था कि मनुष्यका सबसे बड़ा दोष अहङ्कार है और उससे छुटकारा पाये बिना मनुष्यकी मनुष्यता पूर्ण नहीं होगी।'

'आप क्या करते थे अमेरिकामें?' हम सब वृक्षके नीचे घासपर ही बैठ गये थे; क्योंकि हमें इस गोरे

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संन्यासीकी बातोंमें रुचि हो आयी थी और खड़े-खड़े कबतक बातचीत चलती ।

'मैं वहाँ एक सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध वैज्ञानिकका सहकारी था ।' उन्होंने संकोचपूर्वक कहा—'मैं प्रार्थना करूँगा कि आप मेरा या उन वैज्ञानिकका नाम जाननेका आग्रह न करें ।'

'आपको संकोच होता है तो हमें कोई आग्रह नहीं । संन्यासीसे पूर्वाश्रमका परिचय पूछना उचित भी नहीं है ।' राममनोहरने कहा—'हम तो केवल उतनी बातें जानना चाहते हैं, जिनसे सम्भव है, हमें भी कुछ प्रेरणा मिले ।'

'मुझसे आपको प्रेरणा मिलेगी ?' वे और संकुचित हो गये—'भारतीयके रक्तमें आध्यात्मिकता सम्मिलित है । यहाँकी मिट्टीमें आध्यात्मिक भवनाओंका अपार स्रोत है और जिसने गङ्गाका जल पिया है, उसे दूसरा कोई क्या प्रेरणा देगा ।'

'आपकी श्रद्धा स्पृहा करने योग्य है ।' वे विदेशी हैं, अतः उनके वर्तमान वेशको देखते यह श्रद्धा स्वभाविक है ; किंतु हमें तो उनके संन्यासके कारण जाननेकी उत्कण्ठा थी, जो इस श्रद्धाका प्रेरक है । अतः राममनोहर-ने पूछा—'आपने अपना शोधकार्य क्यों छोड़ दिया ? यह वेश लेनेका विचार मनमें कैसे आया ?'

'अपने अहङ्कारकी चट्टानसे टकरा गया मैं । हमने समझा था कि किसी अमेरिका-प्रवासी भारतीय

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संन्यासीके प्रवचन अथवा अमेरिकामें वेदान्त प्रचार करनेवाली किसी भारतीयद्वारा स्थापित संस्थाके सम्पर्कका उनपर प्रभाव पड़ा होगा ; किंतु हमारी सम्भावनाके सर्वथा विपरीत उत्तर मिला—'मैं अपने गर्वमें जिनका सहायक था, उन सम्मान्यका तिरस्कार कर बैठा एक दिन।'

'भोले बच्चे ! केवल इतना कहा उन्होंने और मुस्करा उठे थे ; किंतु···' अब उनका कण्ठ भर आया था और नेत्र टपकने लगे थे। बड़ी कठिनाईसे हमें पता लगा कि उन्होंने उत्साहातिरेकमें उन सम्मान्य वैज्ञानिकको किसी नवीन प्रयोगका प्रतिपादन करते समय कह दिया था—'बुड्ढोंकी बुद्धि भी घिस जाती है।'

'मैं कितना सम्मान करता हूँ उनका, आप नहीं जानते।' आज भी पश्चात्तापमें वे व्याकुल हो रहे थे।

× × ×

यह अहङ्कार क्या है ? मैं प्रयोगशालामें रुक नहीं सका था। घर आकर अपने पढ़नेके कमरेमें कुर्सीपर गिर पड़ा।' उन्होंने अपने चिन्तनकी शैली समझायी।

इस मनुष्य-शरीरमें अरबों कीटाणु हैं। प्रत्येकके कार्य पृथक् हैं। अपने-आपमें उनमेंसे प्रत्येक एक स्वतन्त्र इकाई है। उनका पृथक्-पृथक् 'मैं' है। उन सबको यदि छोड़ दें तो उनसे पृथक् न मन बचता, न बुद्धि बचती और न अहङ्कार बचता। उन असंख्य

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कीटाणुओंके विशेष प्रकारके संधीभावका नाम ही यह शरीर है और इसके भीतर 'अहं' करनेवाला भी है।

सिरकी ग्रन्थिविशेषसे यदि एक तोला रस निकाल दिया जाय, संसारके बड़े-से-बड़े विद्वान्‌की सब विद्या विस्मृत हो जायगी। मस्तिष्ककी स्नायुविशेषपर एक चोट पड़ जाय—बुद्धिका पता भी नहीं रह जायगा।

हमने भी ये बातें पढ़ी हैं यदा-कदा। वे वैज्ञानिक हैं, अतः इनके विषयमें वे अधिक जानते हैं, उनका चित्त विज्ञानकी इस भाषामें सोचनेका अभ्यस्त है।

'कीटाणु–तुच्छ कीटाणुओंसे भिन्न कोई नहीं पूरे देहको 'अहं' कहनेवाला। वे ठीक कह रहे थे या नहीं, इस बातका मुझे पता नहीं है। मैं कहाँ वैज्ञानिक हूँ—'कीटाणुओंका यह समूह और उसमें अपनी बुद्धिका इतना उन्माद!'

किंतु अहङ्कार तथ्यकी अपेक्षा करता कहाँ है। बुद्धि और विद्याके गर्वकी बात छोड़ भी दें तो शरीरके बलका, धनका, यशका, समर्थकोंकी बहुलताका गर्व क्या कम होता है? जब कि तथ्य यह है कि शरीरमें केवल मल बल बना बैठा है। एक अच्छे बलवान्‌को तनिक कड़ा जुलाब देकर देख लीजिये। धन, यश, समर्थक—ये तो शरीरके अंश भी नहीं हैं। इन्हें नष्ट होते या रुख बदलते दो क्षण लगता है; किंतु इनका अभिमान—अभिमान अन्धा जो होता है। वह तथ्य देख भी कैसे सकता है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'मैं साहस नहीं कर सका दुबारा उन सम्मान्यके सम्मुख जानेका।' उन्होंने कहा—'लज्जा और ग्लानिके कारण किसीके सम्मुख जानेका साहस मुझमें नहीं रहा था।'

वे अतिशय भावुक हैं, यह बात आप कह सकते हैं। किंतु भावुकता दुर्गुण नहीं है। इस भावुकताने ही उनके हृदयको उद्बुद्ध किया। भावुकताने ही उन्हें अपने छोटेसे दोषके प्रति भी सावधान किया।

'जहाँ रोगको ठीक रोग समझा गया है, उसकी चिकित्सा पानेकी आशा वहीं की जा सकती है।' उन्होंने बताया—'भौतिकताको लक्ष्य माननेवाले देशोंमें तो अभिमान कोई बुराई नहीं माना जाता। वहाँ तो उसे पोषण दिया जा रहा है। उसे प्रोत्साहन देना हमारी सभ्यताका मुख्य अङ्ग है।'

भारत आनेका निर्णय इसी आधारपर उन्होंने किया था। कुछ थोड़ा समय लगा यात्राकी तैयारी करनेमें। कुछ अध्ययन भी आवश्यक था उस देशका, जहाँ जाना था। वे केवल महीने-पंद्रह दिनमें लौट जानेवाले भ्रमण-शील यात्री तो नहीं थे।

× × ×

'मेरे चमड़ेका रंग मेरे लिए एक बाधा है।' उन्होंने ठीक कहा था। उनकी ओर यहाँके लोगोंका आकर्षण शीघ्र होगा, यह स्वभाविक है। 'अतः मैं कहीं दूर पर्वतीय प्रदेशमें जाकर रहना चाहता हूँ।'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'अभिमान यहाँके लोगोंमें भी कम कहाँ है ?' राम-मनोहरने कहा।

'यह तो मनुष्यकी सामान्य दुर्बलता है। इसमें देश-विशेषका नाम लेना व्यर्थ होगा।' उन्होंने कहा—'किंतु इस महान् देशमें बहुत पहले यह अनुभव कर लिया गया कि यह एक भयङ्कर दुर्बलता है। अतः यहाँ ढूँढ़नेपर उसकी चिकित्सा मिल जाती है।'

'आपको मिल गयी ?' राममोनहरने पूछ ही लिया।

'आपको नहीं मिली है, यह कहना चाहते हैं ?' उन्होंने इस बार दृष्टि उठायी। अबतक वे सिर झुकाये भूमिकी ओर देखते हुए ही बातें कर रहे थे—'प्रत्येक भारतीयको तो वह माताके दूधके साथ मिल जाती है। यह दूसरी बात कि वह उसका उपयोग कब करेगा। कभी करेगा भी या नहीं।'

'आपकी बात मैं समझ नहीं सका।' केवल राम-मनोहर न समझा हो और हम सब समझ गये हों, ऐसी बात नहीं थी।

'शरीर नश्वर है। मिट्टीका पुतला है। इसका मोह करना झूठा है। इसपर अभिमान करना अज्ञान है।' उन्होंने कहा—'भारतीय बच्चेको माताकी गोदमें ही यह सिखा दिया जाता है। आपके देशका अपठित ग्रामीण भी यह जानता है। जैसा शरीर, वैसी बुद्धि, विद्या, धन, यश, आदि।'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बात उनकी ठीक थी । भारतका प्रायः प्रत्येक जन इन बातोंको सुनता है और कहता भी है ; किंतु कितने लोग हैं जो गम्भीरतासे इस तथ्य को सोचते समझते हैं ?

'विचारके अभावसे अभिमान उत्पन्न होता है ।' वे संन्यासकी दीक्षा ले चुके हैं । जो कोई भी उनके गुरु हों, अवश्य उन्होंने विवेकका महत्त्व उन्हें बताया होगा । संन्यास ज्ञानका मार्ग है । 'विवेकके प्रकाशमें अभिमानको पैर रखनेके लिए भूमि ही कहीं नहीं हैं ।'

एक वैज्ञानिकके लिए विवेकका मार्ग उपयुक्त ही था । वह स्वभावसे तर्कशील, प्रयोगके द्वारा प्रत्यक्ष करके आस्था करनेवाला, उसके लिए दार्शनिक बनना उपासक बननेकी अपेक्षा कहीं सरल है ।

'विवेक ही एकमात्र ओषधि है अभिमानकी ।' उस गोरे अमेरिकन संन्यासीने चलते-चलते कहा था ।

'एकमात्र ओषधि, मुझे उसकी बात ठीक लगती है । अपनी क्षुद्रता एवं भगवान्‌की महत्ताका विवेक हो या देह, इन्द्रियाँ, भोग आदिकी सारहीनता अथवा संसारके मिथ्यात्वका विवेक—अभिमानको तो विवेक ही दूर करेगा ।

अभिमान—एक अन्धभावना ही तो । विचार दृढ़ हो तो यह अन्धकार दूर हो जाय ।



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई

'तू बनाकर भी व्यर्थ करता है। अपने ही निर्माणको कुचल देनेमें तुझे आनन्द आता है?' वह कभी फूट-फूटकर रोता है और कभी 'हा, हा' करके हँसता है। कोई नहीं जानता कि वह कौन है। पता नहीं कैसे वह यहाँ आया। गाँवके लोग जब एक सबेरे सोकर उठे, उन्होंने देखा कि उनके गाँवकी गलियोंमें कहींसे एक नया व्यक्ति आ गया है। गौर वर्ण, लम्बी आँखें, ऊँची-नुकीली नासिका, उन्नत ललाट, इकहरा शरीर—सम्भवत: किसी उच्चकुलका है, सम्भवत: सुपठित है। सम्भवत: इसलिए कि केवल अनुमान ही किया जा सकता है। उसके वस्त्र फटे और मैले होकर भी बताते हैं, वे कभी स्वच्छ थे, सुन्दर थे, मूल्यवान् थे। उसके केश उलझे होकर भी कहते हैं, वे कभी सुलझे और सुसज्जित थे, सुगन्धित तैलसे सिंचित होते थे। उसकी भावभङ्गिमा, उसकी चाल-ढाल, उसकी दृष्टि कहती है, वह कभी सम्मान पाता था, सत्कृत होता था। लेकिन वह कुछ बोलता नहीं किसीसे। कुछ पूछनेपर प्रश्न-कर्ताके मुखकी ओर घूरने लगता है और फिर या तो ठहाका मारकर हँसने

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लगता है, या फूट-फूटकर रोने लगता है। बेचारा पागल है।

गाँवके दयालु लोग—वे लोग उसे स्नेहपूर्वक रूखी-सूखी रोटियाँ खिला देते हैं। उसे यदा-कदा एकाध वस्त्र मिल जाते हैं। जाड़ेके दिन हैं। रात्रिमें वह किसी-न-किसी अलावके पास ढुलक पड़ता है।

बड़ा रमणीक गाँव है। नहरका पानी सींचता है यहाँके खेतोंको और खेतोंमें गेहूँ-चना नहीं होता। यहाँके खेत तो खेत नहीं, बगीचे हैं। जहाँतक दृष्टि जाय पाटलके पौधे लहरा रहे हैं। गुलाबकी खेती होती है यहाँ! इत्र बननेके लिए यहाँसे गुलाबके फूल अन्यत्र जाते हैं। जब पुष्पका समय होता है—मीलोंतक खिले पाटल-पुष्पोंसे मण्डित धरित्रीकी शोभा—जो यहाँ आया नहीं, वह यहाँके उस सौन्दर्यका अनुमान तक नहीं कर सकता।

मोगरा, चमेली और दूसरे पुष्पोंके भी पौधे जहाँ-तहाँ हैं। जल ही जगत्का जीवन है। जहाँ जलकी पर्याप्त सुविधा है, जीवन अपने अनेक रूपोंमें प्रस्फुटित, पल्लवित, प्रफुल्लित होगा ही। छोटे-छोटे उपवन हैं। सघन तरु हैं; किंतु यह सब तो विनोद है, विलास है उस भूमिका, वहाँके निवासियोंका। वहाँका जीवन तो है पाटल और उसका साम्राज्य है वहाँ।

जाड़ेके दिन, कठोर शीत, सम्पूर्ण प्रकृति ही तो इस शिशिरमें ठिठुर जाती है। गुलाबके पौधोंमें कलियाँ तो

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आजकल भी आती हैं; किंतु इस मीलों लंबी-चौड़ी हरीतिमामें अपनी सुरभि प्रसारित कर सके, अपने सौन्दर्यसे लोक-लोचनोंको आह्लाद-दान दे पाये, अपने परागमें भ्रमरोंकी मूँछें पीताभ बनाकर मुसकरा सके—कदाचित् किसी एकाध कलिकाको ही यह सौभाग्य मिलता है। कोई ही कलिका पुष्प बन पाती है। कठोर शीत—बेचारी कलियोंका बाहरी पर्दा झुलस जाता है। उसकी पाटलद्युति कालिमासे कलुष हो जाती है। जैसे शीतके भयसे कलिका सिकुड़ी-ठिठुरी पड़ी रह जाती है और जब जीवन विकसित न हो पाये—सूख ही तो जायगा वह।

'देवता! तू देवता है न? इसे सार्थक कर दे तब।' उस पागलको एक ही सनक है, वह गुलाबकी सर्दीसे ठिठुरी-मुर्झायी ढेर-सी कलियाँ तोड़ लेता है और शङ्करजीकी पिण्डीपर चढ़ा आता है। तोड़ता है और चढ़ाता है, दिनमें कितनी बार? कोई संख्या नहीं। कोई क्रम नहीं। वह पागल जो ठहरा।

यह तो पाटलकी भूमि है। इस शिशिरमें भी प्रफुल्लित सौ-दो-सौ पुष्प यहाँ नहीं मिलेंगे, ऐसी तो कोई बात नहीं है। लेकिन वह पागल है न। उसकी दृष्टि जैसे पुष्पोंको देखती ही नहीं। वह तो कलियाँ तोड़ता है, चुन-चुनकर मुरझायी, सूखी-सी कलियाँ और फिर उन्हें देवतापर चढ़ा आता है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'अपने ही निर्माणको कुचल देनेमें तुझे आनन्द आता है ?' कभी-कभी वह किसी बड़ी-सी कलीको तोड़ लेता है। गुलाबी पँखुड़ियाँ शीतसे सूखकर पीताभ हो गयी होती हैं, कुछ कालिमा आ गयी होती है, कली अपने ही उस अवगुण्ठनमें दृढ़तासे आबद्ध हो गयी होती है और वह उसे इस प्रकार देखता है, जैसे कोई गूढ़ रहस्य ढूंढ़ता हो।

'सौन्दर्य, सौरभ, सौकुमार्यका यह निर्माण और फिर उसे आबद्ध करके व्यर्थ बना देना।' अनेक बार वह आकाशकी ओर बड़ी कठोर भङ्गीसे देखता है। अनेक बार अट्टहास करता है और अनेक बार फूट-फूटकर रोता है।

× × ×

बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं भगवतीप्रसादजीको अपने पुत्र जगदीशसे। जगदीश उनका एकमात्र पुत्र है। पिताका सम्पूर्ण स्नेह पाया है। सृष्टिकर्ताका भी उसे स्नेह मिला है। सुन्दर सुगठित देह है, जन्मजात प्रतिभा है और सम्पन्न घर मिला है। अनेक बार उसे देखकर उसके पिता मन-ही-मन कह उठते हैं—

'शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।'

ब्राह्मणका यह पवित्र कुल और भगवतीप्रसादजीको तो भगवान् शङ्करकी भक्ति पैतृक सम्पत्तिके रूपमें प्राप्त हुई है। जगदीश शैशवमें ही मातृहीन हो गया यह ठीक है,

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किंतु पिताने उसे कभी माताके अभावका अनुभव नहीं होने दिया। पुत्रका लालन-पालन और शिक्षा—एक अच्छे सम्पन्न जमींदारके एकमात्र पुत्रके उपयुक्त ही जगदीशको यह सब प्राप्त हुआ।

बचपनमें जब जगदीश भस्मका त्रिपुण्ड्र लगाकर भगवान् शङ्करको मस्तक झुकाता था, जल-पुष्पादि चढ़ाकर—उस गौर-सुन्दर शिशुकी शोभा देखने ही योग्य होती थी और अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करके, ग्रेजुएट होकर भी वह वैसा ही आस्तिक, वैसा ही सुशील, वैसा ही विनम्र है। वह दोनों समय संध्या करता है, बड़ी-सी चोटी रखता है, भस्मका त्रिपुण्ड्र लगाता है। जमींदारका पुत्र होकर, उच्च शिक्षा पाकर भी ग्रामके गँवार गंदे लोगोंसे हिलमिल जानेमें, उनसे दादा, चाचा कहकर बात करनेमें, उनकी सेवा-सहायता करनेमें उसे कभी हिचक नहीं होती।

गाँवके लोग भगवतीप्रसादजीको देवता कहते हैं। उनकी कोठी गाँवके पीड़ितोंका, रोगियोंका, आश्रय है। कोठीकी दरियाँ, बड़े बर्तन, गैस आदि सामग्री तो जैसे सार्वजनिक सामग्री है। किसीके यहाँ कथा-कीर्त्तन, ब्याह या दूसरा कोई उत्सव हो तो वह उन सामग्रियोंका बड़ी सरलतासे उपयोग करता है। लेकिन जगदीश भैया तो गाँवके लोगोंके आत्मीय हैं। अपने घरके हैं। वे कब किसके घर पहुँचकर बीमारकी खोज-खबर लेंगे। किसके दर्द करते मस्तकपर ओषधि मलेंगे, किसके रोते

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बालककी मुट्ठीमें पैसे धर देंगे—इसकी कहाँतक कोई गणना कर सकता है। वे तो दया, सहानुभूति, सेवा और ग्रात्मीयताकी मूर्ति ही हैं।

जगदीश प्रतिभाशाली है। शिक्षाके समय वह कक्षामें सदा प्रथम रहा है। परीक्षामें विश्वविद्यालयमें प्रथम रहा है। सरकारने उसे पुरस्कृत किया है। पिता नहीं चाहते कि वह शिक्षाके लिए विदेश जाय और विदेश जानेकी उसकी अपनी भी रुचि नहीं है। उसके घर कमी किस बातकी है कि वह नौकरी करेगा।

जगदीश महत्त्वाकांक्षी है। उसकी महत्त्वाकांक्षा उचित है। वह प्रतिभासम्पन्न है। कालेजके व्याख्यानोंमें वह सदा प्रशंसित होता रहा है। उसकी कविताएँ पत्र-पत्रिकाओंमें आदरपूर्वक छापी जाती हैं। वह यशस्वी होना चाहता है और कोई कारण नहीं कि उसे यश न मिले। बिहार-प्रान्तकी एक सुप्रसिद्ध पत्रिकाके संचालकोंने उसे आमन्त्रित किया है पत्रिकाका सम्पादन करनेके लिए। पिताने अनुमति दे दी है। वह जायेगा—परसों यात्रा करेगा। चला तो वह दस दिन पहले जाता; किंतु एक महाकाव्य लिखनेमें लगा था वह पिछले वर्षसे। उसके महाकाव्यके अनेक ग्रंश पत्रिकामें छप चुके हैं। जिसने भी उसे सुना है, भूरि-भूरि प्रशंसा की है। आज अपना महाकाव्य जगदीशने पूरा कर दिया है।

भगवताप्रसादजीको अपने पुत्रसे बहुत आशाएँ हैं। उनका पुत्रयशस्वी होगा। उनके कुलका गौरव बढ़ायेगा।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जगदीशको अपने महाकाव्यसे बहुत आशाएँ हैं। चार दिन बाद वह एक श्रेष्ठ पत्रिकाका सम्पादक होगा, उसका महाकाव्य छपेगा, उस महाकाव्यपर मङ्गलाप्रसाद परितोषिक मिलेगा। जगदीश हिंदी-संसारमें सबसे कम अवस्थाका सबसे अधिक प्रख्यात पुरुष होगा।

भगवतीप्रसादजीकी आशाएँ, ग्रामके लोगोंकी आशाएँ, जगदीशकी आशाएँ—स्रष्टाने सबको सुयोग दिया ; किंतु स्रष्टा सुयोग देकर सफल ही होने देगा, यह कहाँ निश्चित रहता है। बलिया सदासे बाढ़-पीड़ित क्षेत्र है और गङ्गाजीकी वह बाढ़—ऐसी भयङ्कर बाढ़की तो कोई कभी कल्पना ही नहीं कर सकता था। इस प्रकार अचानक बाढ़ आया करती है। कहते हैं—कहीं कोई पर्वत टूटकर गिर गया था। गङ्गाजीका या उनकी किसी सहायक धाराका—अब स्मरण नहीं, प्रवाह रुक गया था। जब धाराके वेगसे गिरे पर्वतका बाँध टूटा, किनारेके नगर एवं ग्रामोंमें प्रलय आ गयी।

कितने ग्राम बहे, कितने मनुष्य या पशु मरे, कितनी हानि हुई, यह कोई कैसे अनुमान करे। सरकारी कर्मचारी इधर-उधर दौड़-धूप कर रहे थे। जहाँ गाँव थे, समुद्रके समान वहाँ जल लहरा रहा था। उस प्रखर धारामें सर्वत्र एक बार घूम आना भी सरकारी नौकाओंके लिए शक्य नहीं था। जो गये, वे तो गये ही। जो बच गये थे, उनको बचाये रहने की चिन्ता कमों बड़ी नहीं थी। स्थान, अन्न, वस्त्र, ओषधि—सहस्र

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लोगोंके लिए दो-चार दिनोंमें इनका प्रबन्ध कर लेना क्या कुछ हँसी-खेल है।

भगवतीप्रसादजी, जगदीश, उनका ग्राम—सरकारी कागजोंमें यह लिख दिया गया है कि गङ्गाकी बाढ़ने उस किनारेके ग्रामको पूरा ही बहा दिया। अब तो वहाँ गङ्गाजीने अपना नवीन प्रवाह बना लिया है। क्या हुआ ग्रामका, ग्रामके लोगोंका, भगवतीप्रसादजीका, जगदीशका—कौन जानता है। उस बाढ़के प्रलय-प्रवाहमें व्यक्तियोंकी खोज क्या रह सकती थी?

× × ×

जगदीश उस बाढ़के प्रबल प्रवाहमें भी बच गया। प्रारब्ध प्रबल था, किसी झोपड़ीका बहता छप्पर हाथ आ गया था। बहुत दूर जाकर उसे मल्लाहोंने निकाल लिया। दुर्बलता, अनाहार, ज्वर, शोक—बेचारा जगदीश पागल हो गया। वह कहाँ-कहाँ किस प्रकार भटकता यहाँ पहुँचा है, यह उसे भी स्मरण नहीं है।

खूब बड़ा-सा सुन्दर सुरङ्ग पुष्प खिला था। इस शिशिरमें इतना बड़ा, इतना सुरङ्ग पुष्प—जगदीश कभी पुष्पोंकी ओर ध्यान नहीं देता, आज भी नहीं देता; किंतु इस लम्बे-चौड़े खेतमें वह एकाकी पुष्प और इतना बड़ा। गाँवमें आजकल नगरसे एक युवक आया है। लंबे, घुंघराले बालोंमें सुगन्धित तेल लगाये वह प्रायः घूमता रहता है। उसका वेश, उसके वस्त्र, उसकी चाल—कोई

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कवि होगा। पता नहीं क्यों पागल जगदीश जब उसे देखता है—घूरघूरकर देखता ही रहता है और फिर ठठाकर हँसता है। वह युवक भी घूमने आया है। वह उस पुष्पके पास खड़ा है, बड़े स्नेहसे पुष्पको देख रहा है। बहुत सम्भव है कि उसका पुष्पको इस प्रकार देखना ही जगदीशकी दृष्टि पुष्पकी ओर खींच सका हो।

जगदीश उस युवकको देखता है और पुष्पको देखता है। वह आज कलियाँ तोड़ना भूल गया है। युवक पुष्पको देख रहा है। इधर खड़े होकर, कुछ गुनगुनाकर वह पुष्पको देख रहा है। कितना सौन्दर्य-प्रेमी है यह। कितना स्नेह है इसका पुष्पसे। पागल जगदीश उसे चुपचाप देख रहा है।

युवकने अपनी सुकोमल पतली अँगुलीसे फूलकी टहनी हिला दी। पुष्प झूम उठा। युवक देखता रहा। अब उसने पुष्पकी पंखड़ियाँ धीरेसे स्पर्श कीं। दो क्षण और—और—और युवकने पुष्पको तोड़ लिया। तोड़कर नेत्रोंसे लगाया, कपोलोंपर फिराया और पुष्पको लिये चल पड़ा। चल पड़ा उसके पीछे-पीछे पागल जगदीश भी।

युवकने पुष्पको अपने कोटके जेबमें रक्खा, फिर निकाला, फिर रक्खा, बार-बार सूँघा, बार-बार घुमाया और यह क्या? वह पुष्पकी एक-एक पँखड़ी नोचता भूमिमें गिराता चला जा रहा है। अपने गुनगुनानेमें मस्त चला जा रहा है। पुष्पके प्रति उसका कुछ स्नेह भी था,

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह जैसे उसे स्मरण भी नहीं। पागल जगदीश चीख पड़ा और भागा-भागा वह उलटे पैर और सीधे उस शङ्करजीकी पिण्डीके पास पहुँचा, जहाँ उसने आज सबेरेसे अञ्जलि भर-भरकर मुर्झायी कलियाँ चढ़ायी हैं।

'देवता! तू देवता है। तू ठीक करता है। ये कलियाँ धन्य हैं। ये सफल हैं। ये पुष्प बनतीं तो इन्हें भी कोई तोड़कर बिखेर देता। इनकी पँखड़ियाँ भी कोई पैरोंसे कुचल देता।' पागल जगदीशके नेत्रोंसे आँसूकी धाराएँ गिर रही हैं। वह अपने अश्रुसे भगवान् शङ्करका अभिषेक कर रहा है। 'जगत्का प्यार जिसपर प्रलुब्ध होता है, उसे कुचल देता है, नष्ट कर देता है। जगत् कृतघ्न है। वह जिसे चाहता है, उसे चूस लेता है।'

जगदीश एक-एक कलीको उठाता था, सिरसे लगाता था और फिर भगवान् शङ्करकी मूर्तिपर चढ़ा देता था। वह पागल है, उसके जो मनमें आती है, करता है। वह कहता जा रहा है—'लेकिन देवता! तब तू सौन्दर्य सौरभ सौकुमार्य देता क्यों है? अपने आपमें वह आबद्ध होकर कुचल उठे—उसमें घुटता रहे, ऐसा तू क्यों करता है?'

'इसलिए कि मैं अन्तरमें हूँ। अन्तरमें स्थित मुझे ही अर्पित होकर जीवन सार्थक होता है, अनन्त होता है, धन्य होता है।' जब कोई भी एकान्तनिष्ठासे विश्वके अधिदेवताको सम्बोधित करता है, वह पागल है या सचेत, इसका प्रश्न नहीं रह जाता, वह चिद्घन उसे

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपने चैतन्यके अनन्त प्रवाहसे निश्चय ही आप्लुत कर देता है। उसे—उस सर्वव्यापीको कोई हृदयकी वाणीसे सम्बोधित करे और उत्तर न मिले, यह तो कभी हुआ नहीं, हा सकता भी नहीं। जगदीशका अन्तर्यामी आज उसके लिए जाग गया है। वैसे तो वह नित्य जागरूक है। लेकिन आज वह जगदीशको उत्तर देने लगा है।

'जो अपनी प्रतिभा, अपने सद्गुण, अपने ऐश्वर्यसे जगत्को तुष्ट करना चाहता है, वह बहिर्मुख होता है। जगत्से उसे दो क्षणका स्नेह, कृत्रिम-सुयश एवं सौहार्द मिलता है और वह नष्ट हो जाता है। जगत् उसे चूस लेता है, नष्ट कर देता है।' जगदीश आज अपने अन्तर्यामीकी दिव्य वाणी सुन रहा है 'मैं जिसपर कृपा करता हूँ, उसे अन्तर्मख बनाता हूँ। उसे जगत्के प्रलुब्ध नेत्रोंसे बचाता हूँ। उसका सौरभ, उसके सद्गुण, उसके भाव अपने अन्तरमें स्थित मुझे समर्पित होते हैं। वह आनन्दमय हो जाता है। वह शाश्वत जीवनकी गोदमें अनन्त क्रीडा करता है।'

'राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई।' पागल जगदीश—लेकिन उसका नाम यहाँ कोई नहीं जानता। यहाँ तो वह केवल पागल कहा जाता है। अब वह रोते नहीं देखा जाता। वह रामायणकी एक अर्धालीका आधा गुनगुनाया करता है और प्रायः हँसता रहता है। खूब खुलकर हँसता है वह।

'तुम क्या गाते हो ?' कोई भी उस पागलसे चाहे जब पूछ ले, उसका एक ही उत्तर है—'अरे रोना धोना

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मत ! घबराना भी मत ! राम जो करते हैं बड़ा अच्छा करते हैं। वे हम सबका सदा मङ्गल हो करते हैं, भला !'

गाँवके बाहर जो हनुमान्‌जीका मन्दिर है, उसपर एक संत आये थे। रमते राम सन्त आये और गये। उनका क्या कोई नाम, ग्राम जान पाता है ? लेकिन वे कह गये—'यह पागल नहीं है। यह तो बहुत उच्च स्थितिका संत है।' गाँवके भोले लोग—वे अब पागल जगदीशकी यथासम्भव सेवा करते हैं। उसे महात्मा मानते हैं। वह महात्मा है ? लेकिन वह महात्मा न हो तो महात्मा होगा कौन ? एक युवक जो सम्पादक बनने जा रहा था, कवि बन चुका था—संत हो गया। बनानेवालेके हाथ समर्थ हैं, वह किसे कब क्या बना देगा·····।



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः

'मुझे खेद है कि मैं आपका मुकद्दमा नहीं ले सकता !' बडी शान्तिसे एडवोकेट मिश्रने कहा और सामने मेजपर रक्खी फाइलको रखनेवालेकी ओर खिसका दिया ।

'आप एक बार कागज देख लें !' अनुनय की गयी और साथ ही जेबसे नोट निकाले गये—'आपकी फीस मैं अभी दे दूँगा । मुझे आपपर विश्वास है, इसलिए मैं सीधा आपके पास आया और आप मेरे पुराने वकील हैं ।

'आपकी बात ठीक है । मैं आपको पत्र दे देता हूँ । आप ठक्करके यहाँ चले जाइये । वे अच्छे वकील हैं और मेरे मित्र हैं । आपसे उचित पारिश्रमिक ही लेंगे ।' मिश्रजीने कलम उठायी – 'आप जानते ही हैं कि मैं अपनी आवश्यकता पूरी हो, महीनेमें उतने ही मुकद्दमे लेता हूँ । इस महीनेके पहिले सप्ताहमें ही वह पूरी हो गयी ।'

अद्‌भुत व्यक्ति हैं ये मिश्रजी भी । संसारमें सभी प्रकारके मनुष्य हैं । उन्हींमें इनकी भी एक अलग खोपड़ी

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है। नही तो, कोई वकील घर आयी फीस लौटाता है ? किंतु मिश्र हैं कि एक सीमा अपने उपार्जनकी इन्होंने बना ली है। उतना मिल गया तो फिर उस महीने नया मुकद्दमा हाथमें नहीं लेंगे। पुरानोंमें भी चाहेंगे कि कम दौड़-धूप करनी पड़े। वैसे भी झूठे पक्षका समर्थन करने खड़े नहीं होंगे। चलते मुकद्दमेको कई बार बीचमें छोड़ दिया ; क्योंकि पता लगा कि उन्हें जो कुछ बताया गया, वह ठीक नहीं था।

मिश्र प्रतिभाशाली हैं और सचाईका पक्ष लेते हैं। फीस अनेक बार नहीं भी लेते, यदि व्यक्ति अधिक संकटमें हुआ और धनहीन हुआ। फलतः न्यायालयमें उनका सम्मान है। न्यायाधीश उनकी बातको महत्त्व देते हैं। लोग उत्सुक रहते हैं कि मिश्रजी उनका मुकद्दमा देखें।

'आप न्यायालय प्रतिदिन आते ही हैं। बिना फीसवाले मुकद्दमे भी देखते हैं। फिर रुपये क्या काटते हैं आपको ? जो आपको ही मुकद्दमा देना चाहते हैं, उन्हें आप क्यों निराश करते हैं, जब कि आपके पास समय होता है।' उस दिन शामको ठक्करने ही पूछा था। मिश्रजीके वे मित्र हैं और मिश्रजी प्रायः उनके पास मुकद्दमे भेज दिया करते हैं।

'न्यायालय तो मैं जाता हूँ सीखने !' मिश्रजीकी यह बात आपको स्वीकार करनी होगी। 'वकीलके लिए आवश्यक है कि वह अध्ययन करता रहे तथा जटिल

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुकद्दमोंकी रवी-बहस देखता रहे। पेटके लिए तो परिश्रम ही करना पड़ता है। जो असमर्थ हैं, उनकीं थोड़ी सहायता अवकाशके क्षणोंमें कर देना कोई बुराई तो है नहीं। किंतु मैं मानता हूँ कि आवश्यकतासे अधिक धनोपार्जन सचमुच काट लेता है।'

'धन काट लेता है?' ठक्कर गम्भीर हो गये—'यह आपकी बात समझमें नहीं आयी।'

रुपये भी किसीको काटते होंगे, मिश्रजीकी यह बात आपकी समझमें आती है क्या? मैं इसीसे उन्हें अद्भुत खोपड़ी कहता हूँ।

'वे शरीरको कुत्तेकी भाँति या चाकूके समान तो नहीं काटते; किंतु'—मिश्रजी गम्भीर ही बने रहे—'वे स्वास्थ्य, आचरण, समय, संयम अथवा नम्रताको अवश्य काट लेते हैं और मैं इनकी क्षति शारीरिक क्षतिसे अधिक मानता हूँ।'

'अब आप पहेली मत समझाइये।' ठक्कर ने हँसते हुए कहा। लेकिन बात समझने योग्य है, यह उन्हें प्रतीत हो गया था। इसलिए अपनी कुर्सीपर अधिक स्थिर होकर बैठ गये।

'उपयोगसे अधिक धन होगा तो उपभोग अधिक करनेकी सूझेगी।' मिश्रजीने बताया—'विलासिता बढ़ेगी। आलस्य बढ़ेगा। कहीं मन सावधान न रहा तो संयम, सदाचारपर विपत्ति आयेगी। यह न भी हो तो भी

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रमादमें समय जायगा और भोगमें रोग तो रक्खे ही रहते हैं।'

'कुछ संतानके लिए संग्रह करो और शेष लोकोपकारमें लगा दो। दान भी तो धर्म ही है।' ठक्करने साधारण स्वरमें ही कहा; क्योंकि मिश्रजीने यह बात सोची ही नहीं होगी, यह आशा कोई कैसे कर सकता है?

'संतानें अपना प्रारब्ध लेकर आती हैं और उन्हें वह अपना प्रारब्ध भोगना ही पड़ता है। पैतृक सम्पत्ति पाकर कितने युवक सुपथपर रह पाते हैं यह आप जानते हैं।' मिश्रजीने कहा—'समर्थ होने तक मैं संततिका पालन-रक्षण और शिक्षण कर्तव्य मानता हूँ; किंतु उनके लिए धन-संचय मोहके अतिरिक्त और कुछ नहीं है।'

'लोकोपकार– दान?' ठक्करने जिज्ञासा की।

'अधर्मसे धर्म नहीं होता और लोभ अधर्म है।' मिश्रजी कह रहे थे—'जितना उपलब्ध है, उसीकी सीमामें धर्म करना तो मनुष्यका कर्तव्य है; किंतु अधिक संग्रह करके दान—लोकोपकार केवल अभिमान है। यशेच्छा अथवा अहंकारकी यह प्रेरणा है। अन्यथा लोकोंका जिन्होंने निर्माण किया, उन विश्वम्भरके रहते मनुष्य क्या लोकोपकार करेगा? उन सर्वेश्वरको किसीकी दया अथवा सहायताकी क्या अपेक्षा है?'

× × ×

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'भाई ठक्कर ! सुना कि तुम्हारे यहाँ चोरी हो गयी रातको !' मिश्रजीने न्यायालयके पुस्तकालयमें ठक्करके समीप बैठते हुए पूछा—'मैं यदि कुछ सहायता कर सकूँ, संकोच मत करो सूचित करनेमें।'

'कोई बड़ी हानि नहीं हुई है'—ठक्करने हँसकर परिस्थितिके क्लेशदायक वातावरणको हल्का किया—'किंतु सुनते हैं कि ईमानदारीकी कमाई नष्ट नहीं होती और मैंने कोई बेईमानी की हो, स्मरण नहीं आता।'

'सो तो मैं स्मरण दिला सकता हूँ।' मिश्रजी भी मुस्कराये—'हमारे उपार्जनमें धर्मका भी भाग है और उसे तुम पूरा न सही, बहुत कुछ पचा लेते हो।'

'बात चल ही पड़ी है तो आज अपने व्ययका आदर्श तो बता दो।' ठक्करने पूछा—'सम्भव है, वह मेरे भी कुछ काम आ जाये।'

'सबके लिए कोई सामान्य आदर्श बना देना कठिन है। अपनी परिस्थितिके अनुसार सबको अपना बजट बनाना पड़ता है; किंतु आयकर देकर जो बचे उसका दस प्रतिशत धर्मका है, यह मैं मानता हूँ। उसे दान कर देना चाहिए।' मिश्रजीने बताया।

'उससे तीर्थाटन, यज्ञ, श्राद्धादि कर दिया जा सकता है ?' ठक्करने स्पष्टीकरण चाहा।

'तीर्थाटन, यज्ञ, श्राद्ध आदि कर्तव्य हैं अथवा पारलौकिक उपार्जन !' मिश्रजीने कहा—'वे अपने भागसे

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सम्पन्न होने चाहिए। धर्मके सत्त्वको तो परोकारमें ही लगाना ठीक है।'

'अपना पूरा बजट तो बताओ!' ठक्कर और मिश्रजी में इतनी आत्मीयता है कि वे एक दूसरेको 'आप' सम्बोधित करना आवश्यक नहीं मानते।

'४० प्रतिशत भोजन व्यय, ५ प्रतिशत वस्त्रोंके लिए और ५ प्रतिशत स्वच्छताके लिए।' मिश्रजीने अपना बजट सुनाया—'१० प्रतिशत सेवकको, स्वयंकी शिक्षा तथा मनोरंजनपर ५ प्रतिशत, इतना ही पत्नीको निजी प्रसाधनादिके लिए तथा इतना ही चिकित्साके लिए, बच्चोंकी शिक्षापर साढ़े सात प्रतिशत, ढाई प्रतिशत उनको मनोरंजनार्थ। शेष ५ प्रतिशत आकस्मिक विपत्तिमें काम आनेको सुरक्षित करता जाता हूँ। इसीमें-से जो बच रहेंगे, उसे संतानोंके लिए छोड़ जाना मैं पर्याप्त मानता हूँ।'

× × ×

धनकी तीन गति है—दान, भोग और नाश। ठक्कर फिर सायंकाल मिश्रजीके समीप आ बैठे थे। दोपहरमें वे न्यायालयके पुस्तकालयसे उठ गये थे एक मुकद्दमा देखने; किंतु उसी समय शामको मिश्रजीसे मिलनेका कार्यक्रम बन गया था। अब आते ही उन्होंने वही चर्चा उठायी—'नाश किसीको पसंद नहीं; किंतु लोभवश संग्रह सभी करते हैं। यह लोभ ही नाशको निमन्त्रित करता है, इतना मैं जानता हूँ।'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

'भोग या तो धर्मानुकूल होगा अथवा अधर्म। और अधर्म हुआ तो वह महानाश है। लोकमें धन, स्वास्थ्य, कीर्तिका नाश और परलोककी बात आप जानते ही हैं।' मिश्रजीने कहा—'अतः धनके भोगका अर्थ है—**धर्मसम्मत भोग। सीमित आवश्यक जीवन निर्वाह**—इसे आप मान लेंगे।'

'मान लेना ही चाहिए मुझे।' ठक्करने पर्याप्त गम्भीर होकर कहा—'और तब दानके अतिरिक्त उपार्जनकी मेरी अपनी सनकका उपयोग नहीं है।'

'हिंदूके लिए जो दिनचर्या आह्निक सूत्रोंने दी है, उसमें दिन-रातमें केवल एक प्रहर उपार्जनके लिए रक्खा गया है। आजके वातावरणमें—वर्तमान सामाजिक स्थितमें यह शक्य नहीं है; किंतु उपार्जनकी सनकका उपयोग कुछ नहीं है। वह केवल लोभ है।' मिश्रजीने बात पूरी की।

ठक्कर बोले नहीं। दानके सम्बन्धमें उनके मनमें निष्ठा है। अपनी आयका अधिकांश वे सामाजिक कार्योंमें व्यय कर देते हैं। कलियुगमें धर्मका एक ही चरण तो बचा है—दान। उनके मनपर दृढ़ संस्कार है—'येन-केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्यान।'

'दान यदि अहंकारका पोषण न करे, उसमें यशेच्छा न हो और मैं दाता, दूसरे गृहीता दरिद्र—मैं दयालु, दूसरे दयाके पात्र—यह भावना न आवे, तो दान परम धर्म है।' मिश्रजी नहीं चाहते ठक्करको हताश करना।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
'लेकिन 'त्यागपूर्वक भोग' ऋषियोंने आदर्श माना है। उपार्जनका उद्देश्य भोग है और **भोग तब पवित्र होता है, जब उपार्जन पवित्र हो तथा उसका आवश्यक अंश त्याग-दानमें लग चुका हो। भोग भी त्यागके लिए—संयमके लिए** हो। त्यागके लिए उपार्जनकी बात तो तब बने, जब कर्तृत्वका अहकार अभीष्ट न हो। लोक परमात्माका। हमारे किये लोकोपकार होता कहाँ है। हम जो त्याग-दान करते हैं, अपनी शुद्धिके लिए। प्रभुकी कृपा कि हमें वे ऐसा अवसर देते हैं।'

'अहंकार न आवे यह प्रयत्न करता हूँ।' ठक्करने शान्त भावसे कहा।

'सो मैं जानता हूँ।' मिश्रजी बोले—'धनमें गौरवबुद्धि है, उपार्जनमें महत्ता लगती है और उसके बिना अपनेमें हीनत्वकी भावना आती है, तबतक आपका ही मार्ग ठीक है। जो आवे उसे सेवामें लगा दिया जाय। धर्म पुष्ट होता रहेगा तो चित्तशुद्धि होगी।'

'और चित्त-शुद्धि होगी तो ?' ठक्करको लगा कि बात यहीं समाप्त हुई तो वह अपूर्ण रह जायगी।

'परम पुरुषार्थ धर्म नहीं है, मोक्ष है और वह निवृत्ति-साध्य है।' लगभग सूत्र सुना दिया मिश्रजीने—'इसीलिए त्यागपूर्वक भोग—**त्यागके लिए भी प्रवृत्ति इष्ट नहीं है मन्त्र-द्रष्टा ऋषिको।'**

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परम योग

'परो हि योगो मनसः समाधिः ।'

—भागवत ११.२३.४६

हिमालयके दुर्गम क्षेत्रमें नेपाल राज्यके मुक्तिनाथसे और आगे दामोदरकुण्ड (नकली नहीं, असली दामोदर-कुण्ड) के समीप कुछ योगसिद्ध साधकोंका समुदाय एकत्र था। बडी-बड़ी कृष्णकपिश जटाएँ, सुगठित प्रलम्ब देह, भस्मभूषित सर्वाङ्ग और फटे कानोंमें मोटी योगमुद्रा। यह सिद्ध योगीश्वर गुरु गोरखनाथका शिष्यमण्डल था और उनके सिद्धेश्वर गुरु आज उनके साथ थे।

'भगवान् दत्तात्रेय आज सोमवती अमावस्याका स्नान दामोदरकुण्डपर करनेवाले हैं।' सर्वज्ञ योगियोंके सन्देश-विनिमयके लिए कोई चर अथवा स्थूल माध्यम तो आवश्यक नहीं है। कल सायंकाल गुरुको ध्यानमें भगवान् दत्तका सङ्कल्प ज्ञात हो गया था और अपने प्रमुख शिष्योंके साथ आज उषःकालमें उन्होंने दामोदरकुण्डके हिमशीतल जलमें डुबकियाँ लगायीं। भस्मोद्धूलन हो चुका सबका और अब तो सभी हिममुक्त

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शिलाओंपर बैठे उन सुरासुरवन्दित श्रीअत्रिनन्दनके आगमनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

यह हिमक्षेत्र—तृण भी नहीं होता यहाँ। नीचे जमे हुए उज्ज्वल हिममें यत्र-तत्र कुछ शिलाएँ हैं और ऊपर नील गगन है। चारों ओरसे रजतकान्त शिखरोंसे घिरे इस क्षेत्रमें दामोदरकुण्डका जल पारदर्शी हिमके नीचे स्थिर-शान्त पड़ा है। भगवान् भास्करके दर्शन हुए नहीं ; किंतु उनकी क्षितिजसे उठती किरणोंने हिमके इस साम्राज्यपर गुलाल बिखेरना प्रारम्भ कर दिया है।

केवल एक शिलापर मृगचर्म बिछा है। अपेक्षाकृत कुछ ऊँची शिला है वह। उसपर जो प्रलम्बबाहु, उन्नतभाल, कमललोचन तेजोमय जटाधारी हैं—इन बाबा गोरखनाथका भी क्या परिचय देना आवश्यक है ?

सभी केवल कौपीन-परिधान हैं। योगियोंकी सिद्ध कायाको शैत्य स्पर्श करनेमें असमर्थ है। एक शिलापर कमलपत्रपर दूर्वादल, कमलपुष्प, कुछ फल तथा नवनिर्मित दुग्धोज्ज्वल भस्म है। यत्नपूर्वक यह अर्चन-सामग्री दूरसे लायी गयी है इस अवसरके लिए।

दिशाएँ आलोकसे भर गयीं। यह ठीक है कि भुवनभास्करकी किरणोंने शिखरोंको स्वर्ण-स्नान करा दिया है ; किंतु अम्बरसे यह जो कोटि-कोटि सूर्यसम अपार प्रकाश-पुञ्ज सीधे उतरता आता है। सहसा एक

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

साथ ससम्भ्रम उठ खड़ा हुआ योगियोंका समुदाय और गुरु गोरखनाथने अञ्जलिमें कमलपुष्प उठाये। एक साथ उन कण्ठोंसे परावाणी गूँजी—'अलख! दत्त गुरु दाता।'

× × ×

'आपके समुदायकी साधना अव्याहत है?' गुरुदत्तने कुशल-प्रश्न किया। उन्होंने स्नान कर लिया था और प्रशस्त शिलातलपर व्याघ्राम्बर सनाथ हो गया था उनका आसन बनकर। पादपद्मोंमें अर्चाके कमलदल पड़े थे। वाम भाग योगकक्षके सहारे तनिक झुक गया था। विभूति-भूषित भाल और रुद्राक्षकी मालाओंकी शोभा उस कर्पूर-गौर श्रीअङ्गके कण्ठ, भुजा, मणिबन्धमें। दूरसे हिमशिलाओंके टूटने-गिरनेका मन्दस्वर आने लगा था; किंतु जहाँ भुवन-वन्दित योगियोंका समुदाय एकत्र हो उनकी शान्तिमें व्याघात बननेका साहस प्रकृति कैसे कर सकती है। वायुके पद भी वहाँ शिथिल-संयमित हो जाते हैं।

'नित्य पूर्णकाम भुवनेश्वर प्रभु जब स्वयं साधकोंके साफल्यके लिए सप्रयत्न हैं। इसी मङ्गल-विधानके लिए उन्होंने यह योगेश्वरावतार अपना रक्खा है। विघ्न कैसे किसीकी साधनामें व्याघात बन सकते हैं; किंतु—' गुरु गोरखनाथने अञ्जलि बाँधकर मस्तक झुकाया—'जब इन पुण्य चरणोंके दर्शनका सौभाग्य मिला है

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सभी आदेश एवं ज्ञानोपदेशसे कृतार्थ होनेकी लालसा रखते हैं !'

'मैं देखना चाहता हूँ पहले आपके साधकोंकी साधना-परिपाटी !' भगवान्‌ने अपना अभिप्राय व्यक्त किया ।

'जैसी आज्ञा !' गुरु गोरखनाथके संकेतपर एक तरुण यौगी आगे आये। उन्होंने आसन स्थिर किया, आधे क्षणमें प्रत्याहार ध्यानमें और ध्यान समाधिकी भूमिमें पहुँचा। स्थिर अर्धोन्मीलित दृग ! भगवान् दत्तका दक्षिण कर उठा और योगी सविकल्पसे निर्विकल्पमें पहुँचनेके स्थानपर बाह्यचेतनामें आ गया ।

'मनुष्य सदा समाधिमें स्थित नहीं रह सकता !' भगवान्‌के शब्दोंने एक सन्देश दिया—'निर्विकल्पकी शान्ति सामान्य जीवनमें अवतरित करो वत्स ! अपने गुरुदेवके आदर्शको अपनानेका प्रयत्न करो !'

'सोऽहं' दीर्घ घण्टा-निनाद। दूसरे साधकने वह स्थान लिया पहलेके उठ जानेपर और उनका प्रगाढ़ संयम—अनाहत उनके अन्तःसे बाह्य जगत्में गूँजने लगा । शङ्ख, वंशीके स्वर उठे और लय हुए—मेघगर्जनसे ऊपर दिशामें प्रणवकी पराध्वनि गूँजने लगीं ।

'वत्स !' भगवान् दत्तके सङ्कल्पके साथ साधक जागृतिमें आ गया—'वाद्योंका स्वर जगत्में दुर्लभ नहीं

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है। मेघकी ध्वनि भी अयाचित आकाशमें गूँजती है। शब्दकी साधनाका लक्ष्य है अशब्दमें स्थिति—नित्य सहज स्थिति जगत्के कोलाहलमें रहते अविकम्प शान्त अशब्दमें !'

'ॐ सच्चिदेकं ब्रह्म ॐ' अन्य साधक आ बैठे थे उस प्रयोगशिलापर। नेत्र-कोणोंके संवेदनस्नायुसूत्रका उन्होंने किंचित् स्पर्श किया और स्थिर हो गये। रूप—अद्भुत अपूर्व रंगोंकी छटा जब अन्तरसे उमड़ी, सम्पूर्ण हिमप्रदेश रक्त, पाटलपीत, हरित, नील रंगोंसे रञ्जित होने लगा। दो-चार क्षण रंगोंकी छटा और फिर दृश्य—अद्भुत अपूर्व दृश्य ! जैसे सम्पूर्ण दिव्य सृष्टि साकार हो उठी है। अन्तमें एक परमोज्ज्वल प्रकाण्ड प्रकाश-राशि।

'अलं !' प्रभुके एक शब्दने साधकको उत्थित कर दिया। 'रङ्ग और रूप सम्पूर्ण दृश्य दृष्टिमें बिखरे पड़े हैं। तुम नेत्र बंद करके सङ्कल्प न भी करो, दिवाकरका तो तीव्र तेज है, जगत्के नेत्रोंको वह नित्य सुलभ है। यह साधना इस रङ्ग रूपको सृष्टिमें तुम्हें नित्य अरूपमें निवास दे सके तो यह सफल हुई।'

'लं' केवल बीजका उच्चारण किया अब आसनपर आये साधकने। शीघ्र ही दिशाएँ सौरभसे भर गयीं। पुष्प-सार जैसे सम्पूर्ण पर्वतोंपर लुढ़का दिये गये हों। क्षण-क्षण सुरभिका परिवर्तन मनों घृत-कर्पूरका मानो

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हवन हो रहा हो और अन्तमें तुलसी-मञ्जरीका स्थिर अपार सौरभ !

भगवान् दत्तात्रेयने उत्थित करके समझाया इस साधकको 'कहीं भी कोई जाय, गन्ध आयेगी ही। अगन्ध—सहजावस्था है और उसमें स्थित रहना है।'

इसी प्रकार रसका साधक आया। खेचरी मुद्रा तो की उसने ; किंतु उसे उत्थित करके गुरु दत्त किंचित् हँसे—'वत्स ! तुम्हारे साधनने हम सबका आतिथ्य कर दिया। नाना रसोंका आस्वादन अनुभव किया हमने और अमृतका स्वाद पाया ; किंतु रस कहाँ लोकमें दुर्लभ हैं। रसातीत स्थितिमें नित्य अवस्थिति, यह लक्ष्य है तुम्हारी साधनाका।'

स्पर्शके साधकने कुछ अङ्ग-चालनकी क्रियाएँ कीं और तब स्थिर हुआ। हिमप्रदेश सुखद उष्ण बन गया। सबके त्वक्ने पाटलदलोंके स्पर्शका अनुभव किया। भगवान्ने उसे सन्देश दिया 'अस्पर्श–समस्त स्पर्शोंमें रहते स्पर्शातीत बने रहो !'

'तुमने क्या-क्या अनुभव किये !' अन्तमें भगवान् दत्तने योगी भर्तृहरिसे पूछा।

'आपके पदपङ्कज सम्मुख हैं और उनका जो चिन्मय प्रभाव है, वह वाणीमें नहीं आता !' विनम्र उत्तर था।

'तुम्हारे इन साथियोंके प्रयोगोंका चमत्कार ?'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'क्षमा करें प्रभु !' वाणीका संकोच कह रहा था कि भर्तृहरिका मन इन्द्रियोंके साथ नहीं था, अतः उन्हें कोई चमत्कार प्रभावित नहीं कर सका। कोई वृत्ति उनके चित्तमें उठी नहीं।

'यही अलख—अलक्ष्य स्थिति !' भगवान्‌ने बताया—'मनकी यही सहज एकाग्रता परम योग है। सब योगक्रियाओंका यही परम लक्ष्य है।'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'मैं'की शोध

'मैं कौन ?' नरेन्द्र चिकित्सा-विज्ञानका छात्र है। किंतु है वह अत्यन्त आस्तिक कुलका व्यक्ति। जब वह पाँच वर्षका था, तभीसे पिताने उसे प्रातः स्नान करके थोड़े-से श्लोक बोलकर, भगवान्‌को प्रणाम करके तब भोजन करना चाहिए, यह बात सिखा दी थी। किंतु चिकित्सा-विज्ञान लेकर उसके सम्मुख एक समस्या आ खड़ी हुई है। "यह जीव क्या है? 'मैं' इस शरीरमें कौन-सा तत्त्व है।"

बड़ी-सी चुटिया, ललाटपर चन्दन, गलेमें जनेऊ और अपने कमरमें धोती पहिननेका अभ्यास। चप्पलके स्थानपर लकड़ीकी खड़ाऊँकी खटपट जिसे पसंद है, उसे स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयमें सहपाठियोंने कितना चिढ़ाया, सताया होगा,—आप बड़ी सरलतासे अनुमान कर सकते हैं। किंतु आपका अनुमान ठीक नहीं है। इस गौर-वर्ण, बड़ी-बड़ी आँखों और घुंघराले बालोंवाले अत्यन्त मेधावी, सशक्त छात्रको उसके सहपाठी सदा श्रद्धा और स्नेहसे देखते रहे हैं।

नरेन्द्र जब गाँवके स्कूलसे नगरमें आया, उसे केवल चार-छः दिन कुछ लोगोंने चिढ़ानेका प्रयत्न

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किया। प्रयत्न करनेवालोंको शीघ्र पता लग गया कि चेष्टा उन्हें महँगी पड़ेगी। नरेन्द्र झेंपने और डरनेवालोंमें नहीं था। उसने पीटा भी किसीको नहीं; किंतु जिसका हाथ पकड़कर उसने एक बार चेतावनी दे दी, उसे वह चेतावनी कभी भूल नहीं सकती थी। फिर कक्षामें और खेलके मैदानमें जिसकी प्रतिभा और स्फूर्ति समान रूपसे अग्रणी रहती हो, उसे उसके सहाध्यायी चिढ़ा कैसे सकते हैं?

बात उलटी हो गयी। नरेन्द्रके होस्टलमें कइयोंने खड़ाऊँ पहिनना और जनेऊ पहिनकर संध्या करना प्रारम्भ कर दिया। नरेन्द्रसे पहले स्नान करके उसका आसन व्यवस्थित करने तथा संध्याका जल रखनेवाले श्रद्धालु भी उसे मिल गये। उसे प्रायः सभी 'नरेन्द्रजी' कहकर ही सम्बोधित करते थे। यह परिपाटी कॉलेजमें और विश्वविद्यालयमें भी ज्यों-की-त्यों बनी रही और जब नरेन्द्र चिकित्सा-विज्ञानका विद्यार्थी बनकर आया, उसका उपहास करनेका साहस पुराने छात्रोंको भी नहीं हुआ।

इतना संयमी, नियमनिष्ठ, आस्तिक व्यक्ति यह कैसे मान ले कि चेतना जड़ द्रव्योंकी विकृति है। देहसे भिन्न चेतन-तत्त्व कोई वस्तु नहीं है, यह भौतिक-वाद नरेन्द्रका हृदय किसी प्रकार स्वीकार नहीं करता।

'जैसे ईंटपर ईंट रखकर एक भवन बनाया जाता है, हमारा शरीर भी उसी प्रकार बना है। यह भी

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक मकान है। इस मकानकी ईंटें हैं कोषिकाएँ। एक युवा स्वस्थ शरीरमें लगभग छः सौ खरब कोषिकाएँ होती हैं।' नरेन्द्रने शरीर-विज्ञानका यह तथ्य ज्ञात कर लिया है—'प्रत्येक कोषिकाके पास अपना मस्तिष्क—केन्द्रक (न्यूक्लियस) होते हैं। केन्द्रकके अपने ज्ञानसूत्र या गुणसूत्र (क्रोमोसोम) होते हैं और अपने संस्कारकोष (जीन) होते हैं।'

प्रत्येक कोषिका सोच सकती है, यह नरेन्द्र जानता है। उसे पता है कि कुक्कुटाण्डगत भ्रूणको यदि इस सुरक्षाके साथ निष्पेषित किया जाय कि कोषिकाएँ नष्ट न हों, केवल उनके क्रमको अस्त-व्यस्त करके पूरे भ्रूणको द्रव बना दिया जाय तो भी क्रियाशीलताके योग्य परिस्थिति मिलनेपर कोषिकाएँ अपने सहयोगियोंको ढूँढ़ लेती हैं और कुक्कुट-शावकके अवयवोंका निर्माण करने लगती हैं। यदि कुछ कोषिकाएँ नष्ट न कर दी गयी हों तो उस निष्पेषित द्रवसे भी कुक्कुटकी उत्पत्तिमें बाधा नहीं पड़ती। केवल कुछ देर लगती है।

। त्येक कोषिकाके पास आनुवंशिक संस्कार और अपना मस्तिष्क, तब इनमेंसे 'मैं' कौन ?" नरेन्द्र सोचने लगा है कि—'जिसे हम जीव कहते हैं, जो इस मनुष्यदेहका अभिमानी है, जिसे मनुष्य-देहके प्रारब्धका भोग करना है और जो इस देहके शुभाशुभ कर्मका उत्तरदायी है, वह कौन है ?'

× × ×

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'बेटा कलकी छुट्टीका प्रार्थनापत्र दे आना। कल अपने नये मकानका गृहप्रवेश है। पूजा तुम्हारे हाथसे हा होनी है।' नरेन्द्रके पिता गाँव छोड़कर नगरमें आ गये हैं। उन्होंने अब अपना मकान बनवा लिया है। मकानकी भूमि नरेन्द्रके नामसे ली गयी है और उसीको गृहप्रवेशका प्रमुख बनना है। पिताने प्रातः अध्ययनके लिए जाते समय सूचना दे दी कि कल उसे घरपर ही रहना है।

'यह गृह-देवता कौन ?' नरेन्द्रके मनमें एक प्रश्न और खड़ा हा गया। उसने बड़ी श्रद्धा और सावधानीसे पूजन-कर्म सम्पन्न किया था। किंतु क्षेत्रपालका भाग देते समय उसके मनमें जिज्ञासा जाग खड़ी हुई। पूजन-कर्मकी समाप्तिपर जब पण्डितजी भोजन करके बैठ गये निश्चिन्त होकर, तब नरेन्द्रने प्रश्न किया।

'मकान तुम्हारे सामने बना है। सम्मुख न भी बना होता तो भी तुम जानते हो कि इसे कारीगरोंने कैसे बनाया है।' विद्वान् हैं पण्डितजी। उन्होंने समझाया— 'किंतु तुम्हारा शरीर भी तो तुम्हारे ही सामने प्रतिदिन बन रहा है। जो भोजन थालीमें है, वही क्या पेटमें जाकर 'मैं' नहीं बनता ? तुम्हारे शरीरका कण-कण इसी भोजनसे बनता है। इतनेपर भी शरीरमें तुम हो। देहमें जैसे जीव है, गृहमें वैसे गृह-देवता है। जड़ पदार्थका निर्माण भले जड़ द्रव्योंसे हुआ हो और हमारे सामने हुआ हो; किंतु जब एक संगठन बन गया, तब उसका अधिष्ठाता

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चेतन भी होता ही है । गङ्गाजीके जलका प्रत्येक कण जल है ; किंतु पूरे प्रवाहकी अधिष्ठाता देवता गङ्गाजी हैं ।'

'यह जीव क्या है ?' नरेन्द्रके सम्मुख फिर वही प्रश्न आ गया । ईंटोंसे भवनके समान कोषिकाओंसे शरीर बना । भोजनसे कोषिकाओंका पोषण एवं वृद्धि होती है । गृह बना तो गृह-देवता, शरीर बना तो जीव ; किंतु जीव है क्या ?

'जीव है'—यह नरेन्द्र असंदिग्धरूपसे मानता है । अतएव गृहदेवता भी हैं—प्रत्येक वस्तुके अधिष्ठाता देवता हैं । यह मानने-समझनेमें उसे कठिनाई नहीं होती है । अपने शरीरके मान-अपमान, सेवा-उपेक्षाका जैसे उसपर प्रभाव पड़ता है, वह तुष्ट-रुष्ट होता है और शरीरको औरोंके अनुकूल-प्रतिकूल बनाता है, वैसा ही गृह-देवता भी करते होंगे । यह बात भी नरेन्द्र ठीक समझता है । वह यह भी जानता है कि सेवा—सत्कारका माध्यम शरीरको ही बनाना पड़ेगा किंतु जीव है क्या ?

'भैया ! तुम तत्त्वज्ञानकी बात पूछ रहे हो । जीव क्या है ? मैं क्या हूँ ? यह जान लिया तो परमात्माको जान लिया । इस आत्मामें ही परमात्मा बैठा है ।' पण्डितजीने सरलतापूर्वक कहा—'मुझे यह कहनेमें कोई संकोच नहीं है कि मैं आत्मज्ञानी नहीं हूँ । तुम्हारी जिज्ञासा सच्ची होगी तो कोई तत्वज्ञ तुम्हें प्राप्त हो जायगा ।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जब कोई कह दे कि मैं यह बात नहीं जानता तो चर्चा समाप्त हो जाती है; किंतु चर्चा समाप्त हो जानेसे ही जिज्ञासा तो समाप्त नहीं हो जाती। इस प्रश्नका उत्तर प्राप्त कर लेना ही तत्वज्ञान है, पण्डितजीकी इस बातने नरेन्द्रकी जिज्ञासाको और महत्त्व दे दिया था। वैसे भी वह किसी प्रश्नको अमीमांसित छोड़नेका अभ्यासी नहीं है।

'यह तत्त्वज्ञान-सम्बन्धी प्रश्न है।' पण्डितजीने नरेन्द्रको एक दिशा दे दी थी। तत्त्वज्ञान-सम्बन्धी प्रश्नका उत्तर कोई तत्त्वज्ञानी दे सकता है। इस विवेकका फल हुआ कि नरेन्द्र साधुओंकी खोजमें रहने लगा। वह समय मिलते ही आस-पासके किसी साधुके समीप जा बैठता था। यथासम्भव कुछ सेवा करता था साधुकी। जल ला देता, आश्रम स्वच्छ कर देता और चुपचाप बैठा रहता। कभी-कभी कुछ फल या अन्य आवश्यक सामग्री भी साधुके लिए ले आता था।

नरेन्द्रने धार्मिक साहित्यका अध्ययन कम नहीं किया है। वह उपनिषदोंकी उन कथाओंसे परिचित है, जिनमें तत्त्वज्ञानके जिज्ञासुको वर्षों तप करना पड़ा है। महापुरुष प्रसन्न हों और अधिकारी मानें, तब वे तत्त्व ज्ञानका उपदेश करते हैं। पहुँचे और प्रश्नकी तोप दाग दी, इससे कोई लाभ नहीं होता, यह नरेन्द्रकी धारणा है।

× × ×

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'बेटा ! तुम मेरे पास कई दिनोंसे आ रहे हो। अच्छे सुशील और सेवा-परायण लगते हो। क्या चाहिए तुम्हें ?' एक वृद्ध साधने एक दिन नरेन्द्रसे पूछा।

'मुझे बहुत दिनोंसे एक प्रश्न तंग कर रहा है।' नरेन्द्रने नम्रतापूर्वक अपना प्रश्न बतलाकर प्रार्थना की 'यदि आप अनुग्रह करें।'

'भैया, तुम विज्ञान के विद्यार्थी हो। जानते हो कि इस चट्टानमें अग्नि है।' महात्माने गम्भीर होकर कहा—'चट्टानके एक कणको यदि तोड़ दो और तोड़ते ही चले जाओ तो क्या होगा ?'

'केवल विद्युत् रहेगी परामाणुके टूटनेपर और ऐसा करनेमें कितना विनाश होगा, कहा नहीं जा सकता।' नरेन्द्र परमाणु-विज्ञानका विद्यार्थी न सही ; किंतु उसे इतना सामान्य ज्ञान तो है ही।

'प्रत्येक परमाणुमें वह अपरिमित शक्ति स्वयं परमाणु बनी शान्त बैठी है।' महात्मा समझा रहे थे—जबतक परमाणुको तोड़ो नहीं, उस शक्तिका पता भी नहीं लगता।'

'अभी थोड़े ही समयसे मनुष्य उस शक्तिसे परिचित हुआ है। इससे पूर्व तो कल्पना भी नहीं कर सकता था कि परमाणुमें इतनी शक्ति है।' नरेन्द्रने उत्साहपूर्वक कहा।

'उस शक्तिसे भिन्न परमाणु तथा उसके अवयवोंकी कोई सत्ता नहीं है। किंतु परमाणुको तोड़े बिना यदि

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उसके अवयवोंमें उस शक्तिको ढूंढ़ा जाय तो उसका पता लगेगा क्या ?' महात्माने पूछा।

'नहीं लगेगा।' सीधा उत्तर था।

'परमाणु बना। उसके अवयव गठित हुए और वह असीम शक्ति उनमें सुप्त—अदृश्य हो गयी।' महात्माने कहा—"तुम्हारा जो इस देहके प्रति 'अहं' है, यही उस चेतनशक्तिको अदृश्य करनेवाला परमाणु है। इसे तोड़े बिना उस अनन्त चित्-शक्तिका साक्षात्कार सम्भव नहीं है। अतः इस परिच्छिन्न 'अहं' को टूटने दो।"

'किंतु शरीरके कर्मोंका भोक्ता जीव ?' नरेन्द्रने अपने प्रश्नको फिर दुहराया। 'जीव तो परिच्छिन्न है और अहंके साथ है। जीवको समझनेके लिए अहंका उच्छेद क्यों आवश्यक होना चाहिए ?'

'अहंका उच्छेद किये बिना चेतनाका स्वरूप समझमें नहीं आता और इसीलिए देहस्थ चेतनका स्वरूप भी तुम समझ नहीं पाते हो।' दो क्षण महात्मा गम्भीर हो गये और फिर उन्होंने कहा—'इस कुटियामें जो आकाश है, वह सम्पूर्ण आकाशसे पृथक् नहीं है, वह तुम समझते हो। घड़ेको लेकर चलें तो उसके भीतरका आकाश चलेगा या नहीं ?'

'नहीं चलेगा।' नरेन्द्रको सोचना नहीं पड़ा। उसने स्थिर स्वरमें कहा—'आकाश चलता नहीं है।'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'किंतु घड़ेमें भरा धुआँ अथवा घड़ेके जलमें पड़ता सूर्यका प्रतिबिम्ब ?'

'धुआँ या प्रतिलिम्ब चलेंगे ; क्योंकि घड़ेकी मिट्टीके कण धुएँ और जलको अपनी सीमामें रख सकते हैं।' नरेन्द्रने बताया—'किंतु आकाश इतना सूक्ष्म है कि मिट्टीके कणोंकी बाधा उसमें उपस्थित नहीं होती।'

'चेतन तत्त्व आकाशके समान व्यापक है। जब एक आकार बनता है, तब वह उसके भीतर ही बनता है। जैसे घड़ेमें आकाश अथवा व्यापक विद्युत्में परमाणु।' महात्माने समझाया—'सामान्य चेतन तो सर्वत्र है। वह आधार-स्वरूप है। जैसे व्यापक आकाश या विद्युत् सर्वत्र है। घड़ेके भीतर जो आकाश आ गया, वह घड़ेके भीतरके जल अथवा धुएँका धारक हैं। इसी प्रकार देहके भीतर चेतनका जो अंश है, वह देहका धारक है।'

'यही जीव या अधिदेवता है ?'

'नहीं, यह तो वासुदेव है ! इसे हृदयस्थ ईश्वर कहते हैं। इसका जो प्रतिबिम्ब चित्तमें पड़ा—चेतनका प्रतिबिम्ब होनेसे उसमें भी चेतना है। जैसे सूर्यके प्रतिबिम्बमें प्रकाश होता है।'

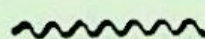
'प्रतिबिम्ब होनेसे उसमें परिच्छिन्नता, चंचलता भी है।' नरेन्द्रने स्वतः कहा—'जिस चित्तमें वह प्रतिबिम्बित है, उसके भी कुछ गुण-धर्म उसमें आ गये हैं।'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'यही जीव है। यही अपनेको देहाभिमानी मानता है।' महात्माने कहा—'जब भी तुम मकान बनाते हो, उसमें अधिदेवता आ जाता है। यदि तुम जड़ द्रव्यको इतना परिष्कृत कर दो कि वह प्रतिबिम्ब ग्रहण कर सके तो तुम अपनी प्रयोगशालामें जीव बना चुके—यह गर्व ले सकते हो; किंतु जीवन-तत्त्व चेतन तो सर्वाधार, सर्वव्यापी है।'

नरेन्द्रने महात्माके चरणोंमें मस्तक रक्खा। आज उसका समाधान हो गया था।



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आनन्द-मार्ग

'वत्स ! तुम मेरे कुलके नहीं हो।' आचार्य श्रीनिवासने बड़े स्नेहसे कहा—'जो अधिकारी जिस साधनका है, उसको उसीमें लगना चाहिए। हमलोग ऋषि नहीं हैं। सर्वज्ञ ऋषि ही सबको उसके अधिकारके अनुरूप मार्ग प्रदान कर सकते थे। हम तो केवल वह मार्ग जानते हैं, जो हमारा मार्ग रहा है; किंतु सबके लिए वही मार्ग तो उपयुक्त नहीं है।'

किसी भी प्रकारसे अपने शिष्योंकी संख्यावृद्धिका आज-जैसा अन्ध प्रयत्न उस समय किसी महापुरुषको अभीष्ट नहीं था। परमार्थका जिज्ञासु यदि अपने मार्गका—अपने सम्प्रदायका अधिकारी नहीं है तो उसे दीक्षा नहीं दी जाती थी। 'जीवका कल्याण इसी मार्गसे होता है' ऐसी संकीर्णतापूर्ण मान्यता महापुरुषोंमें हुआ नहीं करती।

'निराश होनेकी कोई बात नहीं है। भगवान् नारायण अनन्त दयार्णव हैं। कोई अधिकारी अपने अधिकारसे वञ्चित रहे, यह उनके राज्यमें सम्भव नहीं।' श्रीआचार्यने आश्वासन दिया—'तुम्हें गुरुकी प्राप्ति

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अवश्य होगी। योग्य अधिकारीको गुरु ढूँढ़ना नहीं पड़ता। गुरु उसे स्वयं ढूँढ़ लेते हैं।'

आचार्य श्रीनिवास प्रकाण्ड विद्वान् हैं। उनकी विपुल ख्याति है। उनके विरक्त-गृहस्थ शिष्योंकी संख्या भी कम नहीं है। गिरिधरलालने कई वर्षसे यह सङ्कल्प कर रक्खा था कि वह आचार्यकी शरण ग्रहण करेगा। सौभाग्यसे आचार्य आये थे इधर। वह कितनी उत्सुकतासे इस दिनकी प्रतीक्षा कर रहा था ; किंतु आचार्यने उसे स्वीकार नहीं किया।

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः। सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।

'विवेक मुख्य साधन है हमारे सम्प्रदायका और विवेकका अर्थ है भोजनके शुद्धाशुद्धका विवेक।' आचार्यने समझाया—'प्रपत्तिकी परिपक्वताके लिए चित्त शुद्ध होना चाहिए। अन्नकी शुद्धिसे चित्तकी शुद्धि हमारे साधनका मुख्य आधार है। जितना सम्भव हो, इसको अपनाओगे तो तुम्हें लाभ ही होगा।'

अन्नकी शुद्धि—अन्नमय कोषकी, स्थूल देहकी शुद्धि प्रथम आवश्यक है, इसे कोई कैसे अस्वीकार कर देगा ; किंतु आज यह असम्भवप्राय बात है। अन्न, शाक जिस भूमिमें, जिस खादसे उत्पन्न होते हैं, आहारके पदार्थोंका जो भ्रष्ट, मिश्रितरूप उपलब्ध होता है बाजारमें—कोई कहाँतक सावधानी रक्खेगा। अपवादरूप किन्हीं अतिशय सम्पन्न सज्जनके लिए भले सम्भव हो यह, सामान्य साधकके वशकी तो बात नहीं है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आहारमें स्वरूपदोष, सङ्गदोष और अर्थदोष न हो, यह बात उस समय भी गिरिधरलालको बहुत सरल नहीं लगी थी। आजकी स्थिति तो जैसी है—प्रत्यक्ष ही है।

× × ×

'वत्स ! तुम हमारे कुलके नहीं हो।' गिरिधरलाल गये थे योगिराज अनन्त शम्भुकी शरण लेने ; किंतु वहाँ भी उन्हें यही उत्तर मिला—'प्राणकी शुद्धिसे चित्तकी शुद्धि हमारा साधन है। सामान्य प्राणायाम करोगे तो लाभ होगा तुम्हें ; किंतु हठयोगकी निर्विकल्प समाधिके लिए जितना प्राणायाम, जो मुद्राएँ आवश्यक हैं, उनका खिचाव सहन करने योग्य तुम्हारा शरीर नहीं है।'

'क्रियाकी शुद्धिसे चित्तकी शुद्धि होती है। अपनेको आग्रहपूर्वक सत्कर्ममें लगाये रक्खो। इससे अन्नदोष तुम्हें प्रभावित नहीं कर सकेगा। योगकी क्रियाओंका थोड़ा अभ्यास मनोबल देगा।' योगिराजने समझाया—'लेकिन परमार्थ-साधनका तुम्हारा अपना मार्ग यह नहीं है। समय आने दो, उपयुक्त गुरुकी उपलब्धि अवश्य तुम्हें होगी।'

प्राणके संयमसे अथवा क्रियाकी शुद्धिसे—तात्पर्य यह कि प्राणमय कोषकी शुद्धिसे चित्तकी शुद्धि होती है, बात सर्वथा उचित है ; किंतु बुद्धि जिसे उचित कहती है, क्या हम वही करनेमें सफल हो पाते हैं ? मनकी पराधीनतासे छुटकारा पा लेना यदि इतना सुगम होता........

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम्।

हमारी बुद्धि सदा ठीक ही निर्णय करती है, ऐसा भी तो नहीं है। गिरिधरलालको भी लगा कि यह उसका मार्ग नहीं है। वह प्राणायाम तथा मुद्राओंका व्यायाम-क्रम नहीं चला सकेगा। क्रियाकी शुद्धिके लिए सावधान रहेगा। सफल कितना होगा, वह स्वयं नहीं जानता।

× × ×

'भावना शुद्ध रहे तो क्रिया शुद्ध होती है। भावनाकी शुद्धिसे प्राणमयकोषकी शुद्धि हो जाती है और अन्नमयकोष भी शुद्ध हो जाता है। अन्नदोष अधिक बाधा नहीं देते।' गिरिधरलाल गये थे महात्मा श्रीसीतारामशरणजीके समीप। महात्माजीने बड़ी मधुर वाणीमें उन्हें समझाया—'भगवान्‌के रूप, गुण, लीलाके चिन्तनकी भावनाका अभ्यास करो। मानसिक पूजाको अपना दैनिक कार्य बना लो और प्रतिकूल भावनासे मनको प्रयत्नपूर्वक हटाते रहो। संसारके व्यक्ति तथा पदार्थोंका चिन्तन मनको मत करने दो। मनको राग और द्वेषके प्रवाहसे दूर रक्खो। दया, क्षमा, सेवाके भावोंको मनमें बसने दो।'

गिरिधरलालको महात्माजीने आदेश दिया था—'कुछ दिन अभ्यास करके तब हमारे पास आना।'

'महात्माजी अतिशय विनम्र हैं।' गिरिधरलाल सोचते हैं—'इसीलिए उन्होंने स्पष्ट नहीं कहा कि तुम हमारे शिष्य होनेके अधिकारी नहीं हो।'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गिरिधरलालके ऐसा सोचनेका कारण है। वह प्रयत्न करके हार गया है। पूरे तीन महीने उसने चेष्टा की है। मन कोई अपने हाथमें है कि जो चाहेंगे, वह साचा जा सकेगा। दो क्षण तो वह अभीष्ट-चिन्तनमें लगता नहीं। सोचना चाहते हैं कुछ, और मन सोचता कुछ है। निष्प्रयोजन बिना सिर-पैरकी बातें मनमें आती रहती हैं; किंतु मानसिक पूजा नहीं चल पाती।

मनोमयकोषकी शुद्धिसे चित्तकी शुद्धि—मन ही तो चित्त है। मन शुद्ध हो जाय, भावना शुद्ध होने लगे—गिरिधरलालको लगता है कि यही साध्य है। प्रारम्भमें ही यह साधन बन जाय, यह उसे अपने वशकी बात नहीं लगती है। अतएव महात्मा श्रीसीतारामशरणजीके समीप जानेका उत्साह भी वह अपनेमें नहीं पाता है।

× × ×

'बुद्धौ शरणमन्विच्छ'—स्वामी आत्मानन्दजीका प्रवचन चल रहा था—'तुम नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त अद्वितीय सच्चिदानन्द हो। बुद्धिकी शरण-ग्रहण करो। यह समस्त प्रपञ्च तुम्हारी दृष्टिमात्र है।'

गिरिधरलालने स्वामीजीकी बहुत प्रशंसा सुनी है। स्वामीजीमें उसकी श्रद्धा है। आज वह उनके सत्संगमें पहली बार नहीं आया है। वह नित्य भले न आता हो, आता है। स्वामीजीके लिये फल ले आता है। संत-सेवामें उसकी प्रीति है। किंतु स्वामीजी इतने बड़े विद्वान् हैं और

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इतनी ऊँची बात कहते हैं कि उसके पल्ले कुछ पड़ता नहीं है।

शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान—इस षट्सम्पत्तिसे सम्पन्न, जितेन्द्रिय, विरक्त, एकाग्रचित्त साधक जब साधन-चतुष्टयका आश्रय लेता है—विवेक, वैराग्यसे सम्पन्न होनेपर जब उसमें मुमुक्षा जागती है, तब गुरूपसत्तिसे श्रवण किया हुआ तत्त्व अन्तःकरणमें मननके द्वारा उद्भासित होता है और निदिध्यास अविद्याको निवृत्त करनेमें सफल होता है।

षट्सम्पत्ति जीवनमें आयी नहीं, साधन-चतुष्टय सम्यक् अपनाये नहीं गये तो श्रवण किया हुआ तत्त्व केवल बौद्धिक ज्ञान बनकर रह जाता है और यह भी तब होता है, जब बुद्धि तीक्ष्ण हो। गिरिधरलाल कभी तार्किक नहीं रहे हैं। वे बाल्यकालसे भावुक व्यक्ति हैं। अतएव वेदान्तका उपदेश उनको अनुकूल नहीं पड़ता है।

विज्ञानमयकोषकी शुद्धिसे—ज्ञानकी शुद्धिसे अन्तःकरणकी शुद्धिपर स्वामी आत्मानन्दजी बल देते हैं। वे कहते हैं—'तुम एक अन्तःकरणवाले नहीं हो। मरने दो एक अन्तःकरणको। जैसे मच्छर, मक्खी, कुत्ते, सूअरका अन्तःकरण है, वैसे ही यह भी एक अन्तःकरण है। इसकी उपेक्षा कर दो। तुममें अन्तःकरण एक भ्रान्त प्रतीति है।'

अन्तःकरणकी उपेक्षा कर दी जाय तो वह स्वतः शान्त—समाहित हो जायगा। तादात्म्यके बिना तो

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चित्तमें क्रिया होगी ही नहीं। किंतु चित्तसे तादात्म्य न किया जाय, उसकी उपेक्षा कर दी जाय, यह बात क्या बहुत सरल लगती है आपको ?

गिरिधरलालका कहना है–'चित्तको लेकर ही तो साधनमार्गमें चलनेकी बात उठी थी। दुःख चित्तको ही होता है। दुःख न हो, जन्म-मृत्यु न हो—यही अध्यात्मका उद्देश्य है और ये चित्तके ही होते हैं। अतएव चित्तके ये हों या न हों, यह कहना कैसे बनेगा।'

गिरिधरलाल यह नहीं समझ पाते हैं कि चित्तके दुःख तथा जन्म-मृत्युको मिटानेका साधन चित्तकी उपेक्षा कर देना है। चित्तमें 'अहंता'का त्याग करो तो चित्त जड़ हो जायगा। वह तो अहंके तादात्म्यसे ही एक भयङ्कर भूत बना डरा रहा है। किंतु गिरिधरलालकी प्रज्ञा इतनी परिमार्जित नहीं है।

'मैं इस कुलका भी नहीं हूँ।' यह बात स्वयं गिरिधरलालने निश्चित की है। स्वामी आत्मानन्दजीने उनसे यह बात कही नहीं। कहनेका प्रसंग ही उपस्थित नहीं हुआ।

× × ×

'अरे इधर तो आ !' गिरधरलाल निकले थे तीर्थयात्रा करने। वैसे भी वे इस प्रकार वर्षमें कई बार पुण्यस्थलोंकी यात्रा कर आते हैं। पंढरपुर, डाकोरजी, वृन्दावन यदि वर्षमें एक बार न जायँ तो उन्हें बेचैनी

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

होती है। इस बार तो चित्त बहुत अशान्त था उनका, अतः घरसे निकल पड़े थे। मथुरामें विश्रामघाटपर स्नान करके सन्ध्याकी उन्होंने और जब चलनेको हुए तो देखा कि दूर सिढ़ियोंके ऊपर बैठा एक फक्कड़ उन्हें पुकार रहा है।

'मैं तेरे लिये आकर बैठा हूँ और तू देखता तक नहीं।' लंबी-दुबली देह, उलझे रूखे केश, कमरमें मैली-सी लँगोटी और पूरे शरीरमें लिपटी व्रजरज। उस अवधूतका रंग गोरा या साँवला, यह कहना भी कठिन था। कोई चिह्न नहीं, जिससे उसका सम्प्रदाय जाना जा सके।

'बैठ यहाँ!' गिरधरलालने समीप जाकर प्रणाम किया तो अवधूतने उन्हें समीप ही सीढ़ीपर बैठनेका आदेश किया। 'तू भटकता कहाँ है? मेरे कुलका है तू?'

'प्रभो!' गिरिधरलाल सहसा भावक्षुब्ध हो उठे। 'वत्स! तुम मेरे कुलके नहीं हो।' सभी महापुरुषोंसे यह सुनते-सुनते वे निराश हो गये थे। एक सतने उन्हें अपने कुलका कहा तो सही।

'आनन्दकी शुद्धि कर! आनन्दकन्दका आश्रय ले!' फक्कड़ खुलकर हँस पड़े।

गिरिधरलालके नेत्र अश्रुपूर्ण थे। हाथ उन्होंने जोड़ रक्खे थे। किंतु उनकी भङ्गिमासे स्पष्ट था कि अभी महात्माकी बात उन्होंने समझी नहीं है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'देख, रोटी खाये बिना काम तो मेरा भी नहीं चलता।' अवधूत हँसते जाते थे और कहते जाते थे—'कौन कैसे कमाता है, उसके घरका चूल्हा और बर्तन कैसा है, साधु यह सब पूछकर भिक्षा नहीं लिया करता। भिक्षामें मिला अन्न साधुके लिए पवित्र है। इस अन्नशुद्धिको समझता है तू?'

'ठीक-ठीक तो नहीं समझता।' गिरिधरलालने धीरेसे कहा।

'सीधी बात है, पेट भरनेके लिए—जीवन-निर्वाह मात्रके लिए भोजन करो, अन्नमें स्वाद मत लो। आनन्दके लिए भोजन मत करो तो अन्न शुद्ध!' अवधूत फिर ठहाका लगाकर हँसे—'आहार-शुद्धि हो गयी, केवल आहारसे आनन्द लेना बंद कर दो। आहारमें आनन्द लो; किंतु स्वादका आनन्द नहीं, वह प्रसाद है—श्रीकृष्णचन्द्रका, इसका आनन्द लो तो आहारकी परम शुद्धि हो गयी।'

गिरधरलालके नेत्र चमक उठे। आहार-शुद्धि इतनी सरल होगी, यह तो बात ही कभी उनके ध्यानमें नहीं आयी थी।

'नाक पकड़कर बैठनेकी आवश्यकता नहीं है।' अवधूतका स्वभाव बार-बार हँसना था, सो वे हँस रहे थे। क्रिया आवश्यक है, इसलिए करो। आनन्द पानेके लिए क्रिया मत करो। क्रियामें आनन्द मत लो, इसमें

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आनन्द लो कि तुम श्यामसुन्दरके लिए क्रिया करते हो। प्राणमय-कोषकी शुद्धि इतनी ही है।'

'भावनाके द्वारा मनोमयकोषकी शुद्धिसे प्राणमयकोष एवं अन्नमयकोषकी शुद्धिका स्वरूप आज समझा।' गिरिधरलालने कहा नहीं, केवल सोचा मनमें।

'मनके पीछे लाठी लेकर मत पड़ो।' अवधूतने इस बार चोंका दिया—'उसे अपनी उधेड़-बुन करने दो। केवल इतना ध्यान रक्खो कि मनोराज्यमें, मनकी कल्पनाओंमें तुम्हें आनन्द नहीं लेना है। आनन्द तुम लोगे केवल तब, जब तुम्हारा मन नन्दनन्दनके विषयमें चिन्तन करेगा। तुम्हारे रस लिए बिना वह भटकता है तो भटका करे। आनन्दको पृथक करो और मनोमयकोष शुद्ध हुआ धरा है।'

'तनिक कठिन बात है; किंतु बहुत कठिन नहीं लगती।' गिरिधरलाल सोचने लगे—'अन्ततः कुछ अभ्यास तो साधन मार्गमें करना ही होगा।'

'बुद्धिके विचारोंमें भी आनन्द मत लो!' अवधूतने आगे समझाया—'नया ज्ञान, नवीन उद्भावना बुद्धिके नये चमत्कार—इनमें भी आनन्द मनाना बंद करो। बुद्धि जबतक कोई नया प्रकाश श्रीकृष्णके रूप, गुण, लीलाके विषयमें न दे, दूसरे किसी विषयमें चाहे जितना अद्भुत ज्ञान मिले, उसे नीरस बन जाने दो। विज्ञानमयकोष इस प्रकार शुद्ध हो जायगा।'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'तुम्हारा मार्ग आनन्दमार्ग है। दुःखी मत हो। चिन्ता मत करो। खिन्न मत हो।' अवधूत दृढ़ स्वरमें इस बार कह रहे थे—'हँसना सीख लो और उद्धार हो गया, चिन्ता दुःख आवें तो ठहाका लगाकर हँसो। चञ्चल कन्हाई तुम्हें छकाना चाहता है। वह तुम्हारा मुख गम्भीर फूला हुआ देखकर हँसना चाहता है। उसके खिले हँसते मुखकी बात सोचो।'

'लेकिन भगवन्!' गिरधरलालने बीचमें ही प्रार्थना की—'मनमें विकार भी तो आते हैं।'

'तब कन्हाई कहीं पास ही होता है। वह नटखटपनपर उतर आया है और छकाना चाहता है।' अवधूत हँसे—'वह पेट पकड़कर हँसते-हँसते दुहरा हुआ जाता है और तुम बुद्धू बन रहे हो। ऐसे समय अधिक जोरसे हँसो और फिर देखो कि विकारका कैसा कचूमर बनता है।'

गिरधरलालने मस्तक भूमिपर रक्खा। जब उन्होंने सिर उठाया, अवधूत उछलते-कूदते किलकते एक ओर भागे जा रहे थे।



anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gya

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मैं श्राद्ध करूँगा

'पिताजी आज बहुत प्रसन्न दीखते हैं आप ?'

'मेरा पौत्र आज मुझे उपहार देनेमें जुटा है।'

'अच्छा, तो धूलिकी मुट्ठी तू पिताजीको दे रहा है ?' नन्हें बच्चेकी ओर प्रसन्न भावसे उसके युवा पिताने देखा। तुझे देनेके लिए और कोई भली वस्तु नहीं मिली !'

'वह कुछ दे तो रहा है।' वृद्ध अपने पौत्रके द्वारा मुट्ठी भरकर दी गयी धूलिको हाथपर बड़े उल्लाससे ले रहे थे। बच्चा अपने पितामहको धूलि देकर खूब प्रसन्न हो रहा था। 'जो वह दे सकता है, दे रहा है। अपनी समझसे मुझे संतुष्ट करनेका प्रयत्न कर रहा है। किंतु तुम तो अपने पिताको मरनेपर तिल-जल भी देनेको राजी नहीं हो।'

— 'मैं जीवित पिताकी सेवामें ही विश्वास करता हूँ।' युवक गम्भीर हो गया। वह सुधारवादी है और उसका श्राद्ध, मूर्तिके द्वारा भगवत्पूजा आदिमें विश्वास नहीं है। वह जानता है कि उसके इस विचारसे उसके वृद्ध पिता दुखी रहते हैं ; किंतु मनुष्यकी आस्था तो अपनी होती

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है। पिता मन्दिर जाते हैं, घरमें पूजा करते हैं। अभी तीर्थयात्रापर गये थे। वह उनकी आस्थामें बाधा नहीं बनता ; किंतु अपनी आस्था भी वह छोड़नेको प्रस्तुत नहीं है और न पिताको कोई झूठा आश्वासन ही देना चाहता है।

'पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः।'

—पिता इस गीताके वचनको पता नहीं क्यों पकड़े बैठे हैं। गीतामें उसकी आस्था है ; किंतु गीताके कुछ स्थल उसको ठीक नहीं लगते। वह आर्यसमाजकी शैलीसे गीताको समझता है। फिर यह वचन तो श्रीकृष्णका नहीं है। क्या हुआ कि श्रीकृष्णने इसका खण्डन नहीं किया। बचन तो यह अर्जुनका है और अर्जुन उस समय मोहग्रस्त था।

अनेक बार पिता इस प्रसङ्गको उठाते हैं। आज भी उन्होंने यही प्रसङ्ग उठा लिया। मनुष्यका उत्थान-पतन, उसकी उच्च या अधोगति अपने कर्मोंसे होती है। पुत्रके दिये पिण्डके बिना पिताकी अधोगति होगी, यह कोई ठीक बात नहीं है।

पिता जानते हैं कि उनका पुत्र हठी है। अतः बात उन्होंने आगे बढ़ायी नहीं।

× × ×

'पिताके ही रक्त-मांससे पुत्रीका भी निर्माण होता है। पुत्र और पुत्री समान हैं। पिताकी सम्पत्तिमें

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोनोंका अधिकार समान होना चाहिए । यह तर्क भोगवादियोंका है।' उस दिन हिंदू-उत्तराधिकार-बिलके विरोधमें जो सभा हो रही थी, उसमें एक विद्वान् वक्ता कह रहे थे।

'हिंदूधर्म भोगवादी नहीं है । हम मानते हैं कि जो उपार्जन करे, उसीका उस उपार्जित सम्पत्तिमें अधिकार है। दूसरे किसीका उस सम्पत्तिपर कोई अधिकार नहीं। फिर वह उसका पुत्र हो, पुत्री हो या और कोई हो।' वक्ताने अपनी बात आगे बढ़ायी।

'हिंदू-उत्तराधिकार-बिल'का वह समर्थक नहीं है; किंतु उसके विरोधके आधार भिन्न हैं। वक्ताकी बातने उसे चौंका दिया। जो उपार्जित करे, सम्पत्ति उसकी, यह बात उसे सर्वथा उचित और तर्कसङ्गत लगी।

'आप किसीको कुछ रुपये दे दें और उनसे वह कोई दुष्कर्म करे, उसके दुष्कर्ममें आपकी आर्थिक सहायता आपको पापका भागी बनायेगी या नहीं ?' वक्ताने प्रश्न किया।

'निश्चय बनायेगी।' वह आवेशमें बोल उठा।

'पिता जब अपना उपार्जन पुत्रके लिए छोड़ जाता है, पुत्र उसका सदुपयोग या दुरुपयोग करेगा तो पुत्रके कर्मोंका भाग पिताको मिलेगा ही।' वक्ताकी बात अस्वीकार नहीं की जा सकती थी। वे कह रहे थे—'पुत्री उस धनका उपयोग करनेमें स्वतंत्र रह नहीं सकती। उसे

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

त्री अपने पतिका अनुगमन करना है। उसका पति जैसे चाहेगा, वैसे धनका उपयोग करेगा। जब कि धनके उपार्जनकर्ताको अपने अनुकूल संस्कारोंसे संस्कृत करनेका कोई अवकाश जामाताके लिए मिला नहीं है।'

'सीधी बात है, पैतृक सम्पत्ति पुत्रको केवल उपभोगके लिए नहीं मिलती। वह मिलती है श्राद्ध-परम्परा बनाये रखनेके लिए।' वक्ताने वक्तव्य समाप्त करते हुए कहा—'पैतृक सम्पत्ति न पुत्रकी उपभोग्य है, न पुत्रीकी। पैतृक ऋणको देकर जो बचे, वह है तर्पण-श्राद्धको बनाये रखनेके लिए। अतः जो श्राद्धके अधिकारी नहीं हैं, उन्हें वह सम्पत्ति मिलनी चाहिए—यह तर्क ही सम्पत्तिके उत्तराधिकार-उद्देश्यके विपरीत है।'

उस दिन वह सभासे गम्भीरचित्त घर आया था। जबसे 'हिंदू-उत्तराधिकार-बिल'का प्रश्न उठा है, उसने इसपर बहुत विचार किया है। याज्ञवल्क्य-स्मृतिका दायभाग उसका पढ़ा हुआ है। याज्ञवल्क्यके निर्णयका मूलाधार ही यह है कि श्राद्धका किसके न रहनेपर कौन उत्तराधिकारी होता है।

'पिताकी इच्छापूर्ति नहीं करना है तो पिताकी उपार्जित सम्पत्तिके उपभोगका तुम्हें क्या अधिकार है?' यह प्रश्न सीधा उसके हृदयमें उठा। वह सदाचारी है, संयमी है और लोग उसे ईमानदार समझते हैं। अपने साथ ही वह कैसे बेईमान बन सकता है?

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gya

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'श्राद्ध ?' किंतु श्राद्धकी बात उसकी समझमें आती नहीं है। बहुत उलझनें लिये उस दिन बड़ी कठिनाईसे वह सो सका।

× × ×

'भगवन्! हमारे वंशधर तो अकृतज्ञ, हीनसत्त्व, अश्रद्धालु निकल गये।' क्षीणकाय, दीनवदन, बाष्पपूरित-लोचन कुछ पुरुष थे। उनका देह अद्‌भुत था। श्वेतवर्ण मेघोंसे ही जैसे उनके सर्वाङ्ग निर्मित हों। वे एक सशक्त, सत्ताधारी, मणिभूषणभूषित तेजोदेह पुरुषके सम्मुख बद्धाञ्जलि खड़े थे।

अद्‌भुत दृश्य था। वहाँ न घर थे, न नगर। कोई वृक्ष, लता भी दृष्टिमें नहीं आती थी। केवल मेघदेह व्यक्तियोंका समूह था वहाँ और जैसे वे शून्यमें ही स्थिर हों। उनमें कुछ सुपुष्टकाय, प्रसन्नवदन भी थे; किंतु अधिकांश दुर्बल थे और दुखी लगते थे।

'आप सब जानते हैं कि अर्यमाको अपनी ओरसे कुछ करनेका अधिकार नहीं है।' वे सत्ताधारी बोले—'मैं केवल कव्यको [श्राद्धके भागको] उचित अधिकारीतक पहुँचा मात्र सकता हूं। मुझे स्वयं दुःख है कि मेरे पितृलोकके निवासी पृथ्वीकी श्रद्धासे वंचित होकर क्षीणकाय होते जा रहे हैं और यह लोक निरन्तर निर्जनताकी ओर बढ़ रहा है।'

'अभी धरापर कुछ श्रद्धा शेष है। कुछ लोग श्राद्ध करते हैं। यद्यपि उसका भी अधिकांश विधिच्युत होनेसे

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

व्यर्थ जाता है, फिर भी कुछ सफल होता है।' वे क्षीणकाय कह रहे थे—'उसमें कुलोच्छिन्न, श्राद्ध-वर्जित हम-जैसोंके लिए भी एक अञ्जलि जल, एक पिण्ड होता है और अब हम सबका आधार वही रहा है; किंतु वह विनाशोन्मुख है। यदि…।'

'आप जानते हैं कि यहाँ पाथेयवर्जित प्रतीक्षा सम्भव नहीं है।' अर्यमाने खिन्न स्वरमें कहा—'मरणोत्तर-क्रिया अपूर्ण रहनेपर प्राणी प्रेतयोनिमें रहता है और श्राद्ध-वर्जित पितर भी तबतक प्रेतयोनि पाता है, जबतक उसके अपने कर्म फलोन्मुख न हों। उन कर्मोंका जिन प्राणियोंसे सम्बन्ध है, वे भी प्राणी सुख-दुःख, संयोग-वियोग देनेकी अनुकूल अवस्थामें न आ जायँ। कव्ययुक्त प्रतीक्षा पितृलोकमें और कव्यवर्जित प्रतीक्षा-यातना प्रेतलोकमें चलती है।'

अर्यमाकी बात वज्राघात ही थी उन दुर्बलदेह लोगोंके लिए। उनमें एक अद्भुत आर्तनाद फैला—इतना अद्भुत और व्यापक कि वह किसीके लिए असह्य था। सहसा उसकी निद्रा भङ्ग हो गयी। उसने पाया कि वह लगभग पसीनेसे भींग चुका है।

× × ×

'तुमने स्वप्नमें सचमुच पितृलोकके ही दर्शन किये हैं।' दूसरे दिन जब वह एक साधुके पास गया और उन्हें उसने अपने स्वप्नकी बात सुना दी, तब वे बोले—

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'स्वप्नमें तुमने जो देखा-सुना है, शास्त्र उसे तथ्य स्वीकार करता है।'

ये महात्मा हैं तो सनातनधर्मी ; किंतु इनमें उसकी श्रद्धा है। ये उसे बहुत उदार, विवेकशील, विद्वान् और अपने शुभ-चिन्तक लगते हैं। जब भी उसे कोई मानसिक उलझन होती है, प्रायः इनसे वह सम्मति लेना पसन्द करता है ; क्योंकि अपने सहयोगियोंमें तो वह स्वयं सबसे अधिक अध्ययनसम्पन्न है।

'श्राद्ध मृत प्राणीको प्राप्त होता है ?' उसने सीधा ही प्रश्न किया।

'जीवित प्राणीको क्या प्राप्त होता है, यही बात तुम पहले सोचो।' महात्माने कहा—'तुम्हारा पेट तो रोटी और आम दोनोंसे भर सकता है ; किंतु तुम्हारी इच्छा आम खानेकी हो तो वह रोटी खानेसे पूरी तो नहीं होगी।'

'मैं आपका तात्पर्य समझ नहीं सका।' उसने अपनी उत्सुकता व्यक्त की।

'मैं यह बता रहा हूँ कि भूख और लालसा दो भिन्न वस्तु हैं। भूखेको स्थूल भोज्य पदार्थ चाहिए। लालसा-वालेकी तृप्ति पेटकी तृप्ति नहीं है, मनकी तृप्ति है।' महात्माने समझाया—'मृत प्राणीके पास स्थूलदेह नहीं होता, इसलिए उसे स्थूल भूख नहीं लगती। स्थूल पदार्थ सीधे उसे मिले, इसकी उसे कोई आवश्यकता नहीं है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किंतु सूक्ष्मशरीर—मन उसके पास होता है। इसलिए लालसा उसमें होती है। उसकी लालसा तृप्त न हो तो वह क्षुधातुरके समान दुखी रहता है और क्षीण होता है। इसलिए उसकी लालसा तृप्त करनेका उपाय होना चाहिए।'

वह चुपचाप सुनता रहा। महात्माने भी उसे कुछ मिनट दिये सोचने-समझनेके लिए और तब बोले—'जब तुम्हारे पास स्थूलदेह है, तुम्हें आम खिलाकर तुम्हारी लालसा दूर कर दी जाय—यह सीधा उपाय है। आमका कोई अंश तब भी तुम्हारे सूक्ष्मदेहको नहीं मिलता। मिलता तो वह स्थूलदेहको ही है। सूक्ष्मदेहको केवल सन्तोष मिलता है कि हमने आम खा लिया, किंतु स्थूल आमका उत्सर्ग किये बिना यह सन्तोष करा देनेका उपाय नहीं है।'

'इसीलिए ब्राह्मणको प्रतिनिधि बनाकर—उसे भोजन कराके या कुशपर पिण्ड देकर सूक्ष्मदेही पितरकी लालसा तुष्ट करनेका प्रयत्न किया जाता है।' उसने स्वयं यह बात कही—'उपाय तो ठीक है। प्रतिनिधिके मानापमानसे पूरा राष्ट्र अपना मानापमान मानकर तुष्ट या रुष्ट होता है, यह ता प्रत्यक्ष सत्य है; किंतु भोजन ब्राह्मणको ही क्यों ?'

'भूखे दरिद्रको क्यों नहीं! यह भी कह जाओ।' महात्माने हँसते हुए कहा—'भूखोंको, दरिद्रोंकी भोजन करानेका निषेध कहीं नहीं है। किंतु श्राद्ध है श्रद्धापर

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gya

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आधारित। पितर हमको-तुमको दीखते नहीं हैं। उनका प्रतिनिधि कौन बन सकता है ? किसे प्रतिनिधि बनानेपर उससे वे तादात्म्य कर सकेंगे, यह बात शास्त्रैकगम्य है। श्राद्धके लिए सभी ब्राह्मण भी उपयुक्त नहीं होते। उनमें भी उचित पात्र ढूँढ़ना पड़ता है। इसीलिए श्राद्धमें अधिक लोगोंको भोजन करानेका निषेध है। एक, तीन या अधिक-से-अधिक पाँच, बस। पीछे चाहे पूरी जाति या नगरको ही खिला दो ; किंतु श्राद्धाङ्गरूपमें संख्या बढ़नी नहीं चाहिए।'

'आज आज्ञा दें। मेरे पिता बीमार हैं दो दिनसे, और इस समय उन्हें आश्वासन देना आवश्यक है।' उसने महात्माको प्रणाम करके अनुमति ली।

× × ×

'पिताजी ! आप मेरे अबतकके दुराग्रहको क्षमा करें।' घर आकर उसने सीधे पिताके चरणोंमें मस्तक रख दिया। रुग्ण पिताने खींचकर उसका मस्तक अपने वक्षसे लगाया। वह कह रहा था—'मैं श्राद्ध करूँगा। मुझे अपनी भूल ज्ञात हो गयी।'

'मेरे बच्चे !' पिताका कण्ठ भर आया। उनके नेत्रोंसे अश्रुके विन्दु टपके। लगा कि उनके हृदयपर जो एक आशङ्काका भारी पत्थर धरा रहता था, भाप बनकर उड़ गया है।

'मैं विधिपूर्वक श्राद्ध करूँगा।' वह दृढ़निश्चयी है और अध्ययनशील है। जब एक बार उसने निश्चय कर

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लिया, कोई मिथ्या सङ्कोच उसे बाधा नहीं पहुँचा सकता। 'आप स्वस्थ हो जायें और अभी खूब अधिक दिनोंतक मुझे अपना स्नेह देते रहें। किंतु इस ओरसे निश्चिन्त रहें। मैं यहाँ श्राद्ध करूँगा और गया जाकर भी श्राद्ध करूँगा। आपने ही तो एक बार मुझे बतलाया है कि गया जाकर पिण्डदान कर देनेसे पितरोंकी अक्षय तृप्ति हो जाती है। मेरे पितर कव्यवर्जित होकर पितृलोकसे न गिरें, यह अक्षय व्यवस्था मैं अपने जीवनमें ही करूँगा।'



anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gya

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुबुद्धि

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा ।

वह कौन है, कहाँका है, कैसे आया है और क्यों आया है इस दुर्गम प्रदेशमें—कोई नहीं जानता। सच तो यह है कि इन याक तथा भेड़ोंके झुंड चराते, इधर-उधर तम्बू लगाकर दस-बीस दिन रुकते हुए घूमनेवाले तिब्बती लोगोंके पास उसका परिचय जाननेका कोई साधन भी नहीं है। वह उनकी भाषा नहीं जानता और वे लोग उसकी गिटपिट समझ नहीं पाते।

तीन-चार दिनके अंतरसे वह उनके पास आता है। एक ही क्रम है उसका—चुपचाप सोनेका एक सिक्का फेंक देगा तम्बूवालोंके सामने और अपना विचित्र बर्तन रख देगा। उसे ढेर-सा मक्खन, दूध और दही चाहिए और कुछ सत्तू भी। उसकी अभीष्ट वस्तुएँ सरलतासे मिल जाती हैं। एक बार किसी तंबूवालेने चमड़े, चँवर तथा मांस सामने लाकर रख दिया—कदाचित् इन वस्तुओंका भी वह ग्राहक बन जाय; किंतु उसने अपनी

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भाव-भङ्गीसे प्रकट कर दिया कि उसे यह सब नहीं चाहिये।

तिब्बतकी सर्दीमें दूध-दही महीनों खराब नहीं हुआ करते। वह खरीदे मक्खन, दूध आदि उठा लेता है और चुपचाप चला जाता है—चला जाता है दुर्गम पहाड़ोंकी ओर, उन पहाड़ोंकी ओर जिधर जानेमें ये पर्वतीय लोग भी हिचकते हैं।

सुना है वहाँ बहुत दूर किसी हिमाच्छादित गुफामें एक कोई पुराना भारतीय 'लामा' रहता है। बड़ा सिद्ध लामा (योगी) है वह। अवश्य यह गोरा साहब उसीके पास रहता होगा।

तिब्बतके इन सुदृढ़काय श्रद्धालुजनोंमें इस गोरे साहबके लिए सम्मानका भाव उत्पन्न हो गया है। ऊनी पतलून, ओवरकोट, टोप आदि पहिने उनके बीच सप्ताहमें एक बार आनेवाला यह साहब—उसके सम्बन्धमें बहुत कुतूहल है इनके मनमें। किंतु कोई साधन नहीं साहबसे कुछ जाननेका।

हिमकी शीतलतासे उसका मुख, उसके हाथ झुलसकर काले-से पड़ गये हैं—यह तो स्वाभाविक बात है; किंतु उसका एक कान नुचा-कटा है। आधी नासिका है ही नहीं। एक नेत्र इस प्रकार फटा है जैसे किसीने नोच लिया हो। कपोल दोनों कटे-फटे हैं और मुखमें सामनेके दाँत हैं ही नहीं।

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'वह अवश्य कभी रीछसे भिड़ गया होगा।' इन पर्वतीयोंके जीवनकी जो सामान्य घटना है, उसीकी कल्पनाकी गोरे साहबकी आकृतिको देखकर इन्होंने—'रीछने उसे नोचा-खसोटा और लड़ाईमें पहाड़से वह लुढ़क गया नीचे। दाँत पत्थरकी चोटसे टूट गये; किंतु रीछसे उसके प्राण बच गये।' अपनी कल्पनाको उन्होंने घटना मान लिया है और गोरे साहबके इस साहसने उन्हें उसके प्रति अधिक श्रद्धालु बनाया है!

× × ×

'कोई योगी—हिमालयका कोई योगी ही मेरी इच्छा पूरी कर सकता है।' उसका निश्चय भ्रान्त था, यह आप नहीं कह सकते—'वह जैसे भी मिलेगा, मैं उसे पाऊँगा और जैसे भी खुश होगा, खुश करूँगा।'

वह कैसे पहुँचा तिब्बतके इन पर्वतोंतक और कैसे उन हिमगुफामें स्थित योगीके दर्शन कर सका, एक लम्बी कथा है। उसे यहाँ रहने दीजिये। तिब्बती चरवाहोंकी जनश्रुति भारतके पर्वतीय जनोंमें प्रायः पहुँच जाती है और वहीं उसने भी दुर्गम पर्वतकी गुफाके 'लामा'की चर्चा सुनी थी। जिसे कष्ट डिगा नहीं पाते और मृत्यु कम्पित नहीं कर पाती—कौन-सा लक्ष्य है, जिसे वह प्राप्त नहीं कर सकता।

गुफातक वह पहुँचा और आज तीन महीनेसे इस गुफामें ही डेरा डाले पड़ा है। साथ जो सोनेके सिक्के ले

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आया था, उनकी संख्या घटती जा रही है और वह समझ नहीं पाता, यह क्या करे।

गुफाके भीतर योगी हैं। एक शिलापर स्थापित मूर्तिके समान निष्पन्द, निश्चेष्ट, स्थिर आसीन। वह नहीं कह सकता, वह योगीका जीवित शरीर है या निष्प्राण। उसने पढ़ा है—भारतीय योगी प्राणको रोककर वर्षों निष्प्राणके समान रह सकते हैं और कोई निष्प्राण देह भी इस हिमप्रदेशमें विकृत तो होनेसे रहा।

गुफा उसने स्वच्छ कर दी है। शिलापर मूर्तिके समान जो योगीका निश्चल देह है, डरते-डरते उसे उसने धीरे-धीरे साथ लाये स्टोवपर जल गरम करके तौलियेसे प्रक्षालित किया। अब तो तेल समाप्त होनेसे स्टोव उपेक्षित पड़ा है। इससे अधिक कोई सेवा वह इन मूर्तिप्राय महापुरुषकी सोच नहीं पाता।

प्रतीक्षा—प्रतीक्षा ही कर सकता था वह और अब संसारमें लौटकर करना भी क्या था। उसकी प्रतीक्षा न भी सफल हो, इस शिलातलपर आसीन योगीके पदोंमें अनन्तकालतक अविकृत पड़ा रहेगा उसका निष्प्राण शरीर। यहाँसे वह लौटेगा नहीं। ऐसा कुछ नहीं होना था। सृष्टिका एक संचालक है और वह दयासिन्धु है। दृढ़व्रतीको उसने कभी निराश नहीं किया है। उस दिन वह गुफा प्रकाशसे भर उठी। शिलातल-समासीन योगीका शरीर-जैसे सूर्यके समान प्रकाशपुञ्ज बन गया। देखना सम्भव नहीं था उनकी ओर। गोरा साहब हाथोंसे नेत्र

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ढककर, घुटनोंके बल भूमिपर सिर रखकर प्रणत हो गया उन तेजःपुञ्जके सम्मुख।

'वत्स !' प्रणवके सुदीर्घ गम्भीर नादके अनन्तर श्रवणमें जैसे अमृतधारा पहुँची। एक क्षण, केवल एक क्षण रुककर वे सर्वज्ञ उसीकी भाषामें उसे सम्बोधित कर रहे थे। आँसुओंसे भींग गया उसका मुख और वह बोलनेमें असमर्थ हो गया।

'मैं यहूदी हूँ। अपने घरसे, देशसे निर्वासित असहाय, अत्याचारका मारा एक अधम।' कठिनाईसे गद्गदकण्ठ वह बोला—'आपकी शरण आया हूँ। आपके अतिरिक्त उन पिशाचोंसे कोई मेरा प्रतिशोध नहीं दिला सकता।'

योगी सुनते रहे नीरव और वह कहता गया—'मैं जर्मन यहूदी देशके प्रति कभी अकृतज्ञ नहीं रहा ; किंतु हिटलरकी शक्तिसे आज संसार संत्रस्त है। उसके अत्याचारोंका किसीके पास प्रतीकार नहीं। फासिस्ट पिशाचोंने मेरी पत्नी—मेरे बच्चेकी जो दुर्गति की—वे उनकी हत्या कर देते तो मैं उन्हें क्षमा कर देता ; किंतु उन्होंने जिस प्रकार उन्हें मारा और मेरा यह शरीर—गीध मुर्दे नोचते हैं और मेरे जीवित शरीरको उन्होंने चिमटोंसे नोचा, हंटरोंसे पीटा ! मुझपर हुए अत्याचारोंकी सीमा नहीं है ! उनपर प्रलयकी वर्षा हो !' उसके नेत्र अङ्गार हो रहे थे और थर-थर काँप रहा था वह क्रोधसे।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'मैं यहाँतक पहुँच नहीं पाता ; किंतु मुझ गृहहीनकी जो सेवा, जो सहायता उदार पुरुषोंने की—मैं उनका कोई प्रत्युपकार नहीं कर सका। उन्होंने मुझे सम्मान दिया, सुविधा दी--मेरी शुश्रूषा की। आपका आशीर्वाद उनका उत्थान करे!' वह तनिक शान्त हुआ। 'अपने जीवनके लिए मुझे कुछ नहीं चाहिए।'

'भोले बच्चे!' स्निग्ध शान्त स्वर था उन महायोगीका। 'तुम अपने भूतकालको एक बार अनावृत देखो।'

जैसे वह कोई स्वप्न देखने लगा हो, उसी क्षण ऐसी अवस्था उसकी हो गयी।

× × ×

पशुओंके घेरेके समान कँटीले तारोंका घेरा और उसमें सैकड़ों स्त्री-पुरुष-बच्चे। वह दासप्रथाका युग—घोड़ेपर चढ़ा, हंटरोंसे उन्हें पोटता-हँसता निरंकुश रशियन जमींदार--पशुओंके साथ भी इतनी निर्दयता कोई कदाचित् ही करे।

वह एक शिशु गिरा और उसके पेटपर घोड़ेकी टाप पड़ी। फटसे निकल पड़ीं अँतड़ियाँ। उसकी असहाय माता, किंतु पिशाच घुड़सवारने उस अबलाको भी कुचल दिया घोड़ेके पैरोंके नीचे। अट्टहास करते उसके पीछे घोड़ेपर सवार उसके दोनों सहकारी और उस महिलाका पति कुछ कहने जब सम्मुख आया···

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किंतु चीत्कार कर उठा गोरा साहब। वह यह सब देखनेमें समर्थ नहीं था। उसकी सम्मोहन निद्रा भङ्ग हो गयी।

'दूसरा कोई नहीं, तुम स्वयं हो वह घुड़सवार!' योगीने शांत स्वरमें कहा। 'तुम्हारे सहकारी ही इस बार तुम्हारे स्त्री तथा पुत्र हुए थे।'

स्तब्ध रह गया वह। फटे-फटे नेत्रोंसे उन महातापसकी ओर देखता रह गया। वे कह रहे थे— 'वृद्धावस्थामें सद्बुद्धि आ गयी। तुमने जीवनका कुछ भाग पीड़ितोंकी सेवा एवं सहायतामें व्यतीत किया। अकेले तुम नहीं—आज तो तुम्हारे सहधर्मी भी उत्पीड़ित हुए हैं। उनकी भी लगभग ऐसी ही कथा है।'

'हे भगवान्!' दोनों हाथोंसे उसने सिर पकड़ लिया। उसे लगा कि गुफाकी भित्तियाँ घूमने लगी हैं।

'कोई दूसरा किसीको सुख-सम्मान नहीं देता। कोई दूसरा किसीको दुःख, पीड़ा या अपमान भी नहीं दे सकता। दूसरे केवल सुख या दुःखके निमित्त बनते हैं।' योगी स्नेहपूर्ण स्वरमें समझा रहे थे। 'तुम्हारे कर्म ही तुम्हारी ओर लौटते हैं और तुम्हें सुख या दुःख देते हैं।'

'दीवालपर मारे गेंदके समान!' वह अपने-आप बोल उठा था।

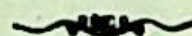
'हाँ! ठीक समझा तुमने!' योगी अब कह रहे थे— 'तुम अब क्या चाहते हो?'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किंतु अब वह क्या चाह सकता था? उसने कहा—'कितना मूर्ख था मैं! कितनी बड़ी थी मेरी कुबुद्धि!' और उसने उन महायोगीके चरणोंपर मस्तक रख दिया।

तिब्बतके याक एवं भेड़ोंके चरवाहोंके किसी तंबूके समीप उनका परिचित गोरा साहब आगे कभी नहीं आया। उन्होंने अपना संतोष कर लिया—'वह कहीं पर्वतसे गिर गया या बर्फमें दब गया।' वह भी एक गुफामें साधना-मग्न हो गया, यह जाननेका साधन भी क्या था उनके पास।



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नरक क्या ?

'को वास्ति घोरो नरकः ? स्वदेहः ।'

'नारकीय प्राणी !' कलिंग-नरेश द्युमान् ग्लानिसे गले जा रहे थे। शब्द नहीं, वज्रसे भी तीक्ष्ण अस्त्र थे वे। ऐसे अस्त्र जो मर्मपर क्षण-क्षणमें आघात करके उसे विदीर्ण कर रहे थे !

राज्यका अमर-आकांक्ष्य वैभव, दिगन्तधवल सुयश, विद्वानोंके द्वारा प्रशंसित प्रतिभा—जैसे सब सारहीन हो गये ये आनन्दके उपकरण। बन्दियोंका सुयशगान अपना उपहास प्रतीत होता था। मागध जब वंश-विरुदावलीका वर्णन करते—जी चाहता, कहीं ऐसे स्थानमें जा छिपें, जहाँ किसीको मुख न दिखाना पड़े। सूत प्राचीन इतिहासका वर्णन करते हुए जब वर्तमानके वर्णनपर आने लगते, नरेश व्याकुल होकर उठ जाया करते राजसभासे।

'आप सब एक अयोग्यकी प्रशस्तिमें अपनी प्रतिभाका दुरुपयोग क्यों करते हैं ?' विनय नहीं, अन्तरका सच्चा खेद होता था वाणीमें। किंतु परम्परा ही ऐसी बन गयी

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

थी कि नरेशके सम्मुख आनेवाले कवि, ज्योतिषी तथा अन्य विद्वान् सबसे अधिक वाक्य-व्यय नरपतिकी प्रशंसामें ही करते थे और इससे अत्यधिक वेदना होती थी कलिंग-नरेशको। पर कोई उनका निषेध सुनता कहाँ है। लोग तो उसे महाराजकी शिष्टता—विनय मान लेते हैं।

'आप अश्वमेधयज्ञ सम्पन्न करें!' कुलपुरोहित अपने प्रबल-पराक्रम यजमानको किसी प्रकार उसकी आधि (मनोरोग) से मुक्ति दिलानेका प्रयत्न कर रहे हैं। 'यदि कोई प्राक्तन पाप होंगे तो उनका प्रायश्चित हो जायगा। अश्वमेध महापापोंका भी परिहारक है। आपका प्रताप दिग्विजय करनेको पर्याप्त है।'

'दिग्विजयकी मुझे चिन्ता नहीं है। कलिंगके शूर पराभव सुननेके कभी अभ्यस्त नहीं रहे। विजयश्रीके कर उनके धनुषपर ज्या चढ़ते ही यशोमाल्य लिए उन्हें अलंकृत करने उठ जाते हैं। नरेशने उत्साह नहीं दिखलाया, किंतु एक अनधिकारी नारकीय प्राणी सम्राट् बन जायगा केवल अपनोंके शौर्यके सहारे! धरा रसातल चली जायगी। धर्म कहाँ आश्रय ढूँढ़ेगा! द्युमान्की दिग्विजय—असुरोंकी विजयसे भिन्न होगी क्या वह? मैं सम्राट्पदकी कल्पनासे भी काँप उठता हूँ प्रभु!'

'कोई और उपयुक्त अनुष्ठान या आराधना!' पुरोहितको किसी भी प्रकार अपने इस यजमानके चित्तको आश्वासन देना है। आश्वासन ही तो देना है—यह श्रद्धाप्राण, सदाचार-संयम-तत्पर, मर्यादाकी मूर्ति-

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

द्यु मान्—इसमें कलुष सम्भव कैसे हैं ? प्रजा जिसे प्राणके समान लगती है, सम्यक् सदाचारके निर्वाहके लिए जिसने अङ्गपतिका क्रोध स्वीकार किया; किंतु अपने एक पत्नीव्रतको त्यागकर उनकी सौन्दर्यमयी दुहिताका पाणिग्रहण जिसे प्रिय नहीं लगा, जो शत्रुके भी क्लेशसे विकल हो उठता है, उसमें कलुष सम्भव है ?

'नारकीय प्राणी !' किंतु नरकसे जो संसारमें आते हैं, उनके लक्षण भी तो शास्त्रोंने बतलाये हैं। द्यु मान्में क्रोध, स्वार्थ, हिंसा-प्रवृत्ति, विषय-लोलुपता कुछ भी तो नहीं है। द्यु मान् यदि स्वर्गसे नहीं आया है तो संसारमें फिर कोई स्वर्गसे आया प्राणी नहीं हो सकता।

'नारकीय प्राणी !' जिनके श्रीमुखसे ये शब्द निकले थे, उनपर अविश्वास करनेका भी साहस नहीं राजपुरोहितमें। वे अवधूतश्रेष्ठ निदाघ—महर्षिगण उनकी चरण-वंदना करते हैं। उन नित्य निःस्पृह, निरंतर आत्मलीनमें न रोष सम्भव है और न प्रमाद वहाँ प्रश्रय पा सकता है।

राजपुरोहित शास्त्रज्ञ हैं—गम्भीर विद्वान् पूर्व-मीमांसाशास्त्रके। अनेक बार ऋषियोंने अपने यज्ञोंमें उन्हें ऋत्विक् अथवा अध्वर्यु वरण करके सम्मानित किया है। वेदके रहस्य एवं धर्मके तत्त्वको जाननेका गर्व वे नहीं करते, ठीक-ठीक धर्मका तत्त्व भगवान् नर-नारायण ही जानते हैं, किंतु जितना ज्ञान उनका है, अपने यजमानमें उन्हें अल्पतम पाप भी नहीं दीखता; किंतु

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महर्षि निदाघकी वाणी असत्यका स्पर्श करेगी, धर्मराज भी ऐसा सोचनेका साहस नहीं कर सकते।

'यह ठीक है कि युवराजका अध्ययन अभी समाप्त नहीं हुआ।' नरेशने बाधा दी कुलपुरोहितके चिन्तनमें—किंतु आपके करोंकी छायामें सिंहासनपर उन्हें बैठना मात्र ही तो है? 'आप! आप सिंहासन-त्याग·······।' पूरी बात आशङ्काके कारण मुखसे निकल नहीं सकी।

'आप—जैसे वेदज्ञ कहते हैं तुषाग्निको शरीर समर्पित कर देना मानवका सबसे बड़ा प्रायश्चित्त है।' नरेशने स्वस्थ स्वरमें कहा—'तीर्थराजमें गङ्गा-यमुना जहाँ अङ्कमाल देती हैं, मकरके आगामी पुण्यपर्वपर इस अधमकी भस्म वहाँ परिपूत बने, ऐसी अनुमति प्रदान करें।'

'कोई इसे स्वीकार नहीं करेगा। प्रजा, सामन्त, विप्रवृन्द एवं आश्रितजन कोई नहीं।' राजपुरोहित दृढ़ स्वरमें बोले—'अल्प पापमें अधिक प्रायश्चित्त निर्दिष्ट करनेवाला ब्राह्मण नरकगामी होता है। यदि यही प्रायश्चित्त आवश्यक हो तो इसका विधान महर्षि निदाघको ही करना चाहिए।'

× × ×

'महर्षि निदाघके राज्यमें पधारनेका समाचार मिला है!' उस दिन राजपुरोहितने ही सोत्साह सूचित किया था। वे दिग्वसन, अलक्ष्यलिङ्ग अवधूत—उनका कोई

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ठीक पता-ठिकाना हुआ करता है ? उन ज्ञानमूर्तिके दर्शन जिसे हो जायँ, सौभाग्य उसका। ऋषिगण भी सदा उन्हें कहाँ पहिचान पाते हैं।

उन्मत्त, जड़के समान अपनेको प्रदर्शित करनेवाले, गृहस्थके यहाँ गोदोहनकालसे अधिक किसी प्रकार न रुकनेवाले उन नित्य परिव्राट्से उपदेश-प्राप्तिकी आशा तो दुराशा ही है। वे कहाँ प्रवचन करते हैं ? किंतु उनके दर्शन ही क्या कम सौभाग्यके सूचक हैं।

एक अन्तेवासी उनके दर्शन समीपके वानप्रस्थाश्रममें कर आया था। उसने अपने गुरुदेवको सूचित किया और राजपुरोहितकी कलिंग-नरेशपर असीम कृपा तो सबको ज्ञात है। वे तत्काल राजसदन पहुँच गए थे—'अवश्य ही कुछ श्रम उठाना पड़ेगा उन्हें ढूंढ़नेमें।'

'वह श्रम हमारे सौभाग्यको शुभ्र करनेवाली तपस्या बनेगा !' नरेशने तत्काल रथ प्रस्तुत करनेकी आज्ञा दे दी।

कोई सेवक साथ नहीं लिया गया। राजपुरोहितने अपना एक ब्रह्मचारी अवश्य भेज दिया था पहिले ही। रथ वानप्रस्थ तपस्वियोंके आश्रमोंतक पहुँचा भी नहीं था कि वह ब्रह्मचारी मार्गमें लौटता मिला—'भगवान् भास्करके प्रधान पीठकी ओर महर्षि चले गए।'

एकसे दूसरे स्थानोंमें पूछते—पता लगाते अंतमें महर्षि निदाघ मिल गए थे। वे शाद्वल भूमिमें एक

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नारिकेल तरुकी छायाका आश्रय लेकर लेटे थे। एक हाथपर मस्तक रखकर शान्त पड़ा था उनका श्रीअङ्ग। रथ पर्याप्त दूर छोड़ दिया गया।

राजपुरोहितको आगे करके नरेश महर्षिके समीप मन्दगतिसे पहुँचे। भूमिमें पड़कर प्रणिपात किया सभीने। राजपुरोहितका ब्रह्मचारी भी साथ ही था और सारथि भी।

'नारकीय प्राणी!' महर्षिने तिरस्कारपूर्वक कहा और शीघ्रतापूर्वक उठकर खड़े हो गए। वे इतने वेगसे एक ओर दौड़ पड़े कि उनके पीछे दूसरेके लिए दौड़ना भी कठिन ही था। दौड़ना मर्यादाके अनुरूप भी नहीं होता।

'नारकीय प्राणी!' ठक् रह गए चारों-के-चारों व्यक्ति। वाक्य किसी एकको लक्ष्य करके नहीं कहा गया था; किंतु उसका लक्ष्य कौन था, यह निर्णय कोई समस्या नहीं थी। सूतको महर्षि सम्बोधन करते, यह संभावना नहीं थी। राजपुरोहित तथा ब्रह्मचारीके लिए महर्षि इस प्रकारके शब्दका उपयोग कर नहीं सकते थे। कुछ भी हो, वे दोनों ब्राह्मण थे और ब्राह्मणका अबोध शिशु भी रुष्ट हो जाय—स्रष्टाको भी वह रोष भारी पड़ता है। महर्षि विप्रका अपमान कर नहीं सकते थे।

'नारकीय प्राणी!' आगतोंमें जो मुख्य था, संबोधन उसीको लक्ष्य करेगा। नरेशको लगा कि दिशाएँ अंधकारमें डूब गयी हैं। वे मस्तक पकड़कर बैठ गए। राजपुरोहित बड़ी कठिनाईसे उन्हें रथपर बैठा सके उस दिन।

× × ×

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'महर्षि निदाघ कोणार्क-क्षेत्रमें ही हैं ! ' राजपुरोहितके ब्रह्मचारीने ही इस बार भी समाचार दिया था। कई ब्रह्मचारी तथा अनेक राजसेवक महर्षिका पता लगाने कई दिनोंसे चारों ओर घूम रहे थे ।

'हम पहिले भगवान् नारायणको नमस्कार करेंगे ।' कोणार्क पहुँचकर यद्यपि अवधूतका पता लग गया; किंतु राजपुरोहितने रथको देवधामकी ओर ले जानेका आदेश किया। भगवान् सूर्यकी विधिवत् अर्चना उन्होंने की और नरेशसे सम्पन्न कराई ।

'जगत्के परम प्रकाशक ! आपके चरणोंमें यह अज्ञानान्धकारमें डूबता ब्राह्मण प्रकाश-प्राप्तिकी कामनासे आया है।' पूजाके अंतमें राजपुरोहितने जब प्रार्थना प्रारम्भ की, केवल नरेश ही नहीं, मन्दिरमें उपस्थित समस्त जन विस्मित हो उठे। यह अद्भुत गंभीर स्वर— वैखरी वाणी तो नहीं है। हृदयसे उठती घनघोष-जैसी यह पश्यन्ती वाणी—'कोणार्कसे निराश लौटने नहीं आया यह विप्र। आपने अनुकम्पा नहीं की—श्रीविग्रहके सम्मुख प्राङ्गणमें इस शरीरकी भस्म मिलेगी कल प्रातः। भार्गव ब्राह्मण देह-दाहके लिए चिताकी चिन्ता नहीं करता। अग्निकी धारणा उसे माताके दूधके साथ मिलती है। यजमानको तुषाग्निमें आहुति बनते देखनेसे पूर्व योगाग्नि दग्ध न कर दे यह देह– पौरोहित्य व्यर्थ रहा मेरा।'

किंतु भगवान्के श्रीचरणोंमें पहुँची प्रार्थना कभी निराश लौटी है जो आज लौटती ? महर्षि निदाघ ही

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

कहाँ निष्ठुर हो सकते थे। जिसमें रज और तमकी छायाका स्पर्श नहीं—रोष, क्रोध, घृणा, निष्ठुरताका प्रवेश सम्भव है वहाँ ? उनकी वाणीने अमङ्गलका स्पर्श कब किया ?

'जिज्ञासु है तू ! आ ! आ जा !' सागर-पुलिनपर पड़े थे वे सर्वज्ञ इस दिन। आज भी वे उसीपर दक्षिण करका उपधान बनाये लेटे थे। आज नरेशके साथ राजपुरोहित मात्र थे महर्षिको प्रणिपात करनेवाले। शेष सभी लोगोंको राजपुरोहितने रोक दिया था। महर्षिने किंचित् मस्तक उठाया और अधरोंपर मन्दस्मित आ गया—'विप्रश्रेष्ठ ! आपका यजमान अब प्रकाशके उन्मुख हो चुका है।'

'श्रीचरणोंकी कृपा !' राजपुरोहितने अञ्जलि बाँधकर मस्तक झुकाया—'प्रकाशके अधिदेवताके पादपङ्कजोंमें प्रणिपात करके ही हम इधर आये हैं।'

'आप शास्त्रज्ञ हैं। नरकका स्वरूप क्या है ?' नरेश और राजपुरोहित दोनों जब समीप पुलिनकी रेतपर बैठ गए, दो क्षण रुककर महर्षिने पूछा—'क्या-क्या है नरकोंमें ?

'अंधकार, घृणित वस्तुएँ।' राजपुरोहितने विनम्र स्वरमें ही उत्तर दिया—'पीड़ाके अकल्पनीय उपकरण, मल-मूत्र-शोणितादि अपवित्र पूयगन्ध घृणित पदार्थ !'

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'राजन् ! तुम्हारे इस शरीरके भीतर क्या-क्या है ?' महर्षि देरतक मौन रहे। उन्होंने नेत्र बन्द कर लिए थे। जैसे राजपुरोहितका उत्तर उन्होंने सुना ही नहीं। एकाएक नेत्र-पलक खुले और उन्होंने द्युमान्की ओर देखा—'कुछ श्रेष्ठ, सुन्दर, सुपवित्र तत्त्व !'

'भगवन् ! इसमें श्रेष्ठ सुन्दर सुपवित्र क्या ?' नरेश सङ्कोचपूर्वक बोले—'रक्त, मांस, मेद, अस्थि, लोम, मज्जा, त्वचा, मल, मूत्र......।'

'सब अपवित्र, सब दुर्गन्धित, सब घृणित !' महर्षि उठकर बैठ गए –'और इस देहने दुःख-ही-दुःख दिया प्राणियोंको। दारुण वेदना देनेवाला यह कारागार। तब यह नरक नहीं है राजन् ?'

कोई कैसे कहे कि यह नरक नहीं है। राजपुरोहितके मुखसे भी शब्द नहीं निकला। नरेशने केवल स्वीकृतिमें सिर झुका दिया।

'इस नरकमें—देहमें पड़ा प्राणी—देहासक्त ही नारकीय प्राणी है।' महर्षिकी वाणीके शब्द-शब्दसे मानों प्रकाश फूटा पड़ता था। देहासक्ति ही उसे नरक भी ले जाती है। प्रायश्चित्त करना है तुम्हें ? इस देहासक्तिका त्याग तुम्हारा प्रायश्चित्त !'

राजपुरोहितके साथ नरेशने श्रद्धाभरित प्रणिपात किया वहीं पुलिनपर उन अवधूतश्रेष्ठको।



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विरक्त कौन ?

'महाराज, किसी सच्चे विरक्तके हाथ लगें तो श्रीविग्रह स्थान ग्रहण करे!' परम प्रतापी महाराज भोज चिन्तामें पड़ गए राजज्योतिषीकी यह बात सुनकर। कोई सच्चा विरक्त क्यों राजसदन आयेगा। उसे धारा नगरीके और भोजके वैभवसे प्रयोजन! लेकिन मंत्रीको आदेश दे दिया गया कि वे ऐसे विरक्तके अन्वेषणका पूरा प्रयत्न करें।

बड़े उत्साहसे मन्दिरका निर्माण किया गया था। कला मूर्तिमती हो उठी थी। भोजराजकी श्रद्धा और राजज्योतिषीका शास्त्रज्ञान साकार हुआ। कहीं कोई बाधा नहीं पड़ी। जितना समय लगनेका अनुमान था, कार्य उससे पहिले ही पूर्ण हो गया था।

भगवान् शङ्करका यह श्रीविग्रह स्थापित होना था लिङ्गविग्रहके पृष्ठमें। मन्दिरके अंतरगृहके मध्य लिंगमूर्ति और भित्तिमें निर्मित सिंहासनपर श्रीआशुतोष। लिंगविग्रह स्थापित हो गया और श्रीमूर्ति सिंहासनपर पहुँचायी गयी; किंतु वह सीधी बैठती ही नहीं। बहुत

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रयत्न हो चुके कभी एक ओर और कभी दूसरी ओर मूर्तिका मुख तिरछा हो जाता है। जब मानव-प्रयत्न विफल हो गये, महाराजने अपने राजज्योतिषीके श्रीचरणोंमें मस्तक झुकाया—'क्या कारण है कि प्रभु आसन स्वीकार नहीं कर रहे हैं ?'

ज्योतिषीजी केवल ज्योतिषी नहीं थे। कहा जाता है कि धारापुरीकी अधिष्ठात्री महाशक्तिने उन्हें साक्षात् दर्शन दिए थे। वे उन श्रीजगदम्बाके नैष्ठिक आराधक थे। महाराजके प्रश्नका उत्तर देनेके लिए उन्होंने न पञ्चाङ्ग खोला और न अपनी पट्टीपर कोई गणित किया। वे चुपचाप वहाँसे गये और भगवतीके मन्दिरमें श्रीमूर्तिके सम्मुख आसन लगाकर बैठ गए।

'महाराज, आपने श्रीविश्वनाथको यहाँ आराध्यरूपमें प्रतिष्ठित करनेकी इच्छा नहीं की है।' पूरे पाँच घण्टे बाद राजज्योतिषी मन्दिरसे निकले और सीधे राजसदन पहुँचे। तत्काल महाराजने स्वयं उनके चरणोंमें आकर वंदना की। जो कुछ आभास उन्हें मिला था, वही वे बता रहे थे—'ज्ञान एवं विद्याके आदिगुरु यहाँ श्रीदक्षिणामूर्तिके रूपमें आपको प्रतिष्ठित करने हैं। इस रूपमें वे किसी नरेशका दिया आसन ग्रहण कैसे करें ? कोई अधिकारी सच्चा विरक्त उन्हें आसन ग्रहण करावे, वे ठीक आसन ग्रहण कर लेंगे।'

भगवान् शङ्करका वह दक्षिणामूर्ति-विग्रह—श्रीमूर्ति जब आयी थी, उसे देखकर महाराज भावविभोर हो गए

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

थे। जिसने देखा—यही लगा कि प्रभु साक्षात् उपदेश करने आ बैठे हैं।

'धाराको महाशक्तिकी अनुकम्पा पहलेसे प्राप्त है।' श्रद्धाभरित स्वरमें श्रीविग्रहपर दृष्टि पड़ते ही राजज्योतिषीने कहा था—'अब ज्ञानके अधिष्ठाता आपकी श्रद्धा स्वीकार करके स्वयं आचार्यरूपमें आ गये हैं।'

'आपके श्रीचरणोंका अनुग्रह।' महाराजने सादर मस्तक झुकाया था।

धारा विद्वानोंकी नगरी; किंतु काशी तथा सुदूर दक्षिण प्रतिष्ठानपुर (पैठण) तकसे कर्मकाण्डके विद्वान् आमन्त्रित हुए। प्राणप्रतिष्ठाकी समस्त विधि सावधानीपूर्वक सम्पन्न की गयी। विधिके ज्ञानमें न त्रुटि थी, न उसके पालनमें प्रमाद हुआ। यजमानकी श्रद्धा कहीं शिथिल नहीं हुई। शुद्ध सामग्री, सम्यक् विधि, श्रद्धासंयुक्त शास्त्रपूत यजमान और विधिज्ञ संयमी अप्रमत्त ऋत्विक्—प्रतिमामें प्राण प्रतिष्ठित हो गये, यह लक्षित कर लेना कठिन क्यों होने लगा।

सब सानन्द हुआ; किंतु जब श्रीविग्रहको उनके सिंहासनपर पहुँचाया गया—पूरे प्रयत्नके पश्चात् एक स्वरसे विप्रवर्गने कह दिया—'राजन्! कोई ऐसा कारण अवश्य है, जिससे प्रभु आसन नहीं ग्रहण कर रहे हैं।'

वह कारण—कितना अद्भुत कारण निकला वह।

× × ×

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाराज भोजकी ओरसे कुछ अच्छे विद्वान् नियुक्त कर दिये गये हैं, अखण्ड यज्ञ चल रहा है। महामंत्रीने अपने निपुणतम सेवक नियुक्त कर दिये हैं—विरक्त ढूँढ़नेका प्रयत्न चल रहा है। राजज्योतिषीने अपने कुछ शिष्य नियुक्त कर दिये हैं—भगवतीकी सविधि अर्चना चल रही है।

सब चल रहा है; किंतु दक्षिणामूर्ति भगवान् शिवका श्रीविग्रह आसन नहीं ग्रहण करता। साधु आते हैं—संन्यासी, वैष्णव, संतमतानुयायी, जटाधारी, मुण्डितकेश, भस्मधारी, गैरिकवस्त्र, श्वेतवस्त्र, पीतवस्त्र या केवल कदलीपत्रकी कौपीन लगानेवाले। दिगम्बर अवधूत भी आए। जिनकी त्याग-तपस्याकी ख्याति थी, उन्हें महामंत्री स्वयं आदरपूर्वक ले आये। निष्परिग्रह, अनिकेत, उग्रतम तपस्वी—सभी तो आ गए। काष्ठमौनी, ऊर्ध्वबाहु, सदा खड़े रहनेवाले, पता नहीं कितने और कैसे-कैसे साधु आये। जिनसे बड़ी आशा थी, कुछ नहीं हुआ उनसे भी। पूरे तीन वर्ष होनेको आये—श्रीविग्रह सम्मुख आसनपर नहीं आया।

किसीने कुछ अनुष्ठान बताया, किसीने विशेष जप, यज्ञ अथवा अर्चनकी आवश्यकता सूचित की। सब सम्पन्न हुए। किसी असफल साधुका तिरस्कार नहीं हुआ। कोई उपेक्षित-तिरस्कृत न हो जाय, महाराजने इसके सम्बन्धमें अधिकारियोंको सावधान कर दिया था। जो असफल होते थे—उनका चित्त खिन्न हो, स्वाभाविक था; किंतु राज्यके कर्मचारी उन्हें आदरपूर्वक ही विदा करते थे।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'मेरा पाप—मेरे ही किसी अपराधका यह परिपाक है।' महाराज खिन्न रहने लगे। उनकी मुखश्री म्लान हो गई। शरीर कृश होने लगा। वे प्रातः स्नान करके जब अर्चनके लिए मन्दिरमें उपस्थित होते, अश्रु रोक नहीं पाते थे।

'मेरे राज्यमें न सही, पवित्र भारतभूमिमें तो वीतराग महापुरुष हैं ही।' महाराजने अंतमें एक दिन कातर होकर राजपुरोहितके चरण पकड़ लिए—'भोज प्राण देकर भी ला सके तो उन्हें धारापुरी ले आयेगा। आप प्रयत्न करें और ऐसे पुरुषका पता न लगे, मैं विश्वास नहीं कर सकता।'

'मैंने प्रयत्न करनेमें कोई प्रमाद नहीं किया है।' राजपुरोहितने तनिक गंभीर होकर कहा—'किंतु लगता है, हमारी परखका मापदण्ड ठीक नहीं है। ऐसी अवस्थामें बात मानव-प्रयत्नकी रह नहीं जाती। मेरा तो एक ही आश्रय है। आप चिन्ता न करें, पुत्र जब आग्रह करता है, दयामयी माँको उसका बालहठ पूर्ण तो करना ही पड़ता है।'

महाराजको आश्वासन प्राप्त हुआ। राजपुरोहितने भगवतीके मन्दिरमें जो आसन नित्य अर्चाके लिए लगाया, उससे उठे ही नहीं। मध्याह्न हुआ और बीत गया। शिष्योंमें, घरके सदस्योंमें व्यग्रता आयी। तृतीय प्रहर भी बीत गया और रात्रिका अंधकार भी अंतमें फैलने लगा।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'राजपुरोहितने आज जलग्रहण नहीं किया। वे अपने आसनसे न उठे हैं, न हिले हैं। उन्होंने पलकेंतक नहीं खोलीं। किसीका पुकारना सुनते नहीं। बन्द नेत्रोंसे अविराम अश्रु चल रहे हैं।' समाचार महाराजको मिला।

'आचार्यने उपवास किया और इस अधमने भोजन किया है!' महाराजके पश्चात्तापका पार नहीं था। 'भोज अब तबतक मन्दिरसे नहीं उठेगा, जबतक आचार्य सुप्रसन्न नहीं उठते।'

सायंकालीन भोजन न राजसदनमें किसीने किया और न राज्यके उच्चकर्मचारियोंके गृहोंमें। राजपुरोहितके घर तो पूरे दिन ही सब उपोषित रहे। किंतु मन्दिरमें भीड़-भाड़ महाराजने नहीं होने दी।

पूजा हुई, आरती हुई, रात्रिका नैवेद्य अर्पित हुआ। आराधक स्थिर बैठा रहे तो आराध्या शयन कर लेगी ? भगवतीकी शयन-आरती नहीं की मन्दिरके मुख्य पुजारीने। वे बाह्यद्वार बंद करके स्वयं श्रीमन्दिरमें एक ओर आसनपर ध्यानस्थ बैठ गए।

'माँ! कृपामयी!' मध्यरात्रि व्यतीत हो चुकी थी, जब राजपुरोहितके स्वरने महाराज तथा पुजारी दोनोंको चौंका दिया। पता नहीं कब कैसे दोनोंको बैठे-बैठे ही तन्द्रा आ गई थी। दोनोंने देखा—राजपुरोहित प्रतिमाके सम्मुख साष्टाङ्ग प्रणिपात कर रहे हैं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'महाराज ! आप राजसदन पधारें।' तनिक स्वस्थ होकर राजपुरोहितने भोजको देख लिया—'जब माँने कार्यभार स्वीकार कर लिया, हम चिन्ता क्यों करें ?'

मध्य रात्रिके पश्चात् उस दिन पुजारीने देवीकी शयन-आरती की।

× × ×

सेठ लक्ष्मीचन्द इस बार स्वयं निकले हैं अपने दलके साथ। अवस्था अधिक हो गई; इसलिए अब सेठजी छोटी यात्रापर ही कभी-कभी निकलते हैं। लड़के यह काम सम्हाल लेते हैं। वैसे सेठजी बनजारे हैं। उनका काम ही ऊँट, बैल, खच्चर लादकर दूर-दूरके नगरोंकी यात्रा करना है। गद्दीपर उनका व्यापार नहीं चलता।

बहुत छोटी टोली थी जब सेठ अमीचन्दने कारबार अपने पुत्र लक्ष्मीचन्दको दिया था। अब उस बातको युग हो गये। अब तो सात बड़े दल चलते हैं लक्ष्मीचंदजीके। सातों लड़कोंने अपने-अपने व्यापारीदल बना लिए हैं। कभी-कभी सेठजी भी एक छोटी आठवीं टोली बनाकर निकल पड़ते हैं।

बनजारेकी टोली अपने-आपमें एक पूरा राज्य होता है। ऊँट, खच्चर, घोड़े, बैलगाड़ियाँ और पैदल भी। व्यापारकी कोई निश्चित वस्तु नहीं। जहाँ जो वस्तु ठीक मूल्यपर मिली, लाद लिया। जहाँ जिसके ठीक दाम लगे, बेच डाला। व्यापारकी वस्तुओंके साथ बर्तन, सीधा

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सामान, कपड़े-बिछौने, वैद्यजीका औषधालय और एक छोटी किंतु सधे वीरोंको शस्त्रसज्ज सेना। यह सेना न हो तो बनजारे दिन-दोपहर लूट लिए जाया करें।

सेठ लक्ष्मीचंदकी टोलीमें एक विशेषता प्रारंभसे रही। इस टोलीके साथ ठाकुरजीकी पालकी चलती है। पुजारी महाराज और ठाकुरजीके सेवक चलते हैं। पता नहीं क्यों चलते हैं ये सब; क्योंकि पूजा तो सेठजी स्वयं दोनों समय करते हैं। पानी पड़े या पत्थर, ठाकुरपूजाके लिए दोनों समय टोलीको रुकना ही पड़ता है।

रुक तो जाते हैं सेठजी दो-दो दिन—उन्हें पताभर लगना चाहिये कि कोई उत्तम रत्न या बहुमूल्य वस्त्र मिल सकता है। कोई काष्ठ, हाथी-दाँत या अन्य आधारपर बनी कलाकृति—सेठजीको पसंद भर आ जाय, वे उसे लेकर जायँगे। इतने अधिक मूल्यमें ली गई वे वस्तुएँ जब उन्हें बेचनी नहीं—बड़े आदमीकी एक संग्रह-प्रवृत्तिके अतिरिक्त आप क्या कहेंगे। यों सेठजी कहते हैं— 'लालजी! इसे पाकर प्रसन्न होंगे।'

मोटा कपड़ा, साधारण चटाई, फटे-पुराने जूतेसे जो इस बुढ़ापेमें, इस सम्पन्नतामें भी अपना काम चला लेता है, उसकी सनक ही तो है यह—'लालजी!' अपने ठाकुरजीको सेठजी यही कहते हैं। यात्राके विषम दिनोंमें भी लालजीके लिए दस-पंद्रह व्यंजन बनेंगे, कहीं कोई उत्तम उद्यान दीखा तो उसीके पुष्प चाहिए। अनेक बार

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

टोली इस सनकके कारण बहुत उलझनमें पड़ जाती है। असुविधा और कष्ट—किंतु सेठजी जब यह सब सुनें।

'लालजी !' बूढ़े सेठको न अपने भोजनका स्वाद, न धनकी चिन्ता। लड़कोंके आग्रहतक वह नहीं सुनता। उसे तो एक सनक है—लालजीके लिए उसे पसंद आ जाय तो एक पुष्प, एक फलके लिए वह पूरी थैली उलट देगा।

यह सनकी सेठ लक्ष्मीचन्द अपनी टोली लिए पहुँच गया धारापुरी। क्या विशेषता है इसमें कि महाराज उसे राजसभामें सम्मानित करनेवाले हैं। राजपुरोहित उसके सम्मुख आदरसे झुके जाते थे। हुआ कुल इतना था कि सेठने स्नान किया, पूजा की और एक लोटा जल लिए शिवमंदिर चले गए। जल चढ़ाकर घूमे तो दक्षिणामूर्ति-विग्रहपर दृष्टि पड़ी। तिरछा श्रीविग्रह—सेठने श्रीमूर्तिके घुटनोंपर हाथ रक्खा सहज—'प्रभु यदि सम्मुखासीन होते !' मूर्ति जैसे स्वयं घूमकर सीधे आसनपर आ गई। अब लोग कहते हैं—'सेठजी सच्चे विरक्त हैं। उन्हें किसी विषयमें आसक्ति नहीं।' किंतु उन्हें यह जो 'लालजी'की आसक्ति है ?



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अजातशत्रु

'नाथ !' कण्ठ जितना मधुर था, स्वर उतना ही करुण हो गया था। कुसुम कोमल कलेवर, कुश-कण्टक, कंकड़ियाँ और बड़े-छोटे पाषाण-खण्ड। मार्ग कोई था ही नहीं। कहीं बड़ी-बड़ी घासोंमेंसे चलना था और कहीं नुकीले कंकड़ोंपरसे। जिस असूर्य-स्पर्शा महारानीको कभी मर्मरकी सुचिक्कन भूमिपर भी पादक्षेप नहीं करना पड़ा था, जिनके कहीं भी चलनेसे पूर्व ही सेविकाएँ आगे-आगे मार्गमें सुन्दर और कोमल आस्तरण बिछाती चलती थीं, आज उन्हें इस मार्गमें चलना पड़ रहा था। प्रारब्ध भी कितनी विडम्बना करता है !

भगवान् भास्कर मध्याकाशमें पहुँच चुके थे। भूमि उत्तप्त हो गयी थी। शरीरसे स्वेद-प्रवाह चल रहा था। कोमल चरणोंमें फफोले पड़ गये थे और अब वे फूटते जा रहे थे। जहाँ तृण नहीं थे, वहाँ पैर रखना अत्यन्त उत्पीड़क होता था। भूमिके तापके साथ कंकड़ियाँ फफोलोंमें चुभकर असह्य कष्ट देती थीं। किसी प्रकार भी चलना सम्भव नहीं जान पड़ता था। बहुत संयमके पश्चात् भी मुखसे एक सम्बोधन निकल ही गया।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'साध्वी !' महाराज दो डग आगे बढ़ गये थे । पीछे लौटकर उन्होंने पत्नीकी ओर देखा और उसके हाथको कंधेपर रखकर सहारा दिया । 'वह सम्मुख हरे-भरे वृक्ष खड़े हैं । वहीं पाससे एक निर्मल स्रोत प्रवाहित होता है । एक छोटी-सी गुफा है । गुरुदेव कभी-कभी उसमें विश्राम किया करते थे और मैं उनके दर्शनोंको आया करता था । मुझे इस स्थलका ज्ञान है । यहाँ वन्य-फल एवं कंद मिल जाया करते हैं । हम वहीं अपना आवास रक्खेंगे ।' महाराजके स्वरमें न तो कम्पन था और न कष्टकी कोई झलक । वे इस प्रकार बोल रहे थे, जैसे उनके पैरोंमें काँटे नहीं चुभे हैं और छाले नहीं पड़े हैं ।

दोमें-से किसीके शरीरपर कोई आभूषण नहीं था । महारानीका दिव्य सौन्दर्य एक कौशेय साड़ीमें आवृत था और महाराजने तो केवल धोती पहन रक्खी थी । उनके कन्धोंपर उत्तरीय भी नहीं था । उनके दीर्घ केश पीठपर छिटके हुए थे और वायुसे उड़ रहे थे । किसी कंकड़ी, गोखरू या काँटेके चुभ जानेपर वे पैरोंकी ओर देखतेतक नहीं थे । एक पलको रुककर पैरको पीछेकी ओर मोड़ लेते एक पैरपर खड़े रहकर । हाथसे बिना देखे ही चुभी वस्तुको निकालकर फेंक देते और इस प्रकार चलने लगते जैसे कुछ हुआ ही नहीं । अवश्य ही महारानीके पैरोंमें कुछ चुभनेपर रुकना पड़ता । वे महाराजके कन्धोंपर पूरा भार देकर उसे निकाल पातीं और चलना तो किसी प्रकार हो रहा था । एकाध बार महाराजने चाहा कि पत्नीके

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पैरोंसे काँटेको खींच लें; किंतु महारानीने उनकी ओर इस दृष्टिसे देखा, मानो नेत्रोंसे ही कह रही हों 'आप मेरा पैर छुयें, इससे पूर्व मेरे प्राणोंको शरीरसे विदा हो जाना चाहिए ! दासीपर इतनी तो दया कीजिये।' उस दृष्टिने ही महाराजको विरत कर दिया।

'हम कितनी दूर आ गये हैं ?' महारानी एक शिलापर वृक्षकी छायामें महाराजके सहारे बैठ गयीं। वे अत्यधिक थक गयी थीं। पैरोंमें पीड़ा तथा जलन हो रही थी। कुशल इतनी थी कि गन्तव्य अब कुछ हाथ दूर ही था।

'पर्याप्त दूर !' महाराजने गम्भीर कण्ठसे कहा। 'नगरसे लगभग एक योजन दूर !'

'कुल एक ही योजन ?' घबड़ाकर महारानी उठ बैठीं। उनके मुखपर भयके चिह्न स्पष्ट हो गये। उन्होंने तो समझा था कि चलते-चलते वे दस-बीस योजन अवश्य पहुँच गयी हैं। 'मुझे विश्राम नहीं करना है ! उठिये, चलिये ! यहाँतक तो शत्रुके चर बड़ी सरलतासे पहुँच सकते हैं। सन्ध्या होनेसे पूर्व शत्रु हमें पकड़ लेगा। हमें यहाँ नहीं ठहरना चाहिये। यह न तो घोर कानन है और न विकट पर्वत।' कष्ट विस्मृत हो गया। महारानी चञ्चल हो गयीं।

'सती ! आतुर होनेका कोई कारण नहीं।' महाराज शांत बैठे थे। 'हम भागकर नहीं आये हैं। हमने केवल

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपनेको राजधानीसे इसलिये दूर हटा लिया है कि नवीन शासककी व्यवस्थामें प्रजाका हमारे प्रति मोह व्याघात न उपस्थित करे। प्रारब्धमें जो है, वह तो घोर कानन तथा विकट पर्वतमें भी पहुँचनेपर प्राप्त होगा ही। जो कष्ट प्रारब्धमें नहीं है, उसे कोई दे नहीं सकता।'

'वह आपका शत्रु है। वह आपको अवश्य पकड़ना चाहेगा और पकड़नेपर······।' आगेका अमङ्गल वाक्य मुखसे नहीं निकला। बड़े-बड़े नेत्र महाराजके मुखपर लगे थे और उनमें मूक आग्रह था कि आप मेरे कष्टकी चिंता न करें। यहाँसे उठें और किसी ऐसे स्थानतक चलें जहाँ शत्रु हमारा पता न पा सके।

'पगली ! शत्रु किसीका भी कोई नहीं होता। संसारमें कौन किसका शत्रु है ?' महाराजके मुखपर इस अवस्थामें भी निर्दोष हास्य आया। 'शत्रु तो मनुष्य अपने भीतर छिपाये रखता है। जहाँ भी जाता है, इन शत्रुओंको साथ लिए जाता है। जिसने इन शत्रुओंको जीत लिया, उसका शत्रु संसारमें उत्पन्न हुआ ही नहीं। संसारके शत्रु किसी व्यक्तिके शत्रु नहीं होते। वे तो संग्रहके भागीदार होते हैं और पूरेका पूरा चाहते हैं। तूने अब अपना संग्रह छोड़ दिया है, अब तेरी किसीसे क्या शत्रुता ? वैसे कोई कष्ट प्रारब्धमें होगा तो उसे क्या दूर जाकर निवृ किया जा सकता है ?'

महारानी बोलीं नहीं, परंतु उन्होंने समझ लिया कि उनके पतिदेव अब किसी प्रकार आगे नहीं जायँगे। 'बड़े

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हठी हैं।' मन-ही-मन वे भगवान्को स्मरण करने लगीं।

× × ×

[२]

'आपकी कृपाके लिए आभार ! मैं जानता हूँ कि आपकी कन्या अत्यन्त रूपवती हैं और शील तथा गुणमें उनके समान बालिका इस समय अलभ्य है। अपनी विद्या, प्रतिभा तथा चित्रकलाके लिए वे पूरे देशमें विख्यात हैं। उनके लिए अनेक तेजस्वी राजकुमार, अनेक पराक्रमी नरेश याचना करें, यह नितांत स्वाभाविक है। सबकी प्रार्थनाके रहते आपने मुझे यह गौरव देनेका विचार किया, मैं इसे अपनेपर आपकी कृपा मानता हूँ। इतनेपर भी आप मुझे क्षमा करेंगे ! आप जानते हैं कि मैं विवाहित हूँ और पुरुषकी सन्तति-परंपराको बनाये रखनेके लिए एक पत्नी पर्याप्त है। काम कहीं परितृप्त नहीं होता और विचारशीलको उससे बचना चाहिए। राजकुमार अभी शिशु है अन्यथा उसीके लिए आपका अनुरोध स्वीकार करता। राजकुमारीको मैं अपनी बहन मान रहा हूँ। आशा है आप इस सम्बन्धको स्वीकार करके मेरे अविनयको क्षमा करेंगे।' महाराजने स्वयं अपने हाथों पत्र लिखा, उसे कौशेय वस्त्रसे आवृत किया। आदरपूर्वक पत्र आगत ब्राह्मणके हाथोंमें देकर प्रार्थना की कि यहाँकी परिस्थिति काश्मीर-नरेशको सादर समझा दें।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाराज काश्मीर सौवीरनरेशसे सम्बन्ध करनेको उत्सुक थे। उन्होंने राजपुरोहितको नारियल देकर भेजा था। सौवीरके मन्त्रियोंने महाराजको सम्मति दी कि 'वे परम पराक्रमी देवपुत्र काश्मीरराजके नारियलको स्वीकार कर लें।' कोई लाभ नहीं हुआ। महाराज इस तर्कको माननेको प्रस्तुत नहीं हुए कि राजाको अनेक विवाह राजनैतिक दृष्टिसे करने चाहिए। अंततः पत्र लेकर राजपुरोहित नारियलके साथ लौटे।

नारियलके लौटाने-जैसे अपमानका समाधान पत्र न कर सका। काश्मीरमें रणभेरी बजी, सैनिकोंने कवच पहने, शिरस्त्राण धारण किये और शङ्खोंकी तुमुल ध्वनिमें रथ एवं अश्वोंका अपार दल सौवीरकी ओर प्रस्थित हुआ। महाराज स्वयं सेनाका नेतृत्व कर रहे थे। देवपुत्रकी अजेय सैन्य मार्गके नरेशोंका आतिथ्य ग्रहण करती अबाध गतिसे बढ़ती जा रही थी।

'सैनिकोंको आदेश दो! दुर्गद्वारोंका निरीक्षण स्वयं कर लो! मैं स्वयं सीमापर चलकर सामना करूँगा।' सौवीर-नरेशने समाचार पाकर सेनापतिको आज्ञा दी। 'प्रजाका रक्षण राजाका कर्तव्य है। क्षात्रधर्म है युद्ध। हम अपने धर्मका पालन करेंगे।' मन्त्रियोंको आशा नहीं थी कि सदा शान्तिका उपदेश देनेवाले उनके परम धार्मिक महाराज इतना शीघ्र युद्धका आदेश दे देंगे।

'महाराज स्वयं युद्धस्थलपर जा रहे हैं।' विद्युद्वेगसे समाचार राजधानी, राजधानीसे नगरों, वहाँसे ग्रामों और

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्रमशः इतस्ततः बिखरी झोंपड़ियोंतक पहुँच गया। जिस नरेशने प्रजाको प्राणोंसे बढ़कर प्यार किया हो, उसके प्रति प्रजाके अनुरागका स्रोत उमड़ना ही था। यह सत्य है कि सौवीरने कभी किसीपर आक्रमणकी बात नहीं सोची थी, सभी नरेशोंसे मैत्रीका व्यवहार किया था और इसीसे निश्चिन्त होकर उन्होंने अपनी सेना बहुत घटा दी थी; पर आज सेनाका प्रश्न कहाँ था? सेना तो पता नहीं कब महाराजके साथ युद्धभूमिमें जायगी, किंतु समाचार जिस तरुणके कानोंतक पहुँचा, उसीने खाँड़ा उठा लिया। कवच और धनुषकी अपेक्षा किसीको नहीं थी। ग्राम-नेताओंने बिना वर्णभेदके तरुणोंको एकत्र किया। भल्ल, शूल, गदा, परिघ, खड्ग जो जिसके पास था, पर्याप्त माना गया। ग्रामोंने अपनी रक्षाका प्रबंध कर लिया और कुछ सैनिकोंकी टुकड़ी सीमाकी ओर भेज दी। महाराज तथा राज्यकी सेनाके पहुँचनेके पूर्व ही सीमापर एक महती सैन्य एकत्र हो गयी और उसमें नवीन दल आकर उसे बृहत्से बृहत्तर करते ही जा रहे थे।

काश्मीर-नरेशने देवपुत्रकी पदवी यों ही नहीं प्राप्त की थी। वे अनुभवी थे, कूट योद्धा थे। उनके गुप्तचर बहुत पूर्व सौवीर पहुँच चुके थे। उन्हें उन चरोंसे ज्ञात हो गया कि पूरा सौवीर देश दुर्गमें परिणत हो गया है। एक-एक पदपर भयङ्कर संग्राम होगा। सीमापर इतनी बड़ी सेना एकत्र है कि काश्मीरकी सेना उसकी दशांश भी नहीं। काश्मीरनरेशने सेनाको रोक दिया। वे सौवीर-राजके आगमनकी प्रतीक्षा करने लगे।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'मैंने आपके पत्रकी भावनाको स्वीकार किया। मैं युद्धके लिए नहीं, अपने सुहृद्से मिलनेके लिए आया हूँ।' सीमापर पहुँचते ही सौवीर-राजको काश्मीरनरेशके दूतने अपने महाराजका पत्र दिया।

'मेरा सौभाग्य! मैं अपने सम्मान्य अतिथिका हर्षपूर्वक स्वागत करूँगा।' जो जैसा होता है, विश्वको भी वैसा ही समझता है। सरलहृदय, धार्मिक सौवीरनरेशने पत्र पढ़कर उसे अक्षरशः सत्य मान लिया। काश्मीरनरेशने आगे बढ़कर सौवीर महाराजको अङ्कमाल दी। बड़ी सरलतासे स्वागत-पाती हुई। काश्मीरकी सेना राजधानीकी ओर चल पड़ी। सौवीरके ग्रामोंसे आये स्वेच्छा-सैनिक अपने घरोंको लौट गये। देशवासियोंका आवेश शांत हो गया। एक बार जनताका आवेश शांत हो जानेपर फिर उसे प्रस्तुत करना सरल नहीं हुआ करता। काश्मीरके कूटनीतिज्ञ नरेश इसे जानते थे और इसीसे उन्होंने यह कौशल रचा था।

× × ×

[३]

'महाराज!' महारानी चीत्कार करके अपने पतिके चरणोंपर गिर पड़ीं। वे निद्रामें बड़ा भयङ्कर स्वप्न देखकर जगी थीं। उठते ही उन्होंने देखा कि राजसदनमें कोलाहल हो रहा है। 'मारो! काटो!' पता नहीं कितने पिशाच चिल्ला रहे हैं। उनके कण्ठसे शब्द नहीं

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निकलता था। काष्ठपुतलीकी भाँति वे अपनी शय्यापर बैठी थीं। हुंकारें, आर्तक्रन्दन, कराह तथा शस्त्रोंकी झंकृति क्रमशः समीप आती जा रही थी। उन्होंने समझ लिया कि काश्मीरनरेशने विश्वासघात किया है। अग्निकी लपटें दृष्टि पड़ीं। अवश्य ही आततायियोंने कोई सौध भस्म कर देना चाहा है। अन्ततः जब शयनकक्षके द्वारपर क्रोधोन्मत्त सैनिकोंने अपशब्द कहते हुए आघात प्रारंभ किया तो वे आतुरतापूर्वक उठीं।

'क्यों ? क्या हुआ ?' महाराज नियमानुसार ब्राह्म-मुहूर्तसे पूर्व ही उठ गये थे। आचमन करके वे चंदनके ऐणेयाजिनाच्छादित आसनपर कमलासनसे बैठे आराध्यके ध्यानमें तल्लीन थे। उन्हें बाह्य संसारका तनिक भी बोध नहीं था। 'अच्छा, भीत मत हो !' एक क्षणमें ही उन्होंने परिस्थिति समझ ली। विकारकी एक भी रेखा उनके मुखपर नहीं आयी। शान्त भावसे पत्नीको वहीं छोड़कर वे शयनकक्षके द्वारकी ओर बढ़े।

'सौवीरके राजवंशको मैं सदाके लिये नष्ट कर दूंगा !' द्वार खुलते ही हाथोंमें रक्तरंजित खड्ग लिए काश्मीरनरेशने प्रवेश किया। उनके नेत्र अंगारोंके समान जल रहे थे। मुखपर स्वेद-कण चमक रहे थे। शिरस्त्राणसे बाहर उनका केशपाश फैला हुआ था। उस समय वे एक असुरकी भाँति प्रतीत हो रहे थे। उनके साथ उन्हींके समान अनेक सैनिक कक्षमें प्रविष्ट हो गये थे। अवश्य ही राजसदनकी रक्षा करनेवाले थोड़े-से सैनिक अकस्मात्

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आक्रमणसे मारे जा चुके होंगे । बाहरका कोलाहल शांत हो गया था ।

'सन्तति-परंपरा बनाये रखनेको एक ही नारी पर्याप्त है—क्यों ?' सौवीरराजकी ओर देखकर तीव्र व्यङ्ग करते हुए काश्मीरनरेशने कक्षमें दृष्टि दौड़ायी । 'मेरे नारियलका—मेरा अपमान ! इतना साहस हो गया है तुममें ? मैं तुम्हारी संतति-परंपराको अभी समाप्त किये देता हूँ ।' छोटा-सा बालक चौंककर जाग पड़ा था । वह अपनी माताकी ओर जा रहा था । एक बार खड्ग चमका और भूमिमें रक्तकी धारा चल पड़ी ।

'व्यर्थ ही बाल-हत्यासे तुमने अपने-आपको कलङ्कित किया !' महाराजके मुखपर शोकका कोई चिह्न नहीं आया । अवश्य ही महारानी पुत्रके वधको देखते ही मूर्छित होकर गिर पड़ी थीं । उधर अभी किसीका ध्यान नहीं था । 'राजकुमारको तो मरना ही था । उसके प्रारब्धमें यही होगा ।' जैसे किसी दूसरेका पुत्र मर गया है और महाराज उसे आश्वासन दे रहे हैं ।

'तुम्हें मेरी पुत्रीसे परिणय करना होगा !' सौवीर-नरेशके उच्च कुलमें बलात् कन्या देकर काश्मीरके महाराज, जिनके पूर्वज हीन रह चुके थे और जिन्हें अब भी नरेशवृन्द हीन क्षत्रिय मानता था, अपनेको उच्चकुलकी गणनामें पहुँचानेका निश्चय कर चुके थे ।

'क्षत्रिय भयभीत नहीं हुआ करता ।' महाराजके स्वरमें कोई विकार नहीं था । 'राजकुमारीको मैं बहन

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्वीकार कर चुका हूँ ।' उन्होंने अपना निश्चय बिना किसी हिचकके सुना दिया ।

'दुर्ग मेरे सैनिकोंके अधिकारमें है । ध्वज-परिवर्तनमें एक क्षण लगना है ।' काश्मीरनरेश आश्चर्यमें थे । अबतक ऐसा अलिप्त लौहपुरुष उन्हें प्रतिद्वन्द्वी नहीं प्राप्त हुआ था ।

'भगवान्ने दया की । प्रजाकी रक्षाका भार उन्होंने मुझसे ले लिया । आप अपना कार्य करें ! मैं राजसदनकी अपेक्षा तपोवनमें रहना अधिक सुखकर मानता हूँ ।' उन महापुरुषको लोभ स्पर्शतक नहीं कर सकता था ।

'आपको अवकाश दे रहा हूँ । कल दूसरे प्रहर मध्याह्नतक आपको अपना निश्चय स्थिर कर लेना चाहिये । यदि नियमानुसार कल तृतीय प्रहरमें सौवीरकी राजसभा आप अपनी अध्यक्षतामें संचालित करके उसमें अपने विवाहकी घोषणा करनेको प्रस्तुत न हुए तो राजसभा मेरे संरक्षणमें होगी और उसमें काश्मीरके छोटे राजकुमार सौवीरके महाराज घोषित होंगे ।' काश्मीर-नरेश उत्तरकी अपेक्षा किये बिना अपने सैनिकोंके साथ लौट गये ।

महाराजने स्वयं पुत्रके शरीरको उठाया । आज सेवक कहाँ ? स्वयं उन्होंने अपने धनुषपर बाण चढ़ाकर शयनकक्षके चंदनके आसनों, द्वारों तथा दूसरे पात्रोंको टुकड़े-टुकड़े किया । चिता बनायी और पुत्रके शरीरकी

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दाह-क्रिया सम्पन्न की। इस कार्यमें पर्याप्त विलम्ब हो गया। अरुणोदय हो चुका था। मूर्छिता महारानीके मुखपर सुगन्धित जल डालकर उन्होंने व्यजनसे वायु की।

'वे पिशाच कहाँ गये ?' महारानीने अर्धचेतनामें ही कहा।

'इस समय वे चले गये हैं। उठो और मेरे साथ चलो!' महाराजने इतना ही कहा, सती नारीने इतना ही बहुत माना कि 'उसके देवता सुरक्षित हैं।' वह आदेश पाकर उठी। पतिके कहनेपर उसने समस्त आभरण उतार दिये। एक साड़ी ही शरीरपर रह गयी। दोनों गुप्तद्वारसे राजभवनसे बाहर हुए।

× × ×

(४)

'महाराज! वे आ रहे हैं।' महारानी अत्यन्त भयभीत थीं। आजके कष्टके कारण उन्हें ज्वर हो आया था। एक अशोकके नीचे बड़ी-सी शिलापर बिना किसी आस्तरणके वे पड़ी थीं। महाराज किसी वन्यफलके कठोर छिलकेको ढूँढ़ लाये थे और उसीमें समीपके स्रोतसे जल ले आये थे। विश्रामके पश्चात् श्रान्ति और बढ़ी ज्ञात हो रही थी। महारानीने मुख फेरा। पश्चिममें अस्ताचलगामी सूर्यकिरणोंके प्रकाशमें उन्होंने देखा कि सुदूर सपाट भूमिपर कुछ घोड़े दौड़े चले आ रहे हैं। उनकी गति अत्यन्त तीव्र है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'साध्वी ! तुम जल लो।' महाराजने बिना आकुलताके कहा। उन्हें घूमकर पीछे देखनेकी आवश्यकता ही प्रतीत नहीं हो रही थी। 'जो आता है, उसे आने दो ! भगवान्‌के मङ्गलमय विधानमें कोई बाधा देनेमें समर्थ नहीं।' वे पत्नीके समीप ही शिलापर बैठ गये।

'वे आ रहे हैं ! देखो, वे आ रहे हैं !' महारानीने कुछ भी नहीं सुना। ज्वर तीव्र हो चुका था। उनके नेत्र दूर लगे हुए थे। 'वहुत-से घोड़े हैं। बड़े वेगसे दौड़े आ रहे हैं ! ओह, उनके साथ बहुत बड़ी पदाति सैन्य है। हम दो निरीह प्राणियोंके लिए इतना सैन्यसमारम्भ !' महारानीके नेत्रोंसे अश्रु-प्रवाह चल पड़ा।

'क्षत्राणी होकर तुम डरती हो ? छिः ! जल पी लो !' महाराजने मुखमें हाथसे कुछ विन्दु डाले।

'वे आ गये ! आगे-आगे वही पिशाच है। वही—जिसने मेरे पुत्रको खा लिया ! पुत्रको खा लिया और अब स्वामीको……नहीं, मुझे दो अपनी तलवार ! तलवार दो !' ज्वर, शोक एवं भयने उस महामहिम नारीको विक्षिप्त कर दिया था। वह उठने लगी। महाराजने अंकमें लेकर लिटा दिया। कोलाहल पास आता जा रहा था। महाराजने अब उधर देखा।

'सौवीर अमर रहे ! सौवीर महाराजकी जय हो।' सहस्र-सहस्र कण्ठ आकाशको आंदोलित कर रहे थे। महाराजने देखा, अपार जनसमूह दौड़ा आ रहा है। कोई

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पदाति और कोई घोड़ोंपर। ऊँट और हाथी भी दृष्टि पड़ते हैं। पूरी मेदिनी मानो दौड़ते मनुष्योंसे पूर्ण हो गयी है।

'महाराज रक्षा करें! प्राणदान!!' महाराज कुछ सोचें, इसके पूर्व ही सबसे आगेके अश्वका सवार कूदा और उनके पैरोंपर गिर पड़ा। कुछ और अश्वारोही भी उसी प्रकार कूदकर पृथ्वीमें इस प्रकार गिरे, मानो वे अश्वसे लुढ़क गये हों। महाराज यदि एक क्षणका भी विलम्ब करते तो अवश्य पिछली अश्वपंक्तिसे कूदे तरुणोंने इन लुढ़के वीरोंकी बोटी-बोटी उड़ा दी होती। महाराज दोनों हाथ उठाये खड़े थे। जनसमूह बढ़ता जा रहा था। आगतोंके मुखपर प्रतिशोधकी भयङ्कर भावना थी। उनके शस्त्र उठे हुए थे और शरीर काँप रहे थे।

'महाराजकी जय हो!' महाराजने देखा कि एक वृद्ध एकत्रित समूहमेंसे आगे बढ़े और उन्होंने अपना मस्तक झुकाया। जनसमूह जयनाद कर रहा था। महाराजने पहचाना—वे सौवीरके महामन्त्री थे। ज्ञात हुआ कि काश्मीरनरेशके विश्वासघातका समाचार लगते ही उन्होंने उसे देशमें प्रसारित किया। रात्रिके युद्धमें सेनापति काम आ चुके थे, किंतु नगरके लोगोंने काश्मीरनरेशको दुर्गद्वार बन्द करने नहीं दिया। नागरिक तरुण किसी प्रकार युद्ध कर रहे थे। और पासके ग्रामोंसे तरुणोंके दल पहुँचने लगे। चतुर काश्मीरराज भागनेकी चिन्ता करने लगे। उनके चरने यहाँके स्थानका पता

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दिया। वे इधर हो भागे। मार्गमें वे अपने शेष सभी सैनिक खो चुके हैं।

'आपने मेरी पुत्रीको बहिन कहा है। मैं आपका पितृव्य हूँ। मुझे क्षमा !' जो अपनेको देवपुत्र कहता था, उसका मुकुट सौवीर-नरेशके चरणोंमें पड़ा था।

'राजन् ! आप व्यर्थ अपनेको हीन बनाते हैं !' महाराजने आदरपूर्वक उन्हें उठाया। 'कौन किसे क्षमा करेगा ? कौन किसका शत्रु है ? शत्रु तो अपने बिकार हैं और उनपर जिसने विजय प्राप्त कर ली, उसका शत्रु कोई विश्वमें हो ही नहीं सकता।' सौवीर-नरेशका स्वर गंभीर था।

'महाराज ! आप महापुरुष हैं।' काश्मीर-नरेशके नेत्र वृष्टि करने लगे। 'ऐसे अजातशत्रुसे जो शत्रुता करता है, विश्वमें उसका कोई मित्र भी नहीं रह जाता।'



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मिथ्याभिमान

'अहं करोमीति वृथाभिमानः।'

'बाबू ! एक गंभीर रोगी है।' होम्योपैथिक डाक्टर शिर्केने कहा। 'सिविल सर्जन बुलाया गया है। तुम्हारे वैद्यराज भी हैं और अब मुझे भी फोन आया है; आओ, साथ चलो।'

उन दिनों मैं एक बड़े नगरमें रहता था। आयुर्वेदमें निसर्गतः अभिरुचि है और होम्योपैथी अपने अत्यधिक सस्तेपनके कारण आकृष्ट करती है। चिकित्सा मेरा कभी व्यवसाय नहीं रहा, कभी बनानेकी इच्छा भी नहीं; किंतु वह एक व्यसन तो पता नहीं कबका बन चुका है।

उन दिनों होम्योपैथी सीखनेकी धुन थी। एक दवाइयोंका छोटा बक्स मँगा लिया था और कुछ पुस्तकें। केवल पुस्तकोंको पढ़ लेनेसे चिकित्सा आ जायगी, यह विश्वास मुझे रहा नहीं। अतः डा० शिर्केके समीप जाकर एक घंटे प्रतिदिन बैठने लगा था।

मेरी अभिरुचिने डाक्टरको आकृष्ट किया। वे मुझसे स्नेह करने लगे और यथासम्भव अपनी व्यस्ततामें भी

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुछ-न-कुछ बताने लगे। रोगियोंको सम्मुख रखकर उनका यह बताना कितना प्रभावकारी था, कहनेकी कोई आवश्यकता नहीं है।

मुझसे डाक्टरको कोई सङ्कोच होनेका कारण नहीं था। वे जानते थे, मैं चिकित्साको व्यवसाय बनाकर उनका प्रतिस्पर्धी नहीं बनने जा रहा हूँ।

वह पहिला दिन था, जब चिकित्सालयसे बाहर रोगीके समीप जाते हुए डाक्टरने मुझसे साथ चलनेको कहा था। अपनी मोटरमें वे ड्राइवरके स्थानपर बैठ गये और जब मैं उनका चिकित्सा-बक्स लेकर बैठा, सहकारीको साथ ले जाना अनावश्यक हो गया।

× × ×

'मौतकी औषध धन्वन्तरिके समीप भी नहीं, डाक्टर साहब !' नगरके उन सम्भ्रान्त सज्जनके बँगलेमें हमारी मोटर रुकी और उतरते ही सबसे प्रथम वैद्यराजजी मिले। वे रोगीको देखकर लौट रहे थे। 'जिसे मैं अच्छा नहीं कर सका, उसे अबतक तो कोई अच्छा कर नहीं सका है। जाइए, आप भी देख लीजिए। सिविल सर्जन आपको भीतर ही मिलेगा।'

वैद्यराजजी नगरमें मेरे पड़ोसी हैं। मुझपर उनकी प्रभूत कृपा है। अपनी चिकित्साके चमत्कार वे प्रायः मुझे सुनाया करते हैं। मेरी उनपर श्रद्धा है और देशमें जो आयुर्वेदके गिने-चुने प्रकाण्ड विद्वान् हैं, उनमें उनकी

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गणना होती है। अपने अनुभव एवं नैपुण्यपर उनका गर्व उचित ही है।

'आप दस मिनट रुकें तो साथ ही चलेंगे।' मैंने वैद्यराजजीसे सहज भावसे प्रार्थना की। 'यहाँसे मैं सीधे अपने यहाँ ही चलना चाहता हूँ।'

'अच्छा, मैं रुकता हूँ। तुम हो आओ।' वैद्यराजजीने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

'होपलेस, डाक्टर साहब!' रोगीके कक्षके द्वारके बाहर ही हमें सिविल सर्जन मिले। उन्होंने डा० शिर्केसे हाथ मिलाया और बोले—'कोई आशा नहीं।'

स्वभावत: डा० शिर्के निराश हो गये। मैं भला, किस गणनामें आता था? किंतु यहाँतक आ गये थे तो रोगीको देखे बिना लौट जाना उचित नहीं था।

'आप देरसे आये!' रोगीके पिताने कोई उत्साह नहीं व्यक्त किया।

'कृपा करके आप सिविल सर्जनको दस मिनट रोकिये!' रोगीके मुखपर दृष्टि पड़ते ही मुझे सहसा भरोसा हो गया—हम देरसे नहीं आये। 'निराश होनेका कोई कारण नहीं।'

डा० शिर्केने आश्चर्यसे मेरी ओर देखा। रोगीके वे सम्भ्रान्त पिता—डूबतेको जैसे तिनकेका सहारा मिला। उनके नेत्रोंमें कृतज्ञता उमड़ पड़ी और अनेक स्वजनों एवं सेवकोंके होते भी स्वयं उठे सिविल सर्जनको रोकने।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'मैं आज ही कैण्टकी मैटीरिया मेडिकाका अध्याय पढ़कर आया हूँ।' मैंने संकेत किया और डा० शिर्के मेरी ओर झुके तो मैंने उनके कानमें फुसफुसाते हुए कहा—'सब लक्षण पूरे मिलते हैं। आप आज चमत्कार दिखा सकेंगे।'

डाक्टर शिर्के विश्वस्त नहीं हुए ; किंतु मैंने औषधका नाम बताया और आग्रह किया—'जब कोई चिकित्सक दवा नहीं दे रहा है, आप भी इन्हें निराश कर दें—यह क्या उचित होगा ?'

मेरा अनुरोध मान लिया गया। दवाकी एक बूँद जलमें डालकर पिला दी गयी और मैंने सदाकी भाँति आवश्यकतासे बहुत अधिक अपनेपर भरोसा करके रोगीके पितासे आग्रह किया—'आप किसी भी प्रकार सिविलसर्जनको एक बार और रोगीकी परीक्षाके लिए यहाँ ले आयें।'

सिविल सर्जनको ले आनेमें अधिक कठिनाई नहीं हुई। वे रुक गये थे और कहते ही रोगीके कक्षमें चले आये। किंतु उनके आनेतक दवाकी पहिली मात्रा दिये पाँच मिनट बीत चुके थे और जब वे कक्षमें आये, मैं दूसरी मात्रा दे रहा था। रोगीकी बेचैनीमें स्पष्ट अंतर इतनी ही देरमें देखा जा सकता था।

सिविल सर्जनने बेमनसे हृदय-परीक्षण प्रारंभ किया; किंतु क्षणभरमें ही वे गंभीर हो गये। उन्होंने बहुत एकाग्रतापूर्वक हृदय, फेफड़े आदिका परीक्षण किया और

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कई-कई बार किया। अंतमें वे उठे और डा० शिर्केकी ओर मुड़े—'धन्यवाद डाक्टर! आप निश्चय सफल हुए। रोगी तेजीसे खतरेके बाहर जा रहा है।' मुक्तकंठसे उन्होंने स्वीकार किया।

सिविल सर्जन साहबको अब रुकनेके लिए नहीं कहना पड़ा। उनके परीक्षणमें पाँच मिनट और लग चुके थे और औषधकी तीसरी मात्रा भी रोगीको दे दी गयी थी।

'अब आप कृपा करके एक बार वैद्यराजजीको भी बुला लें।' मैंने आग्रह किया। 'वे मेरे अनुरोधपर बाहर रुके हैं।'

रोगीको अब बेचैनी नहीं रही थी। अब मेरी बात बिना सोचे-समझे मान ली जाय, ऐसी परिस्थिति बन चुकी थी। वैद्यराजजी आये और उन्होंने नाड़ी देखी, उन्होंने भी स्वीकार किया—'आज मैं मानता हूँ, डा० शिर्के, कि आपने मृत्युको भी अँगूठा दिखानेमें सफलता पायी है।'

'मैंने कुछ नहीं किया है।' डा० शिर्केने मेरी ओर देखा। 'मैं भी आप सबके समान सर्वथा निराश हो चुका था और लौटनेवाला था; किंतु……।'

'रोगीका प्रारब्ध उसकी रक्षा करनेको उद्यत था।' बात गलत स्थानपर समाप्त होने जा रही थी, इसलिए मुझे बीचमें बोलना पड़ा। 'भगवानकी कृपा! वे

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परमप्रभु जिसे रखना चाहते हैं, उसे मार देनेकी शक्ति तो यमराजमें भी सम्भव नहीं है।'

× × ×

'तुम इतने निपुण चिकित्सक हो!' हम जब लौटे, तब मार्गमें मेरे पास बैठे वैद्यराजजीने मुझसे कहा। 'किंतु तुमने मुझे गंधतक नहीं लगने दी कि तुम चिकित्सा-शास्त्रसे भी परिचय रखते हो।'

डा० शिर्के मुझे और वैद्यराजजीको भी अपनी मोटरमें लिये जा रहे थे। मैंने कहा तो था कि ताँगा करके मैं चला जाता हूँ; किंतु उनका आग्रह था कि वे मुझे अपने यहाँ छोड़कर तब चिकित्सालय जायँगे।

'मैं अभी पन्द्रह दिनसे होम्योपैथी सीखने लगा हूँ।' मैंने कहा। 'यह तो संयोग था कि सुयश मुझे प्राप्त होना था। चिकित्साका अधिष्ठान रोगी अनुकूल स्थितिमें था, कर्ता चिकित्सककी सूझ-बूझ ठीक थी; औषधका चुनाव उचित हुआ और ठीक ढङ्गसे वह निर्मित थी, उसे देनेकी पद्धतिमें भी कोई भूल नहीं हुई और सबसे बड़ी बात कि रोगीका प्रारब्ध अनुकूल था। इनमें-से एक भी बात यदि ठीक न होती, चिकित्सक क्या कर लेता।'

'अच्छा, तो तुम अपनी दार्शनिकतापर आ गये हो।' वैद्यजी किंचित् मुसकराये।

'दार्शनिकताकी तो यहाँ कोई बात नहीं है।' मैं कह रहा था। 'सभी विषयोंमें सफलता इन सब संयोगोंपर ही

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निर्भर हुआ करती है। 'मैंने किया' यह अभिमान तो मनुष्यका व्यर्थ ही है।'

'कहते तुम ठीक हो !' वैद्यजीने अनुमोदन किया और स्वयं गीताके श्लोक उनके मुखसे निकलने लगे—

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक् चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्॥
शरीरवाङ्मनोभिर्यत् कर्म प्रारभते नरः।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः॥
तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः॥



Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सफलता

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ।।

'अस्वस्थ देह, अशान्त मानस, अहङ्कार-उन्मत्त मानव यदि सफल हैं, तो असफल कौन कहा जायगा ?' वह आज पूर्णतः उत्तेजित है । आत्मघात करनेको उद्यत होनेवालेकी उत्तेजना अपनी चरम सीमापर होती ही है । ऐसा क्षुब्ध व्यक्ति किसीका भी सङ्कोच नहीं करता । वह बलात् खींच लिया गया, जब गङ्गोत्तरीमें गङ्गाके प्रवाहमें अपना शरीर समर्पित करने जा रहा था । इस बातने उसे अधिक क्षुब्ध कर दिया है—'आप कहते हैं कि मेरे पास सम्पत्ति है, अधिकार है, सम्मान है । मैं इतना सफल जीवन प्राप्त करके यह अनर्थ क्यों कर रहा हूँ । यह बात आपके—एक साधुके मुखसे शोभा देती है ? मानव-जीवनके बहुमूल्य वर्षोंको विनष्ट करके, सतत श्रमसे स्वास्थ्यकी बलि देकर धातुकी चमकती राशि, कुछ रङ्गीन कागजके टुकड़ोंके पुलिन्दे अथवा मूल्यवान् कहे जानेवाले पत्थर पा लिये, मूर्खोंके समुदायने अपना अग्रणी मान लिया अथवा प्रशंसाके पुल बाँध दिये और इस

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रशंसा एवं अधिकारने अंतरकी शान्तिको अपहरण कर लिया। इसपर अब आपके यह महाव्यंग्य कि मैं अत्यन्त सफल व्यक्ति हूँ ?'

'किंतु अपघातका यह अनर्थ तुम्हें किस समस्याका समाधान देगा ?' साधुने शान्त स्वरमें कहा—'शेष प्रारब्धसे छुटकारा मिलना नहीं है। जीवनसे असमय भागनेका अपराध करके तुम अपनेको अधिकतम दण्डका ही भागी बनाओगे !'

'हे भगवान् !' वह दोनों हाथोंसे सिर पकड़कर बैठ गया और फूट-फूटकर रोने लगा।

'भगवान् करुणावरुणालय हैं। उनका असीम अनुग्रह है तुमपर।' साधुने स्वस्थ आश्वासन दिया—'अन्यथा सुयश, सम्पत्ति एवं शासनाधिकारके पीछे संसारके लोग पागल हैं। उन्हें पतातक नहीं चलता कि यह उन्माद उन्हें किस गर्तमें अवश ले जा रहा है। शासनाधिकारके साथ अशान्ति, सम्पत्तिके साथ चिन्ता एवं श्रम तथा अस्वास्थ्य, सुयशके साथ अहङ्कार, अयशका भय आदि अनेक दोष रहेंगे ही। मनुष्यकी सबसे बड़ी असफलता यही है कि वह इन्हें जीवनकी सफलता समझता है। जब यह बात सूझने लगे तो समझना चाहिए कि मायानाथने अपनी माया-यवनिका उठा लेनेका अनुग्रह किया है।'

'महाराज ! मैं अधिक आस्थावान् नहीं हूँ।' उसने सिर उठाया। 'तत्त्वज्ञान या आत्मसाक्षात्कार, भगवद्दर्शन,

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gya

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निर्विकल्प समाधि आदिमें मनुष्यकी सफलता है, मेरा ऐसा विश्वास नहीं है। जैसे सम्पत्ति, सुयश, शासनाधिकारकी महत्ता सुनते-सुनते सस्कार बन गया है कि इनकी प्राप्ति जीवनकी सफलता है, वैसे ही ग्रंथ पढ़कर अथवा आप लोगोंसे सुनकर समाधि आदिमें महत्त्वबुद्धि हो जाती है। एक संस्कार चित्तमें डालो कि अमुक अवस्था परम सफलता है और तब उस कल्पनाको साकार करनेमें जुटो।'

'मुझे बहुत प्रसन्नता है कि तुम सचमुच समझदार हो।' साधु उसे गङ्गातटसे अपने आश्रममें ले आये। अग्निके समीप बैठनेके पश्चात् बोले—'देखो, सुखकी निर्बाध उपलब्धि ही प्राणियोंका स्वाभाविक लक्ष्य है। सच्चा सुखी आप्तकाम पुरुष ही होता है और आत्माराम ही आप्तकाम होता है।'

'आप्तकाम हुए बिना अशान्ति तो मिटती नहीं।' उसने स्वीकार किया— 'कामनाके पीछे भागनेमें कितनी भी उसकी पूर्ति, प्राप्त होती रहे विश्राम कहीं नहीं है। भोग उलटे रोगका प्रसाद देता है।'

'अब विचार करके देखो !' साधु गम्भीर बन गये— 'मद और मत्सर पामर पुरुषोंमें होते हैं। पाप करना ही जिन्हें प्रिय है, उनकी चर्चा अनावश्यक है। वे पतनके पथपर लुढ़के जा रहे हैं। अब आप्तकाम होनेमें चित्तके चार विकार बाधक रह जाते हैं— मोह, लोभ, काम और क्रोध। मोह और लोभ विषयी पुरुषको अपनाते हैं। ये

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्थायी विकार हैं। प्रत्येक अवस्थामें, प्रत्येक आयुमें ये बने ही रहते हैं। ये मन्द गतिसे बहते हैं; किंतु बद्धमूल होते हैं। इनको निर्मूल किये बिना कोई साधक नहीं बनता। लोभ और मोहका उन्मूलन जहाँ हो जाता है, वहाँसे परमार्थका पथ प्रारंभ होता है। साधकमें वैराग्य न हो तो साधन कैसे चलेगा और वैराग्यका अर्थ ही है—'लोभ तथा मोहका सम्यक् त्याग।'

'भगवान्ने तुमपर अनुग्रह किया है। तुममें वैराग्य आया है। लोभ-मोहसे तुम ऊपर उठ सके हो।' कुछ क्षण रुककर साधु बोले—'अब काम और क्रोधके वेगको सहनेकी क्षमता उत्पन्न करो। जीवनकी सफलता यही है कि मनुष्य इनके वेगको सह लेनेमें सक्षम हो। विश्वास करो, जिस दिन तुम यह शक्ति प्राप्त कर लोगे आप्तकाम हो जाओगे!'

'काम और क्रोध तो निमित्तज हैं।' वह उस दिन साधुके समीपसे उठ आया और धर्मशालाके अपने कमरेमें आकर सोचने लगा—'कोई प्रलोभन सम्मुख आयेगा तो मनमें उसे प्राप्त करनेकी वासना उठेगी। कोई अपने अभीष्टमें व्याघात बनेगा तो उसपर क्रोध आयेगा। तब ऐसा क्यों नहीं किया जा सकता कि निमित्त प्राप्त ही नहीं हों।'

गङ्गोत्तरीसे वह लौटा; किंतु घर न आनेका तो निश्चय कर चुका था। तीर्थयात्रामें लगा रहा कुछ काल और यह यात्रा भी उसकी हिमालयके पर्वतीय तीर्थोंकी

naji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gya

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ही थी। अंतमें एक एकान्त निर्झरके किनारे एक गुफाको अपना आश्रय बनाकर जम गया। पासके पर्वतीय ग्रामके लोग जैसे ही पहिली बार दर्शन करने आये, उसने बता दिया कि केवल शामको दो घण्टे ही गुफासे निकलकर बाहर बैठेगा और कोई स्त्री अथवा कन्या उसकी गुफाके पास कभी आयी तो यहाँसे चला जायगा।

जप तथा गीता-भागवतका पाठ-स्वाध्याय। बड़ा शान्त तथा आनन्दमय जीवन उसे प्रतीत हुआ। अपने साथ थोड़ेसे वस्त्र, दो कम्बल, एक लोटा तथा गीता एवं भागवतकी पुस्तकें—इतनी ही सामग्री लाया था। ग्रामके लोग उसे आटा, आलू, नमक तथा दूध दे देते थे। शरीर-निर्वाहके लिए इतना सब पर्याप्त था।

'कहो नारायण ! प्रसन्न हो ?' अचानक एक दिन उसकी गुफापर वे गङ्गोत्तरीवाले साधु आ धमके। ये बाबाजी लोग विचित्र होते हैं। हाथ जोड़ो प्रार्थना करो, धरनातक दे डालो किंतु ध्यान नहीं देंगे तो नहीं ही देंगे। किंतु यदि किसीकी ओर ढल पड़े; फिर उसका पिण्ड भी नहीं छोड़ेंगे। अब पता नहीं कैसे उसका पता लगाकर ढूँढ़ते हुए आये हैं। आये और सीधे गुफामें उसके आसनपर जाकर विराजमान हो गये।

'मेरा सौभाग्य !' वह हर्षविह्वल हो उठा। चरणोंपर मस्तक रखकर प्रणाम किया उसने।

'सौभाग्य अथवा दुर्भाग्यकी बात पीछे देखी जायगी। इस समय तो मैं तुम्हें यहाँसे निर्वासित करने आया हूँ।

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बैठो और स्थिर होकर सुनो !' साधुने उसके बैठ जानेपर कहा—'तुमने अपनेको भ्रममें डाल रक्खा है। कोई प्रलोभन सम्मुख न हो या स्वयंमें शक्ति न हो, यह अकामता अथवा काम-विजय नहीं है। सब लोग सम्मान करें, सब अनुकूल आचरण करें तो क्रोध किसीको क्यों आयेगा ? साधकके लिए एकान्त आवश्यक है ; किंतु इससे अपनेमें आप्तकाम होनेका भ्रम होता है। अवस्था आ गयी है कि तुम अब जन-सम्पर्कमें आकर आत्मपरीक्षण करो !'

उसके अत्यन्त आग्रह करनेपर भी बाबाजी रुके नहीं। वे उसी समय चले गये। कठिनाईसे उन्होंने थोड़ा दूध स्वीकार किया था। उनके चले जानेके पश्चात् उसने भी गुफा छोड़ दी।

वह हिमालयकी तपोभूमिसे मैदानके कोलाहलपूर्ण क्षेत्रमें आ गया ; किंतु यह अवतरण केवल शारीरिक नहीं रहा। उसे लगा कि वह मानसिक दृष्टिसे भी हिमालयसे नीचे गिर गया है। यह समाज, यह अशान्त वातावरण— उसे लगता है कि साधारण व्यक्ति भी उसकी अपेक्षा मानसिक दृष्टिसे अधिक सशक्त हैं।

अब उसे कौन बतावे कि जैसे चमड़ेके कारखानेका कर्मचारी चमड़ेकी गन्धके प्रति सहिष्णु हो जाता है, वैसे ही उत्तेजक वातावरणमें रहनेवाले व्यक्तिका चित्त भी क्रमश: क्षीणसत्त्व हो जाता है। उसे उत्तेजना-प्राप्तिके लिए अधिक उपकरण अपेक्षित होते हैं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह बात भी वह कहाँ समझता है कि चित्त में एक साथ अनेक आवेग नहीं रह सकते। जिनके चित्तमें मोह या लोभ जितने प्रबल हैं, उन्हें काम या क्रोध उतने कम अभिभूत कर पाते हैं। लोभी व्यापारी हँसकर अपमान सह लेनेमें चतुर होता है। किंतु शुद्ध जलके सरोवरमें सामान्य वायु भी लहरें उठाया करती हैं।

समाजमें नारीने अपनेको अर्धनग्न रखना सभ्यता मान लिया है। अब कोई कहाँतक नेत्र बन्द किये चल सकता है। लोग सादे सामान्य वेशका ही उपहास करते हैं। तनिक वेशसे धार्मिकता व्यञ्जित हो तो उसपर व्यङ्ग कसना आजके युवकोंको अपना गौरव जान पड़ता है।

बड़ी व्यथा, बड़ी अशान्ति मिली है उसे इस वातावरणमें आकर। वह तो उन्मत्त ही हो जाता यदि उसे अचानक वे साधु न मिल जाते। वृन्दावन वह आया तो भी उसे शान्ति नहीं मिली थी। बार-बार चित्तमें विकृति आती है। बार-बार रोष आता है। कितना भ्रममें था वह अपने सम्बन्धमें।

'बच्चे!' साधुने बहुत स्नेहपूर्वक उसके मस्तकपर हाथ रक्खा—'व्याकुल मत बन। ऐसा भवन नहीं बनेगा, जो जीर्ण न हो, मैला न हो। ऐसा शरीर नहीं होगा, जो रोगी न हो। यदि हो भी जाय, जैसा कि कुछ दिव्य देह अमर पुरुषोंका है तो कोई महत्ता उसकी नहीं है।'

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'शरीर स्वस्थ रहे या रोगी, मैं चिन्ता नहीं करता।' उसने अश्रुभरे नेत्र उठाये।

'मैं यही कह रहा हूँ कि शरीरकी चिन्तासे पागल मत रहा कर!' साधुने स्नेहपूर्वक कहा—'सूक्ष्मशरीर भी शरीर ही है बच्चे!'

'भगवन्!' यह ऐसे चौंका, जैसे पैरोंके नीचे सर्प आ गया हो। भला इस बातसे क्या तात्पर्य हो सकता है इन साधुका?

'काम और क्रोध स्थायी वृत्तियाँ नहीं हैं।' साधु समझाने लगे—'ये आवेग हैं, आँधीकी भाँति निमित्तके संयोगसे आते हैं। आनेसे पूर्व जिनका पता ही नहीं होता, उन्हें आनेसे ही तू कैसे रोकेगा? समष्टिमें निमित्त आवें ही नहीं, किसीके वशकी बात है?'

'तब?' केवल नेत्रोंके भाव उसके पूछ रहे थे। शब्द वह चाहता भी तो कण्ठसे नहीं निकलते।

'आँधी तो आयेगी। आनेका पता लगे तो भवनके द्वार बन्द कर ले।' साधुने अपनी बातकी व्याख्या कर दी—'काम तथा क्रोधके वेग तो आयेंगे। आनेपर सावधान होकर इन्द्रियोंके द्वार बंद कर। इनका वेग क्रियासे, शब्दसे, शरीरकी भावभङ्गिमासे बाहर निकले—शरीर छोड़कर ये बाहर जायँ, इससे पहिले ही इन्हें चित्तमें दबा दे। इनका वेग भीतर ही सहन कर लेनेकी क्षमता हो जाय तो तू आप्तकाम हो गया। सुखी हो गया। सफल हो गया।'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीबाँकेविहारीजीके मंदिरमें एक कोनेपर दीवालसे टिके वे दोनों आधे खड़े प्राय थे । मंदिरके पट खुल गये । गोस्वामीने चिक उठाना प्रारंभ कर दिया है । दोनों शीघ्रतासे सम्मुख आ गये । साधुने वार्ताका उपसंहार किया थोड़े शब्दोंमें—'अपने प्रयत्नसे कोई कदाचित् ही सफल होता है । सफलता इनके श्रीचरणोंमें रहती है । इतना स्मरण रख तो तुझे अशान्ति स्पर्श नहीं करेगी ।'

× × ×

'सफलता श्रीकृष्णके चरणोंमें रहती है ।' उसके मस्तिष्कमें गूँजते रहते हैं ये शब्द । उस दिन आरतीके पश्चात् निकला तो वे साधु उसे मिले नहीं । दर्शन करनेमें लगनेपर पता नहीं चला कि वे कब बाहर चले गये ; किंतु इनके शब्द उसे भूले नहीं हैं । 'सफलता साधनके परिपाकमें नहीं है । वह किसी क्रियामें, पदार्थमें अथवा चित्तके अवस्थाविशेषमें भी नहीं रहती । वह तो श्यामके श्रीचरणोंमें रहती है ।'

'कन्हाई ! यह क्या ऊधम है ?' अब भी उसके चित्तमें विकार तो आता है । किंतु अब विकारका वेग उठते ही एक बात और आती है । वह अपने भीतर ही अपने अंतर्यामी इस गोपकुमारपर बिगड़ता है । एक झिड़की और सब जैसे शान्त हो गया । अब बाह्य दृश्य अपना सिर धुनें । आँधियोंके उद्दाम वेगके प्रवेशके लिए जैसे वहाँ क्षुद्र छिद्र भी नहीं रह गया । बात बहुत सीधी है । मन्मथ भुवनविजयी भले हो ; किंतु जहाँ उसकी

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आहटपर उसका बाप ही डाँट खा जाय, बेचारा बेटा वहाँ आनेका साहस करे भी तो कैसे।

'कृष्ण! अब तू मुझे भी चिढ़ानेका साहस करता है?' क्रोध अधिक धृष्ट है पुष्पधन्वाकी अपेक्षा; किंतु उसके पद भी पलायन करते दीखते हैं जब प्रलयङ्करके भी परमाराध्यपर कोई कड़ी आँखें उठाता है। वह तो तबतक टिका रहता है, जबतक कि उसे यह स्मरण न आवे कि यह बाह्य निमित्त उसका वह चिर चञ्चल ही उपस्थित करता है।

किंतु वह अब भो दुखी रहता है—'मैं इस सुकुमारको क्यों बार-बार डाँट देता हूँ। कितना सङ्कोची है, यह कभी तनिक विनोद कर ही लेता तो बिगड़ता क्या है।'

'क्यों रे, तू इसे भी दुःख कहता है?' सदाकी भाँति वे साधु इस बार भी उसे अकस्मात् ही मिले थे। उन्होंने हँसते हुए कहा—'श्रीव्रजराजकुमारसे चाहे कामका सम्बन्ध हो या क्रोधका, वह तो विकार है ही नहीं। उससे तो घृणा करके भी मानव-असुर मुक्त हुए हैं। जहाँ क्षोभमें भी सुखस्वरूपकी स्मृति है, वहाँ दुःख कहाँ रहता है। श्रीकृष्णकी स्मृति—ठीक तब, जब विस्मृतिकी संभावना ही सबसे अधिक है। तो वेग-सहिष्णुताका यह आधार पाकर ही तो सम्पूर्ण रूपसे सफल है।'

———

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कानपुर

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

श्रीसुदर्शन सिंहजी 'चक्र' की अन्य पुस्तकें

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भगवान वासुदेव—(श्रीकृष्णका मथुरा चरित)—
डिमाई आकार, पृष्ठ ४०२, सजिल्द, मूल्य १०)५०

श्रीद्वारिकाधीश— (श्रीकृष्णका द्वारिका-चरित)—
डिमाई आकार, पृष्ठ ४००, सजिल्द, मूल्य १०)५०

शिव-चरित—डिमाई आ०, पृष्ठ ४२८, सजिल्द, मूल्य ११)२५

शत्रुघ्नकुमारकी आत्मकथा—
डिमाई आकार, पृष्ठ २१२, सजिल्द, मूल्य ७)५०

हमारी संस्कृति–डिमाई आ०, पृ० २६०, सजिल्द, मूल्य ७)२५

कर्म-रहस्य— डिमाई आकार, पृष्ठ १८४, मूल्य [illegible])००

आञ्जनेयकी आत्मकथा—(श्रीहनुमान-चरित)—
डिमाई आकार, पृष्ठ ३१२, सजिल्द, मूल्य [illegible])००

राम-श्यामकी झाँकी—पाकेट आकार, पृष्ठ १९२, मूल्य [illegible]

सखाओंका कन्हैया—पाकेट आकार, पृष्ठ १६०, मूल्य [illegible]

श्यामका स्वभाव— पाकेट आकार, पृष्ठ ९६, मूल्य [illegible]२५

हमारे धर्मग्रन्थ— पाकेट आकार, पृष्ठ ६७, मूल्य [illegible])००

हिन्दुओंके तीर्थ-स्थान— पाकेट आ०, पृष्ठ २७४, मूल्य ३)५०

शिव-स्मरण— पाकेट आकार, पृष्ठ ८५, मूल्य १)२५

दो आध्यात्मिक महाविभूतियोंके प्रेरक प्रसंग—
पाकेट आकार, पृष्ठ १८८, मूल्य २)५०

हमारे अवतार एवं देवी-देवता—
पाकेट आकार, पृष्ठ १०८, मूल्य १)५०

[illegible]स्कृतिक कहानियाँ प्रत्येक भाग—
पाकेट आकार, पृष्ठ १६०, मूल्य २)००

पा[illegible]—

[illegible]श्रीराम-चरित २. सांस्कृतिक कहानियाँ—भाग ४

प्राप्ति-स्थान—

[illegible]शन विभाग, श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवासंघ,

मथुरा-२८१००१ (उ० प्र०)

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan